अंतस

आर्धवार्षिक पत्रिका, अंक-25, 26 जनवरी 2024

ख़्वाहिश... चाँद की

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर

नियम-निर्देश

- अंतस के आगामी अंक के प्रकाशन हेतु अपनी मौलिक एवं यथासंभव अप्रकाशित रचनाएँ भेजने का कष्ट करें।
- रचनाएं यथासंभव टाइप की हुई हों, रचनाकार का पूरा नाम, पद एवं संपर्क विवरण का उल्लेख अपेक्षित है।
- लेखों में शामिल छाया-चित्र तथा आंकड़ों से संबंधित आरेख स्पष्ट होना चाहिए।
- अनूदित लेखों की प्रामाणिकता अवश्य सुनिश्चित करें। अनुवाद में सहायता हेतु संस्थान राजभाषा प्रकोष्ठ से संपर्क कर सकते है।
- प्रकाशन के लिए किसी भी लेखक को किसी प्रकार का मानदेय नहीं दिया जाएगा।
- अंतस में उन सभी प्रकार के विचारों का स्वागत होगा जो संस्थान परिसर में रहने वाले अथवा काम करने वाले लोगों का प्रतिनिधित्व करते है किन्तु किसी प्रकार के राजनीतिक विचारों को प्रोत्साहित नहीं किया जाएगा।
- अंतस में प्रकाशित रचनाओं में निहित विचारों के लिए संपादक मंडल अथवा राजभाषा प्रकोष्ठ उत्तरदायी नहीं होगा और इसके लिए पूरी की पूरी जिम्मेदारी स्वयं लेखक की होगी।
- रचनाएं अंतस के अनवरत दो अंकों में प्रकाशित न होने की स्थिति में संबंधित रचनाकार राजभाषा प्रकोष्ठ से जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।
- प्रयुक्त भाषा सरल, स्पष्ट एवं सुवाच्य हिंदी भाषा हो।

स-आभार
संपादक मंडल

अंतस परिवार

संरक्षक एवं निर्देशन
प्रोफेसर एस गणेश

कुलसचिव (स्थानापन्न)
प्रोफेसर ब्रज भूषण

मुख्य संपादक
डॉ. अर्क वर्मा

संपादक
श्री विजय कुमार पाण्डेय

संपादन सहयोग
प्रोफेसर शिखा दीक्षित
प्रोफेसर कांतेश बालानी
प्रोफेसर सन्तोष कुमार मिश्र
प्रोफेसर ललित सारस्वत

अभिकल्प
अल्पना दीक्षित

अनुवाद
श्री जगदीश प्रसाद

छाया चित्र
श्री गिरीश पंत

विशेष सहयोग:– प्रस्तुत अंक के सभी रचनाकार, समस्त संस्थान कर्मी एवं विद्यार्थी साहित्य सभा।

संकेतक

शुभेच्छा

निदेशक 05

कुलसचिव (स्थानापन्न) 06

संपादकीय

मुख्य संपादक 07

रिपोर्ट

हिंदी दिवस–2023 08

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति 10

हिंदी कार्यशाला 11

विश्व हिंदी दिवस-2024 12

बानगी-एक परिचर्चा 12

अक्षर-आईआईटी कानपुर साहित्यिक महोत्सव–2023 13

साक्षात्कार

श्री राकेश शर्मा 15

गुरुदक्षिणा

श्री जीत बिंद्रा 18

साहित्य-यात्रा

अध्यापन के नये आयाम-नाटक कोपेनहागेन का मंचन 20

चाँद की ख्वाहिश 23

उठ मुसाफिर 23

चाँद को पाने की ख्वाहिश बदस्तूर जहन में होती है 24

चाँद की ख्वाहिश 25

बड़े पिताजी 26

इंटरनेट में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के प्रमुख कदम 28

चाँद की ख्वाहिश 29

ओ चाँद 30

मै हूँ कविता संगीत नहीं 30

प्रयत्न 31

गलत चाँद की यात्रा 31

मधुकर मेरे उपवन के 32

समय 32

उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है 33

धैर्य 33

जलता जंगल 34

अपॉर्चुनिटी स्कूल आई.आई.टी. कानपुर.. एक स्कूल ऐसा भी 34

रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र : ग्रामीण विकास की एक नई पहल 36

संगीत-रसोत्पत्ति का एक सशक्त माध्यम 38

भाषा–विमर्श

यात्रा-वृतांत 40

तकनीकी लेख

सामाजिक सरोकार 42

चाँद पर भारत 43

विरासत

नीलकंठ : मोर 44

अतिथि रचनाकार

भारतीय खाद्य निगम-"देश का खाद्य कवच" 48

बाल बत्तीसी

सूरज नाराज है 52

शुभेच्छा

निदेशक की कलम से...

प्रिय पाठक,

गणतंत्र दिवस के इस अवसर पर संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' को आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है। चाँद पर समर्पित यह अंक 'ख्वाहिश... चाँद की' शीर्षक पर प्रकाशित किया गया है।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने विगत कुछ वर्षों में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवाया है। इसरो के वैज्ञानिकों ने अभी हाल ही में चंद्रयान-3 की चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सफलतापूर्वक लैंडिंग कराकर पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन कर दिया। इसरो के आगामी कार्यक्रमों को देखते हुए, उम्मीद है कि आगे भी इसरो के वैज्ञानिक अंतरिक्ष के क्षेत्र में इसी प्रकार देश का नाम रोशन करते रहेंगे। अंतरिक्ष के क्षेत्र में शोध-कार्य करने के लिए अभी हाल ही में संस्थान में भी अंतरिक्ष, ग्रहीय एवं खगोलीय विज्ञान तथा अभियांत्रिकी विभाग की स्थापना की गई है जो आने वाले वर्षों में इसरो तथा अन्य संबंधित संस्थाओं के साथ मिलकर अंतरिक्ष के क्षेत्र में शोध कार्यों को बढ़ावा देगा।

इसके अतिरिक्त, चिकित्सा क्षेत्र में भी अनुसंधान कार्यों को बढ़ावा देने के लिए संस्थान में 'मेहता फैमिली सेंटर फॉर इंजीनियरिंग इन मेडिसिन' की स्थापना की गई है जो एक अंतःविषयक केंद्र है जिसका उद्देश्य गंभीर चिकित्सा संबंधी समस्याओं के लिए अभियांत्रिकी समाधान की सुविधा प्रदान करना है। साथ ही साथ संस्थान में 'गंगवाल स्कूल ऑफ मेडिकल साइंसेज एंड टेक्नोलॉजी' की स्थापना की जा रही है। निश्चित रूप से इस स्कूल की स्थापना से चिकित्सा अनुसंधान और तकनीकी नवाचारों को मिलाकर एक आदर्श बदलाव लाने का प्रयास किया जाएगा। इससे नैदानिक अनुसंधान और मेडटेक डोमेन में अकादमिक और अनुसंधान नेतृत्व का निर्माण होने की उम्मीद है। इस पहल के अंतर्गत आई आई टी कानपुर, संस्थान को वैश्विक संस्थानों की श्रेणी में लाने के लिए अपनी प्रौद्योगिकी और नवाचार दक्षताओं को चिकित्सा विज्ञान के साथ जोड़ने का कार्य करेगा।

देश एवं समाज की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए विगत वर्षों के दौरान संस्थान में नये-नये विभागों तथा केन्द्रों का गठन किया गया है, जिनमें सतत् ऊर्जा अभियांत्रिकी विभाग, संज्ञानात्मक विज्ञान विभाग एवं सी3आई, साइबर सिक्योरिटी सेंटर आदि प्रमुख हैं। इन सभी केन्द्रों का उद्देश्य देश एवं समाज की मांग एवं आवश्यकताओं के अनुरूप शोध कार्य निष्पादित करने तथा उनसे देश एवं समाज को लाभान्वित करना है।

साथ ही साथ यहाँ पर इस बात का उल्लेख किया जाना भी प्रासंगिक है कि संस्थान में विगत वर्षों के दौरान साहित्यिक गतिविधियों में भी काफी वृद्धि हुई है। संस्थान का राजभाषा प्रकोष्ठ एवं शिवानी केन्द्र वर्ष-पर्यंत राजभाषा हिंदी संबंधी अनेक कार्यक्रमों एवं गतिविधियों का आयोजन करते रहते हैं। पिछले कुछ माह के दौरान तीन दिवसीय साहित्यिक महोत्सव 'अक्षर', बानगी-एक परिचर्चा, अनुवाद प्रणाली 'कंठस्थ-2.0' पर कार्यशाला, हिंदी दिवस, विश्व हिदी दिवस आदि का आयोजन किया गया है। निश्चित रूप से इन सब कार्यक्रमों के माध्यम से संस्थान में अनुसंधान के साथ-साथ साहित्यिक गतिविधियों का बेहतर समागम देखने को मिला है।

मैं अंतस के 25वें अंक के सफल एवं समयबद्ध प्रकाशन हेतु समस्त रचनाकारों एवं प्रकाशन से जुड़े सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएं प्रेषित करता हूँ तथा आशा करता हूँ कि सभी परिसरवासी अपनी मौलिक रचनाओं से इस पत्रिका को अभिसिंचित करते रहेंगे।

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ!

एस गणेश
निदेशक

शुभेच्छा
कुलसचिव की कलम से...

प्रिय पाठकों,

हम बचपन से ही चंदा मामा अर्थात चंद्रमा की विभिन्न ख्वाहिशों के बारे में सुनते आए हैं। ये बात अलग है कि जैसे-जैसे हम बड़े होते गए, हमारे लिए चंद्रमा की ख्वाहिश बदलती रही। जब हम ऋग्वेद, यजुर्वेद, मत्स्य पुराण एवं पद्म पुराण पर नजर डालते हैं तो हमें चंद्रमा की अलग ख्वाहिश दिखाई देती है। वेदों में अनेकों बार प्राकृतिक दिव्य शक्तियों का उद्भव परमात्मा के शरीर के विभिन्न अंगों से बताया गया है।

चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत ।
श्रोत्राद्वायुश्च प्राणश्च मुखादग्निरजायत।। यजुर्वेद ३१।१२।।

अर्थात् परमात्मा-रूपी विराट पुरुष के मन से चन्द्रमा, नेत्रों से सूर्य, कान से वायु एवं प्राण तथा मुख से अग्नि का प्राकट्य हुआ । इसी प्रकार अनेक वेद-पुराणों में चंद्रमा के विभिन्न रुपों का वर्णन मिलता है। साहित्यिक परिप्रेक्ष्य से देखने पर हिंदी साहित्यकारों ने भी अपनी कविताओं, कहानियों, उपन्यासों आदि में चंद्रमा की विभिन्न ख्वाहिशों का वर्णन किया है । इसमें चाँद की ख्वाहिश को प्रेम की अद्वितीयता, चाँद से संबंधित विभिन्न रहस्य, अनजाने सपनों का संकेत एवं आत्म सम्मोहन के साथ जोड़ा गया है। कवियों ने चांदनी रात एवं चाँद की चमक से अपनी रचनाओं को सजाया है।

आज के विज्ञान को चाँद की एक अलग ही ख्वाहिश नजर आती है। चाँद पर तिरंगा फहराने की ख्वाहिश! चाँद को फतह करने का जज्बा! चांद पर जीवन की तलाश! और मिशन चंद्रयान ने इसकी पृष्टिभूमि तैयार कर दी है। 22 अक्टूबर 2008 को सफलतापूर्वक प्रक्षेपित मिशन चंद्रयान-I एवं 22 जुलाई 2019 को प्रक्षेपित मिशन चन्द्रयान-II के बाद जब 23 अगस्त 2023 को चंद्रयान-3 ने चंद्रमा की सतह से यह संदेश भेजा कि 'मैं अपनी मंजिल तक पहुंच गया और आप भी!' तथा 24 अगस्त 2023 को जब सीएच-3 रोवर लैंडर से नीचे उतरा और भारत ने चंद्रमा पर सैर की! तो यह गौरवान्वित करने वाला ऐतिहासिक पल था।

चाँद की इन्हीं विभिन्न ख्वाहिशों पर आधारित, संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अंतस' का 25वां अंक 'ख्वाहिश... चाँद की' को गणतंत्र दिवस के इस पावन पर्व पर आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रही है।

आप सभी से अनुरोध है कि आप अपने लेखों, कहानियों एवं कविताओं के माध्यम से, 'अंतस' से जुड़ें तथा अपनी रचनाओं से पत्रिका की उत्तरोत्तर समृद्धि में सहभागी बनें। सभी रचनाकारों एवं संपादन मंडल के सभी सदस्यों को मेरी तरफ से हार्दिक बधाई एवं अनंत शुभकामनाएं ।

गणतंत्र दिवस की शुभकामनाओं के साथ!

ब्रज भूषण
कुलसचिव (स्थानापन्न)

संपादकीय

संपादक की कलम से...

अंतस के सभी पाठकगण एवं सभी परिसरवासियों को मेरा सादर नमस्कार! आप सभी को नव वर्ष 2024 की हार्दिक शुभकामनाएं।

गणतंत्र दिवस के इस पावन अवसर पर, मुझे आप लोगों के साथ यह साझा करते हुए अत्यंत हर्ष की अनुभूति हो रही है कि आपकी 'अंतस' अपनी रजत जयंती मना रही है। जी हां! 'अंतस' का 25वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत है। इस अवसर पर मैं अंतस परिवार के सभी पूर्व तथा वर्तमान सदस्यों एवं विशेषकर सभी लेखकों और पाठकों को हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करता हूं, जिनके निरंतर सहयोग, स्नेह एवं प्रयास से ही आज 'अंतस' इस पड़ाव पर पहुंची है तथा निरंतर और समृद्ध होती जा रही है। जैसे-जैसे मानव निरंतर विकास करता जा रहा है, वैसे-वैसे ही वो चंद्रमा की नई-नई ख्वाहिशों से अवगत होता जा रहा है। चंद्रमा से संबंधित नित-निरंतर नए-नए कीर्तिमान स्थापित होते जा रहे है। इसके साथ ही साथ विभिन्न क्षेत्रों के लोगों के दृष्टिकोण से भी चाँद की अलग-अलग ख्वाहिश प्रतीत होती है। एक लेखक, खगोलशास्त्री, प्रेमी-युगल, विज्ञान आदि सभी को चंद्रमा की अलग-अलग ख्वाहिश दिखती है। 'अंतस' के इस रजत जयंती अंक में हमने भी यही जानने का प्रयास किया है कि आखिर क्या है? 'ख्वाहिश... चाँद की'

प्रस्तुत अंक की शुरुआत हिंदी दिवस के अवसर पर आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं से है जिन्होंने इन प्रतियोगिताओं में बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। तत्पश्चात 15 से 17 अक्टूबर तक आयोजित 'अक्षर' साहित्यिक महोत्सव के दौरान विभिन्न आयोजनों से संबंधित विवरण है। 'साक्षात्कार' में इस बार आपकी मुलाकात होगी श्री राकेश शर्मा से, जिन्होंने सन् 1975 से 1980 के दौरान इस संस्थान से एम.टेक. और सीनियर रिसर्च फेलोशिप किया था तथा वर्तमान में अमेरिका में फाइनेंस कंसल्टेंट हैं एवं इस संस्थान के पूर्व छात्र एसोसिएशन के वर्तमान प्रेसिडेंट भी हैं। 'गुरुदक्षिणा' में हम विस्तार से जानेंगे श्री जीत बिंद्रा के बारे में, जो कि एक मध्यम वर्गीय परिवार से अपने सफर की शुरुआत करके कॉर्पोरेट जगत की सीढ़ियां चढ़ते चले गए।

इस बार की साहित्य यात्रा की शुरुआत होती है, प्रोफेसर मनोज कुमार हरबोला के **अध्यापन के नये आयाम-नाटक कोपेनहागेन का मंचन** से, जिसकी इस संस्थान में प्रस्तुति, इस नाटक का हिंदी में पहला मंचन है। प्रोफेसर सन्तोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु' की **उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है**, अवनीश सिंह की **चाँद की ख्वाहिश**, रत्ना पाल की **चाँद को पाने की ख्वाहिश बदस्तूर जहन में होती है**... दिव्या त्रिपाठी की **ख्वाहिश...चाँद की**, छवि श्रीवास्तव की **चाँद की ख्वाहिश**, श्रीमती चंद्रेश गुप्ता की **ओ चाँद**, विनय बलवान की **गलत चाँद की यात्रा** आदि उत्कृष्ट रचनाएं इस अंक के शीर्षक को चरितार्थ करती हैं। ज्योति मिश्रा की **बड़े पिताजी** कहानी समाज की सच्चाई बयां करती है। तत्पश्चात इस संस्थान में स्थित **अपॉर्चुनिटी स्कूल-एक स्कूल ऐसा भी** एवं **रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केन्द्र : ग्रामीण विकास की एक नई पहल** से संबंधित महत्वपूर्ण लेख हैं। इस केंद्र द्वारा पिछले दो वर्षों से बच्चों की शिक्षा, युवाओं के रोजगार और किसानों के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं।

रस का हमारे जीवन में एक विशेष स्थान है। मनुष्य की प्रवृत्ति होती है कि वह उस कार्य में अधिक दिलचस्पी लेता है जिसमें उसे रस मिलता है। डॉ0 देवानंद पाठक का **संगीत-रसोत्पत्ति का एक सशक्त माध्यम** हमें अवगत कराता है कि कैसे संगीत हमें विभिन्न भावों की अनुभूति कराता है और हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है। इस बार के तकनीकी लेख में डॉ0 जे. रामकुमार का **सामाजिक सरोकार** एवं आशीष शर्मा की **चाँद पर भारत** ज्ञानप्रद लेख हैं और अतिथि रचनाकार में हम नितिन वर्मा द्वारा **भारतीय खाद्य निगम** के बारे में विस्तृत जानकारी हासिल करेंगे।

अंत में मैं सभी पाठकों एवं रचनाकारों को सादर धन्यवाद ज्ञापित करता हूं, आपके निरंतर सहयोग से ही यह पत्रिका प्रफुल्लित हो रही है। इसके समयबद्ध प्रकाशन हेतु अंतस परिवार के सभी सदस्यों को भी धन्यवाद!

आप सभी को गणतंत्र दिवस की ढेरों शुभकामनाएं।

अर्क वर्मा

अर्क वर्मा
मुख्य संपादक

रिपोर्ट
हिंदी दिवस-2023

संविधान सभा ने दिनांक 14 सितम्बर 1949 को हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया और तब से ही इस दिवस की स्मृति में, प्रतिवर्ष 14 सितम्बर 'हिंदी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। संविधान सभा द्वारा सौंपे गए संवैधानिक और प्रशासनिक उत्तरदायित्वों एवं संविधान की भावना के अनुरूप तथा प्रेरणा, प्रोत्साहन और सद्भावना की नीति के साथ, राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार करने तथा इसके प्रयोग को बढ़ाने के निरंतर प्रयास किये जाते हैं।

इसी क्रम में, संस्थान में दिनांक 14 से 29 सितम्बर 2023 के बीच हिंदी दिवस एवं हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया जिसके अंतर्गत संस्थान के संकाय सदस्यों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों तथा विद्यालय स्तर पर विद्यालय के छात्र/छात्राओं के लिए तीन वर्गों में हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन सभी प्रतियोगिताओं में लगभग 450 विद्यार्थियों, कर्मचारियों एवं स्कूली छात्रों ने भाग लिया। इन प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार से है।

श्रुतलेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1.	श्रीमती सिन्धुश्री एस. के	कनिष्ठ सहायक	अंकेक्षण अनुभाग	प्रथम
2.	डॉ अमर कुमार बेहरा	प्रोफेसर	डिजाइन	द्वितीय
3.	श्री प्रदीप कुमार मोन्हती	कनिष्ठ अधीक्षक	कार्यालय, संयुक्त प्रवेश परीक्षा	तृतीय
4.	सुश्री नीरजा काटकर	वरि. परियोजना एसोसिएट	संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी	सांत्वना

कहानी लेखन (चित्र देखकर) प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1.	श्री विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	कार्यालय, अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य	प्रथम
2.	श्री विकास कुमार	कनिष्ठ सहायक	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	द्वितीय
3.	श्रीमती श्रद्धा सिंह	कनिष्ठ अधीक्षक	जैव विज्ञान एवं जैविक अभियांत्रिकी	तृतीय
4.	श्री मनोज कुमार वर्मा	कनिष्ठ अधीक्षक	आंतरिक अंकेक्षण अनुभाग	सांत्वना

हिंदी पत्र लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग/अनुभाग	स्थान
1.	श्री अनुज कुमार सोनी	कनि. अधीक्षक	आंतरिक अंकेक्षण	प्रथम
2.	श्री अनुभव कुमार आर्य	कनि. सहायक	कार्यालय, अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य	द्वितीय
3.	श्री कीर्ति राज	सहायक कुलसचिव	वित्त एवं लेखा अनुभाग	तृतीय
4.	श्री विकास यादव	कनिष्ठ सहायक	कार्यालय, अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य	सांत्वना
5.	श्री श्रीराम गुप्ता	वरिष्ठ सहायक	विधि प्रकोष्ठ	सांत्वना

जीवन के अविस्मरणीय पल प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री सोमनाथ डनायक	तकनीकी अधीक्षक	पदार्थ विज्ञान पाठ्यक्रम	प्रथम
2.	श्री आशीष शर्मा	कनिष्ठ तकनीशियन	पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम	द्वितीय
3.	श्री संजीव कुमार	तकनीकी अधीक्षक	पृथ्वी विज्ञान	तृतीय
4.	श्री बृजेश मिश्रा	कनिष्ठ तकनीशियन	जैव विज्ञान एवं जैविक अभियांत्रिकी	सांत्वना
5.	श्री भरत सोमैया	वरिष्ठ तकनीशियन	संगणक केन्द्र	सांत्वना

आशुभाषण प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री पंकज पाण्डेय	शारीरिक प्रशिक्षण अनुदेशक	शारीरिक शिक्षा अनुभाग	प्रथम
2.	डॉ. अमर कुमार बेहरा	प्रोफेसर	डिजाइन विभाग	द्वितीय
3.	श्री अवध शॉ	कनिष्ठ तकनीशियन	अंतरिक्ष, गृहीय एव खगोलीय विज्ञान तथाअभियांत्रिकी विभाग	द्वितीय
4.	श्री रणधीर कुमार सिंह	उप परियोजन प्रबंधक	अनुसंधान एवं विकास कार्यालय	तृतीय
5.	श्री आशीष शर्मा	कनिष्ठ तकनीशियन	पदार्थ विज्ञान पाठ्यक्रम	सांत्वना

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पदनाम	विभाग	स्थान
1.	श्री मनोहर अराँव	तकनीकी अधीक्षक	पदार्थ विज्ञान एवं अभियांत्रिकी विभाग	प्रथम
2.	श्री अवधेश कुमार यादव	वरिष्ठ तकनीशियन	मानविकी एवं सामाजिक विज्ञान विभाग	द्वितीय
3.	श्री अमित शुक्ला	कनिष्ठ सहायक	कार्यालय, अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य	तृतीय
4.	श्री मनोज कुमार वर्मा	कनिष्ठ अधीक्षक	आंतरिक अकेक्षण अनुभाग	सांत्वना
5.	सुश्री क्षमा जायसवाल	अधीक्षक	कार्यालय, अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य	सांत्वना
6.	श्री आशीष शर्मा	कनिष्ठ तकनीशियन	पदार्थ विज्ञान पाठ्यक्रम	सांत्वना

विद्यालीय प्रतियोगिताएं
रंजन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1.	शुभांशी यादव	श्री पवन कुमार यादव	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	3	प्रथम
2.	प्रांशी	श्री मनोज कुमार	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	2	द्वितीय
3.	तेजस थापा	श्री अमर सिंह थापा	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	3	तृतीय
4.	सैय्यद कुलसुम रिजवी	श्री सैय्यद जहीर अब्बास रिजवी	कैंपस स्कूल आईआईटी कानपुर	2	सांत्वना

चित्र कला प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1.	अध्यंश पार्थ	श्री अरूण कुमार	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	4	प्रथम
2.	इशि मिश्रा	श्री अमित मिश्रा	मरियमपुर सीनियर सेकेंड्री स्कूल	4	द्वितीय
3.	अंशिका दिवाकर	श्री अवधेश दिवाकर	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	5	तृतीय
4.	नैतिक	श्री सुरेश	अपरच्यूनिटी स्कूल आईआईटी कानपुर	4	सांत्वना

निबंध लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1.	अवनीश त्रिवेदी	श्री सुबोध कुमार	डॉ वीरेन्द्र स्वरूप एजूकेशन सेंटर, अवधपुरी कानपुर	8	प्रथम
2.	जैनब रिजवी	श्री सैय्यद जहीर अब्बास रिजवी	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	8	द्वितीय
3.	मुक्ति श्रीवास्तव	श्री राजकुमार श्रीवास्तव	नर्चर इंटरनेशनल स्कूल कानपुर	6	तृतीय
4.	आयुष गौर	श्री रमाकांत	नर्चर इंटरनेशनल स्कूल कानपुर	7	सांत्वना

स्व रचित कविता लेखन प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	पिता का नाम	विद्यालय	कक्षा	स्थान
1.	धारिणी अग्निहोत्री	श्री प्रशांत अग्निहोत्री	दिल्ली पब्लिक स्कूल कल्याणपुर	12	प्रथम
2.	ख्याति सिंह	स्व. श्री रामबाबू सिंह	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	11	द्वितीय
3.	सृष्टि	श्री देवेन्द्र सिंह यादव	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	11	तृतीय
4.	रचना यादव	श्री विनोद कुमार	केन्द्रीय विद्यालय आईआईटी कानपुर	12	सांत्वना

संस्थान के विद्यार्थियों के लिए प्रतियोगिताएं

तर्क प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	कक्षा	विभाग/अनुभाग	स्थान
1.	प्रज्ञान्श मिश्रा	बी. टेक द्वितीय वर्ष	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	वैदांश पाण्डेय	बी टेक द्वितीय वर्ष	यांत्रिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
3.	विशाल कुमार	बी टेक द्वितीय वर्ष	यांत्रिक अभियांत्रिकी	तृतीय
4.	छायांक गर्ग	बी टेक द्वितीय वर्ष	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	सांत्वना

क्र.सं.	नाम	कक्षा	विभाग/अनुभाग	स्थान
1.	चारु छिपेश्वर	बी. टेक द्वितीय वर्ष	रासायनिक अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	सृष्टि साहू	बी. टेक द्वितीय वर्ष	पदार्थ विज्ञान विभाग	प्रथम
3.	अस्मिता अद्या	पी एच डी प्रथम वर्ष	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
4.	उदय कुमार कुशवाहा	बी. टेक द्वितीय वर्ष	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
5.	बुरहनुद्दीन मर्चेन्ट	बी एस द्वितीय वर्ष	गणित एवं सांख्यिकी	प्रथम
6.	साहिल कुमार	बी. टेक द्वितीय वर्ष	यांत्रिक अभियांत्रिकी	प्रथम
7.	प्रियांशु गुजरानिया	बी. टेक द्वितीय वर्ष	सिविल अभियांत्रिकी	प्रथम
8.	लक्षित शर्मा	बी. टेक द्वितीय वर्ष	जैव विज्ञान एवं जैविक अभियांत्रिकी	प्रथम
9.	छायांक गर्ग	बी. टेक द्वितीय वर्ष	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	द्वितीय
10.	देवांश वर्मा	बी एस द्वितीय वर्ष	गणित एवं वैज्ञानिक कम्प्यूटिंग	द्वितीय
11.	तनिश सिंगला	बी एस द्वितीय वर्ष	भौतिकी अभियांत्रिकी	द्वितीय
12.	आकांक्षा रतनाकर	बी. टेक द्वितीय वर्ष	रासायनिक अभियांत्रिकी	द्वितीय
13.	आशुतोष आनंद	बी. एस द्वितीय वर्ष	आर्थिक विज्ञान	द्वितीय
14.	कृष अग्रवाल	बी. एस द्वितीय वर्ष	पृथ्वी विज्ञान	द्वितीय
15.	उत्कर्ष केशरवानी	बी एस प्रथम वर्ष	स्टेटिस्टिक्स एवं डेटा साइंस	द्वितीय
16.	हर्षदा विनायक राजहंस	बी टेक प्रथम वर्ष	विद्युत अभियांत्रिकी	द्वितीय
17.	रिशव राज	बी टेक द्वितीय वर्ष	रासायनिक अभियांत्रिकी	तृतीय
18.	विशाल कुमार	बी टेक द्वितीय वर्ष	यांत्रिकी अभियांत्रिकी	तृतीय
19.	दक्ष दुआ	बी टेक द्वितीय वर्ष	विद्युत अभियांत्रिकी	तृतीय
20.	आयुष बघेल	बी टेक द्वितीय वर्ष	यांत्रिकी अभियांत्रिकी	तृतीय
21.	सौरभ यादव	बी एस द्वितीय वर्ष	रासायनिक अभियांत्रिकी	तृतीय
22.	वासी हुसैन	बी टेक प्रथम वर्ष	यांत्रिकी अभियांत्रिकी	तृतीय
23.	भव्या गर्ग	बी टेक द्वितीय वर्ष	जैव विज्ञान एवं जैविक अभियांत्रिकी	तृतीय
24.	हनुमान सिनवर	बी एस प्रथम वर्ष	आर्थिक विज्ञान	तृतीय

किरदार प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	कक्षा	विभाग/अनुमान	स्थान
1.	ज्योति मिश्रा	पी एच डी पांचवा वर्ष	जैव विज्ञान एवं जैविक अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	प्रज्ञान्श मिश्रा	बी टेक द्वितीय वर्ष	सिविल अभियांत्रिकी	द्वितीय
3.	भाविक कुमार	बी एस द्वितीय वर्ष	रसायन	तृतीय
4.	छायांक गर्ग	बी टेक द्वितीय वर्ष	वांतरिक्ष अभियांत्रिकी	सांत्वना

काव्यांजलि प्रतियोगिता

क्र.सं.	नाम	कक्षा	विभाग/अनुमान	स्थान
1.	जगदीश मेघवाल	एम टेक	विद्युत अभियांत्रिकी	प्रथम
2.	सत्यम कुमार	पी एच डी पांचवा वर्ष	मानविकीय एवं सामाजिक विज्ञान	द्वितीय
3.	सौभाग्य पाण्डेय	बी टेक द्वितीय वर्ष	पृथ्वी विज्ञान	तृतीय
4.	चारु छिपेश्वर	बी एस द्वितीय वर्ष	रासायनिक अभियांत्रिकी	सांत्वना

इन सभी प्रतियोगिताओं के समापन के पश्चात दिनांक 29 सितम्बर 2023 को भव्य रूप में हिंदी दिवस समारोह का आयोजन किया गया जिसमें अधिष्ठाता प्रशासन तथा कुलसचिव (स्थानापन्न) प्रोफेसर ब्रजभूषण मुख्य अथिति के रूप में शामिल हुए तथा समस्त विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया। हिंदी दिवस समारोह के अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर डॉ. अर्क वर्मा, अधिष्ठाता संसाधन एवं पूर्व छात्र प्रोफेसर कांतेश बालानी, प्रोफेसर शिखा दीक्षित, प्रोफेसर सन्तोष कुमार मिश्र के साथ-साथ संस्थान के अधिकारियों, कर्मचारियों एवं विद्यार्थियों ने भारी संख्या में पहुंचकर समारोह की गरिमा बढ़ाई।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का उद्देश्य देश भर में फैले केन्द्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ावा देने और राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए एक संयुक्त मंच प्रदान करना है। इस मंच पर केन्द्र सरकार के कार्यालयों/उपक्रमों/बैंकों आदि के अधिकारी हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने पर विचार-विमर्श करते हैं जिससे संबंधित कार्यालय अपनी उपलब्धि स्तर में सुधार ला सकें।

इसी क्रम में, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय-3 की छठी बैठक का आयोजन, समिति के कार्यकारी अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रजभूषण की अध्यक्षता में दिनांक 25 अक्टूबर 2023 को हुआ। इस बैठक में गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के उपनिदेशक (कार्यान्वयन) डॉ0 छबिल कुमार मेहेर, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय के साथ-साथ समिति के सदस्य कार्यालयों के 41 कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों ने भाग लिया।

बैठक से पूर्व सभा कक्ष में हिंदी गीत बजाया गया। तत्पश्चात नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर कार्यालय-3 के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय ने समिति के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रज भूषण, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद से पधारे उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ0 छबिल कुमार मेहेर, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी तथा उपस्थित समस्त कार्यालय प्रमुखों एवं वरिष्ठ अधिकारियों का स्वागत तथा हार्दिक अभिनंदन किया। तत्पश्चात सदस्य सचिव ने समस्त उपस्थित जनों को अवगत कराया कि इस नराकास द्वारा चल वैजयन्ती प्रतियोगिता

की शुरूआत की जा रही है एवं इस बार से ही इस योजना के तहत चयनित कार्यालयों को सम्मानित करने का कार्य किया जा रहा है। इसी क्रम में इस योजना के तहत छठी बैठक के दौरान भारतीय जीवन बीमा निगम क्षेत्रीय कार्यालय कानपुर, राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर तथा ईसीजीसी लिमिटेड कानपुर को स्मृति चिह्न प्रदान करके सम्मानित किया गया। उन्होंने आगे जानकारी दी कि इस नराकास को उत्कृष्ट नराकास बनाने के लिए पत्रिका का प्रकाशन किया जाना जरूरी है। इस क्रम में उन्होंने उपस्थित सभी कार्यालय प्रमुखों को अवगत कराते हुए अनुरोध किया कि यह संस्थान पहले से ही तीन पत्रिकाओं का प्रकाशन कर रहा है अतः कोई अन्य सदस्य कार्यालय आगे बढ़कर इस जिम्मेदारी को संभाले तो अच्छा होगा।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र-2) गाजियाबाद के उप निदेशक (कार्यान्वयन) डॉ0 छबिल कुमार मेहेर ने सभी सदस्य कार्यालयों से आह्वान किया कि नराकास की बैठकों में सभी कार्यालय प्रमुखों की उपस्थिति अपेक्षित है। उन्होंने आगे कहा कि हिंदी के नाम पर करोड़ों रुपये खर्च किये जा रहे हैं परन्तु हम लोग हिंदी दिवस का इंतजार करते हैं एवं हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए केवल हिंदी अधिकारियों एवं हिंदी अनुवादकों से अपेक्षा करते हैं। उन्होंने आगे कहा कि इस देश के स्वतंत्र नागरिक होने के नाते हम लोगों का परम कर्तव्य है कि हम लोग अपने आपको हिंदी का सेनानी समझें क्योंकि हम लोग जन्म से ही हिंदी भाषी हैं। भारत में रहते हुए हमसे सभी अंग्रेजी बोलने की अपेक्षा रखते हैं। ये हमारी और नई पीढ़ी के लिए गुलामी की मानसिकता का प्रतीक है, क्योंकि भाषा का मरना केवल भाषा का मरना नहीं होता, इससे समाज मरने लगता है। ऐसी स्थिति में भाषा को बचाना बहुत जरूरी है।

गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग, क्षेत्रीय कार्यान्वयन कार्यालय (उत्तरी क्षेत्र–2) गाजियाबाद के सहायक निदेशक (कार्यान्वयन) श्री अजय कुमार चौधरी द्वारा 24 कार्यालयों से प्राप्त (1 जनवरी 2023 से 30 जून 2023 तक) की छमाही रिपोर्ट की समीक्षा की गई। छमाही रिपोर्ट की समीक्षा करते हुए श्री चौधरी ने कहा कि नराकास की

बैठक में कार्यालय प्रमुखों एवं विभागाध्यक्षों का उपस्थित होना बहुत जरुरी होता है। उत्कृष्ट नराकास की श्रेणी में आने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा कि सभी कार्यालय अपनी रिपोर्ट समय से भेंजे। यह सुनिश्चित करने का दायित्व कार्यालय प्रमुख का है कि धारा 3(3) के अंतर्गत आने वाले सभी दस्तावेज द्विभाषी जारी हों। इसके साथ ही नियम-5 के तहत हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में ही दिये जाने अनिवार्य होते हैं। उन्होंने सभी से नियम 11 का अनुपालन करने का भी आह्वान किया।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर (कार्यालय-3) के कार्यवाहक अध्यक्ष प्रोफेसर ब्रजभूषण ने उपस्थित समस्त सदस्यों का स्वागत तथा आभार प्रकट करते हुए कहा कि मुझे समिति की छठी बैठक में निदेशक का प्रतिनिधित्व करने का अवसर प्राप्त हुआ है। उन्होंने सभी को प्रेरित करते हुए कहा कि सभी को राजभाषा नियमों के तहत कार्यालय के कार्य हिंदी में करने चाहिए। उन्होंने आगे कहा कि पिछली नराकास बैठकों की अपेक्षा इस बार अधिक सदस्य भागीदारी दर्ज करा रहे हैं जो कि एक अच्छा संकेत है। उन्होंने आगे सुझाव दिया कि कई बार किसी चीज का अनुपालन याचना से नहीं बल्कि दंड के फलस्वरूप भी अच्छा हो जाता है। इस संबंध में उन्होंने कहा कि नराकास की रिपोर्ट को सीधे-सीधे विभागों के त्रैमासिक बजट से जोड़ दिया जाये जिससे अगर कोई कार्यालय समय से अपनी रिपोर्ट उपलब्ध नहीं करा पा रहा है तो संबंधित विभाग द्वारा उस कार्यालय के अनुमोदित बजट से 10 से 15 प्रतिशत तक की कटौती की जाये। उन्होंने आगे यह भी कहा कि अगर नराकास की तरफ से कोई पत्रिका प्रकाशित होती है तो नराकास के लिए यह बड़ी उपलब्धि होगी।

बैठक के अंत में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कानपुर (कार्यालय–3) के सदस्य सचिव श्री विजय कुमार पाण्डेय ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया तथा राष्ट्रगान के साथ बैठक संपन्न हुई।

दिनांक 22 अगस्त 2023 को राजभाषा प्रकोष्ठ द्वारा प्रशासनिक अनुभागों के प्रभारी अधिकारी एवं उनके द्वारा तिमाही प्रगति रिपोर्ट प्रेषित करने हेतु नामित अधिकारी / कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, कानपुर के अतिथि गृह स्थित पी बी सी ई सी कक्ष में किया गया। इस कार्यशाला के अथिति वक्ता भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान, खड़गपुर के वरिष्ठ हिंदी अधिकारी डॉ राजीव रावत थे। इस कार्यशाला के मुख्य विषय कंठस्थ प्रशिक्षण और आधुनिक कम्प्यूटिंग टूल्स एवं वार्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के सहज उपाय, नोटिंग / ड्राफ्टिंग / प्रशासनिक पत्राचार थे। इस कार्यशाला का उद्घाटन कुलसचिव (स्थानापन्न) प्रोफेसर ब्रजभूषण द्वारा किया गया। इस कार्यशाला में 30 अधिकारी / कर्मचारियों ने भाग लिया ।

विश्व हिंदी दिवस 2024

दिनांक 10 जनवरी 2024 को विश्व हिंदी दिवस के अवसर पर संस्थान में कैंपस कवि सम्मलेन का आयोजन किया गया, जिसमें संस्थान के विद्यार्थियों, परिसरवासियों एवं संकाय सदस्यों ने अपना काव्य पाठ किया। इस अवसर पर प्रोफेसर भरत लोहानी (सिविल अभियांत्रिकी), प्रोफेसर अर्क वर्मा, प्रभारी प्रोफेसर राजभाषा प्रकोष्ठ एवं प्रोफेसर संतोष कुमार मिश्र (बीएसबीई) के साथ-साथ सुश्री सौम्या मिश्रा, सुश्री दिव्या त्रिपाठी, सुश्री शिप्रा सिंह, श्री अक्षत शर्मा, श्री कन्हैया कुमार, श्री हिमांशु कर्नाटक एवं श्री कमल साहू ने अपना काव्य पाठ किया। इस कार्यक्रम का संचालन राजभाषा अधिकारी श्री विजय कुमार पाण्डेय ने किया।

बानगी-एक परिचर्चा

संस्थान परिसर वासियों को साहित्य से जोड़ने एवं उनमें साहित्य के प्रति रुचि उत्पन्न करने के उद्देश्य से राजभाषा प्रकोष्ठ एवं शिवानी केंद्र द्वारा दिनांक 10 अक्टूबर 2023 को साहित्यिक परिचर्चा के रूप में 'बानगी' नामक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में हिंदी जगत के दो पुरोधा कवि एवं लेखक श्री अशोक वाजपेयी एवं श्री नरेश सक्सेना शामिल हुए। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में अधिष्ठाता प्रशासन एवं कुलसचिव (स्थानापन्न) प्रोफेसर ब्रज भूषण ने शिरकत की।

परिचर्चा के क्रम में श्री अशोक वाजपेयी ने सभागार में उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए कहा कि साहित्य वह सशक्त माध्यम है, जो समाज को व्यापक रूप से प्रभावित करता है। यह समाज में प्रबोधन की प्रक्रिया का सूत्र-पात करता है। लोगों को प्रेरित करने का कार्य करता है और जहाँ एक ओर यह सत्य के सुखद परिणामों को रेखांकित करता है, वहीं असत्य का दुखद अंत कर, सीख व शिक्षा प्रदान करता है। वहीं इस अवसर पर श्री नरेश सक्सेना ने अपने जीवन के साहित्यिक अनुभवों को श्रोताओं के साथ साझा किया एवं अपनी श्रेष्ठ कविताओं का गायन भी किया जिनमें में से एक कविता मछलियों के ऊपर भी सुनाई जो उन्होंने मछलियों के जीवन के बारे में लिखी है। यह कविता श्रोताओं को बहुत पसंद आई तथा सभी ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर डॉ. अर्क वर्मा ने किया।

'अक्षर'-आई आई टी कानपुर साहित्यिक महोत्सव- 2023

'अक्षर'– भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर का साहित्यिक महोत्सव, का आयोजन राजभाषा प्रकोष्ठ, शिवानी केन्द्र (हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संपोषण एवं समन्वय केंद्र) एप्रोच सेल, गाथा, एवं हिंदी साहित्य सभा द्वारा संयुक्त रूप से 15 से 17 अक्टूबर के बीच किया गया। इस तीन दिवसीय साहित्यिक महोत्सव के मुख्य अतिथि प्रोफेसर एस गणेश, निदेशक (भा.प्रौ.सं) एवं विशिष्ट अतिथि अधिष्ठाता प्रशासन, प्रोफेसर ब्रज भूषण रहे। उद्घाटन अवसर पर शिवानी केन्द्र के मुख्य अन्वेषक प्रोफेसर कांतेश बालानी ने शिवानी केन्द्र के विज़न के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इस केन्द्र द्वारा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं का संपोषण एवं समन्वय का कार्य किया जा रहा है। केन्द्र ऐसे विद्यार्थियों की सहायता के लिए तत्पर रहता है जिन्हें भाषा की वजह से शैक्षणिक पाठ्यक्रम समझने में समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इसके अतिरिक्त यह केन्द्र हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं को प्रोत्साहित करने के लिए वर्ष पर्यंत साहित्यिक कार्यक्रमों का आयोजन भी करता रहता है। इस अवसर पर राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर एवं शिवानी केन्द्र के सह-मुख्य अन्वेषक डॉ0 अर्क वर्मा द्वारा इस महोत्सव के आयोजन के उद्देश्यों के बारे में सभी को विस्तार से जानकारी दी गई। इस तीन दिवसीय साहित्यिक महोत्सव के दौरान निम्नलिखित कार्यक्रमों/परिचर्चाओं तथा प्रस्तुतियों का आयोजन किया गया।

प्रथम दिवस के कार्यक्रम

- सुश्री नूतन वशिष्ठ और सुश्री अनुपमा जिन्हें कथारंग : ए स्टोरीटेलिंग ग्रुप' के नाम से जाना जाता है, द्वारा ''शिवानी की कहानियाँ-एक गायन'' में शिवानी जी की सबसे प्रसिद्ध कहानियों का एक कहानी पाठ किया गया। समूह ने अपने जीवंत गायन से दर्शकों को पूरी तरह से मंत्रमुग्ध कर दिया और शिवानी जी की कुछ प्यारी कहानियों को जीवंत कर दिया।

- ''शिवानी के साहित्य में "स्त्री विमर्श'' विषय पर एक पैनल चर्चा आयोजित की गई जिसमें कई साहित्यकारों जैसे बनारस विश्वविद्यालय की प्रोफेसर चंद्रकला त्रिपाठी, पुणे विश्वविद्यालय की प्रोफेसर शशिकला राय एवं सुश्री अनुशक्ति सिंह ने शिरकत की। पैनल ने शिवानी जी के लेखन में मजबूत और स्वतंत्र महिला पात्रों के चित्रण पर विस्तार से चर्चा की।

- कुमारी शर्वरी जी राव एवं श्रीमती नागरेखा जी राव द्वारा ''नृत्य संध्या-एक भरत नाट्यम प्रदर्शन'' की प्रस्तुति दी गई। इसमें

कलाकारों द्वारा दी गई प्रस्तुति को दर्शकों ने खूब सराहा।

- भाग्यश्री देशपांडे और उनके सुरांजलि समूह द्वारा 'सुर सरिता-शास्त्रीय गायन की एक शाम' प्रस्तुत किया गया। सुश्री देशपांडे और उनके साथ आए कलाकारों ने अपनी भावपूर्ण आवाज़ और हिंदुस्तानी रागों और गज़लों से सभी का मन मोह लिया।

द्वितीय दिवस के कार्यक्रम

- अक्षर का दूसरा दिन शानदार प्रदर्शन, सजीव गायन, प्रकाशन, सिनेमा और कविता पर चर्चा के साथ प्रारंभ हुआ। ज़िशान अली एवं समूह द्वारा कथक नृत्य की प्रस्तुति दी गई।

- प्रसिद्ध बॉलीवुड अभिनेत्री नयनी दीक्षित ने शिवानी की कहानियों का मंत्रमुग्ध कर देने वाला सजीव प्रस्तुतिकरण किया। इस कार्यक्रम से दर्शक बहुत प्रभावित हुए और शिवानी की कहानियों के, नयनी के शानदार अभिनय से आश्चर्यचकित रह गए।

- राजकमल प्रकाशन लिमिटेड के श्री अलिंद माहेश्वरी, रुख प्रकाशन के अनुराग वत्स, बाल कृष्ण बिड़ला (भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के पूर्व छात्र और टेक्नोक्रेट) जैसे प्रमुख प्रकाशकों एवं प्रोफेसर अर्नब भट्टाचार्या की भागीदारी के साथ ''आज के तकनीकी दौर में लेखन एवं प्रकाशन'' विषय पर एक जीवंत परिचर्चा हुई। प्रसिद्ध लेखक तथा आलोचक श्री आनंद कक्कड़ द्वारा इस परिचर्चा का संचालन किया गया। इस परिचर्चा के मुख्य उद्देश्य आज के लेखन और प्रकाशन में चुनौतियों तथा अवसर, सोशल मीडिया, एआई और चैट जीपीटी जैसी तकनीकी प्रगति पर वृहद रूप से विचार-विमर्श करना था।

- परिचर्चा के पश्चात श्री नमन सिंह, श्री प्रखर पांडे, डॉ. देवानंद पाठक और श्री हरीश झा द्वारा कबीर के भजनों की दिव्य प्रस्तुति दी गई। दर्शकों ने भक्ति संगीत और कलाकारों की खूबसूरत प्रस्तुति का लुत्फ उठाया।

- इसके बाद प्रसिद्ध बॉलीवुड निर्माता और निर्देशक श्री आर बाल्की, प्रसिद्ध फिल्म समीक्षक और विश्लेषक श्री कोमल नाहटा के साथ-साथ साहित्य प्रेमी और पॉसिबल एजुकेशन की सीईओ सुश्री सुरभि मोदी के नेतृत्व में भारतीय सिनेमा में महिलाओं के चित्रण पर एक चर्चा हुई। चर्चा में पिछले कुछ वर्षों के दौरान भारतीय सिनेमा में महिला पात्रों के बदलते चित्रण पर चर्चा की गई और स्वीकार किया गया कि यद्यपि भूमिकाएँ विकसित हुई हैं लेकिन हमारे परिवारों और समाज में महिला भूमिकाओं से जुड़ी रूढ़ियों से मुक्त होने के लिए अभी भी काफी काम किया जाना बाकी है।

- दिन का समापन प्रसिद्ध कवि और लेखक श्री अशोक चक्रधर और प्रसिद्ध कवयित्री श्रीमती भावना तिवारी की विचारोत्तेजक बातचीत के साथ हुआ। इस संवाद का केन्द्र रहा, श्री अशोक चक्रधर का जीवन और उनके कार्य तथा समाज और हमारे व्यक्तिगत जीवन में साहित्य की भूमिका।

तृतीय दिवस के कार्यक्रम

महोत्सव के तीसरे दिन की शुरूआत मुक्तेश पंत (जो भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के पूर्व छात्र और महान लेखिका शिवानी जी के सुपुत्र हैं) उनकी पत्नी श्रीमती विनीता पंत, बहन इरा पांडेय तथा श्री पुष्पेश, श्री मुक्तेश पंत के कई बैचमेट और भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के कई प्रतिष्ठित पूर्व छात्र, विशेष रूप से श्री सुधाकर केसवन और उनका परिवार, श्री अनुपम खन्ना, श्री वरुण सिन्हा, राजेश नंदन पांडे और कुछ अन्य विद्वानजनों की गरिमामय उपस्थिति में हुई जिन्होंने शिवानी जी के बारे में अपनी सामूहिक यादें साझा कीं।

यह कार्यक्रम निदेशक, प्रोफेसर एस. गणेश के स्वागत भाषण के साथ शुरू हुआ जिन्होंने इस महत्वपूर्ण अवसर पर सभी का स्वागत किया और जीवन में साहित्य और भारतीय भाषाओं की भूमिका और प्रयासों को सामने लाने में शिवानी केंद्र और राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रयासों की सराहना की। उन्होंने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं

के साथ संवाद को समृद्ध करने में प्रौद्योगिकी की भूमिका का विशेष रूप से उल्लेख किया। इसके बाद श्री मुक्तेश पंत ने अपनी मां शिवानी के बारे में अपनी यादें, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर परिसर में अपने दिनों और अपनी मां शिवानी के साथ उनके सहयोगियों की कुछ सामूहिक यादों को याद करते हुए सभा को संबोधित किया।

इस अवसर पर मुक्तेश पंत की बहन इरा पांडेय और लब्ध प्रतिष्ठित इतिहासकार और आलोचक श्री पुष्पेश पंत ने 'हमारी दिद्दी' नामक कार्यक्रम के तहत शिवानी के जीवन और कार्यों के बारे में चर्चा की। इस सत्र के दौरान श्रीमती इरा पांडेय और श्री पुष्पेश पंत ने गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर के अधीन शांति निकेतन में शिवानी जी के जीवन की आकर्षक कहानियों को याद किया और अपने आस-पास के सभी लोगों के प्रति उनकी करुणा और सम्मान के कारण लेखन में उनकी बढ़ती प्रतिभा को याद किया। उन्होंने शिवानी के बारे में बात की कि वह अपने आस-पास के लोगों पर बहुत पैनी नज़र रखती थीं और उनका साहित्य उनके आस-पास के लोगों के जीवन से प्रेरित था। इसका श्रेष्ठ उदाहरण है उनकी कहानी 'एक थी रामरत्ती' जो उनकी घरेलू नौकरानी पर आधारित थी जो परिवार से जुड़ी हुई थी।

- कार्यक्रम के अगले क्रम में हिंदी के प्रसिद्ध लेखक डॉ0 वैभव सिंह का शिवानी के जीवन और कार्यों पर आधारित व्याख्यान था। वैभव ने शिवानी के लेखन संबंधी सत्र के दौरान उनके कुछ सबसे दिलचस्प पहलुओं का विशेष उल्लेख किया। उन्होंने उनकी कई प्रसिद्ध कहानियों जैसे कृष्णकली, चौदह फेरे, लाल हवेली आदि के संदर्भ में विस्तार से चर्चा की।

- इस परिचर्चा के क्रम में साहित्यकार सुदीप्ति के नेतृत्व में एक लघु-सत्र का आयोजन किया गया जिसमें शिवानी के पाठकों और प्रशंसकों ने शिवानी की अनगिनत कहानियों और उपन्यासों के बारे में अपने अनुभव साझा किये।

- कार्यक्रम के अगले क्रम में वाराणसी स्थित व्योमेश शुक्ल के रूपवाणी थिएटर ग्रुप द्वारा लब्धप्रतिष्ठित कवि सूर्यकांत त्रिपाठी

'निराला' के काव्य ''राम की शक्ति पूजा'' का मंत्रमुग्ध कर देने वाला नाट्य प्रदर्शन किया गया। प्रसिद्ध कवि व्योमेश शुक्ल ने स्वयं इस प्रस्तुति का संचालन किया। यह रूपवाणी समूह द्वारा ''राम की शक्ति पूजा'' की 92वीं प्रस्तुति थी।

- कार्यक्रम के अगले क्रम में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के बोधि ग्रुप द्वारा ''शरद ऋतु पर रवीन्द्र संगीत का एक गुलदस्ता'' नामक प्रस्तुति दी गई। उल्लेखनीय है कि इस समूह में संस्थान के ही कई संकाय सदस्य और कर्मचारी जुड़े हुए हैं जो भिन्न-भिन्न प्रकार के कार्यक्रमों के माध्यम से अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं। इस समूह में प्रो. महुआ बनर्जी, प्रो. सौम्येन गुहा, श्रीमती चित्रलेखा भट्टाचार्य, प्रो. सरनी साहा, श्रीमती सहेली दत्ता, प्रो. शर्मिष्ठा मित्रा, श्रीमती मैत्रेयी चटर्जी, श्रीमती अनन्या तथा वायलिन वादक डॉ देवानंद पाठक प्रमुख रूप से जुड़े हुए हैं।

- अक्षर-2023 के दौरान तीन दिवसीय विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन भी किया गया जिसमें देशभर के प्रसिद्ध प्रकाशन घरानों ने अपनी पुस्तकों की प्रदर्शनी लगाई । इन पुस्तक प्रकाशन घरानों में राजकमल प्रकाशन प्रयागराज, नेशनल बुक ट्रस्ट-दिल्ली, एस चांद प्रकाशन, लखनऊ, निखिल प्रकाशन आगरा, रोहित प्रकाशन गाजियाबाद, एस.जी.एम. प्रकाशन कानपुर, अमर चित्र कथा मुंबई तथा उत्कर्ष प्रकाशन प्रमुख रहे। इस पुस्तक प्रदर्शनी में कई प्रकाशन घरानों ने अलग-अलग भाषाओं की पुस्तकों तथा बाल साहित्य को प्रदर्शित किया। इस तीन दिवसीय विशाल पुस्तक प्रदर्शनी का परिसरवासियों तथा विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भ्रमण करते हुए अपनी रुचि एवं पसंद की पुस्तकों की जमकर खरीददारी की।

- अक्षर-23 का समापन अखिल भारतीय कवि सम्मेलन के साथ हुआ जिसमें देश भर के लब्ध प्रतिष्ठित कवियों जैसे फरहत एहसास, शारिक कैफी, भावना तिवारी, पंकज चतुर्वेदी, व्योमेश शुक्ल, सौम्या मालविया, अविनाश मिश्रा और अमृतांशु शर्मा ने अपनी श्रेष्ठ कविताओं और गज़लों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया ।

कार्यक्रम के अंत में राजभाषा प्रकोष्ठ के प्रभारी प्रोफेसर डॉ0 अर्क वर्मा ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने राजभाषा प्रकोष्ठ एवं शिवानी केंद्र द्वारा आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रमों के प्रति समर्थन जारी रखने के लिए सभी श्रोताओं एवं दर्शकों का विशेष रूप से धन्यवाद ज्ञापित किया और सभी से अक्षर-2024 में पुनः मिलने का वादा किया।

—◆◆◆—

साक्षात्कार
श्री राकेश शर्मा

आधुनिक युग प्रतिस्पर्धा का युग है। विज्ञान अथवा तकनीकी क्षेत्र में मनुष्य की अभूतपूर्व सफलताओं ने उसकी इच्छाओं एवं आकांक्षाओं को पंख लगा दिये हैं परंतु बहुत कम ही लोग ऐसे होते हैं जिन्हें जीवन में वांछित वस्तुएं प्राप्त होती हैं अथवा अपने जीवन से वे संतुष्ट होते हैं। हममें से प्रायः अधिकांश लोग जिन्हें मनोवांछित लाभ प्राप्त नहीं होते हैं वे स्वयं की कमियों को देखने के स्थान पर अपने भाग्य को दोष देकर मुक्त हो जाते हैं। वास्तव में भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो स्वयं पर विश्वास करते हैं। ऐसे व्यक्ति जो अपने पुरुषार्थ द्वारा अपनी कामनाओं की पूर्ति में आस्था रखते हैं वे व्यक्ति जीवन में सफलता के मार्ग पर अग्रसित होते हैं।

पुरुषार्थी अथवा कर्मवीर व्यक्ति जीवन में आने वाली बाधाओं व समस्याओं को सहजता से स्वीकार करते हैं। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वे विचलित नहीं होते हैं अपितु साहसपूर्वक उन कठिनाइयों का सामना करते हैं। जीवन संघर्ष में वे निरंतर विजय की ओर अग्रसर होते हैं और सफलता की ऊँचाइयों तक पहुंचते हैं। पुरुषार्थी व्यक्ति ही जीवन में यश अर्जित करते हैं। वह स्वयं को ही नहीं अपितु अपने परिवार, समाज तथा देश को गौरवान्वित करते हैं।

पत्रिका के इस अंक के माध्यम से हम अपने पाठकों का परिचय एक ऐसी शख्सियत से करा रहें हैं जिन्होंने अपनी कड़ी मेहनत एवं लगन से जीवन में अनेकों उपलब्धियां हासिल की हैं तथा देश-दुनिया में अपना खूब नाम कमाया है। जी हां... हम बात कर रहे हैं, श्री राकेश शर्मा जी की, जो वर्तमान में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के पूर्व छात्र एसोसिएशन के प्रेसिडेंट हैं एवं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के पूर्व छात्रों के माध्यम से धन जुटाने एवं पूर्व छात्रों को एकजुट करने के लिए निरंतर कार्यक्रम आयोजित कर रहे हैं। आइए, आपको अंतस परिवार द्वारा श्री राकेश शर्मा जी के साथ हुई वार्तालाप से रूबरू कराते है...

अंतस परिवारः सर, कृपया हमें अपने प्रारंभिक जीवन के बारे में बताएं जैसे अपने परिवार/स्कूली शिक्षा आदि।

राकेश शर्माः मेरा जन्म इंदौर में हुआ तथा मेरे पिता जी का जन्म 1921 में मध्य प्रदेश के सुनवारी गांव में हुआ था। मेरे पिता जी का नाम परमेश्वर दत्त शर्मा था, वे 10 वर्ष की आयु में ही अनाथ हो गए थे एवं तत्पश्चात इंदौर में आकर रहने लगे। मेरे पिता जी की सरकारी नौकरी होने के कारण उनका स्थानांतरण होता रहता था इसलिए मेरी प्रारंभिक शिक्षा मध्य प्रदेश के विभिन्न शहरों में हुई। मेरे पिता जी ने हिंदी विषय से पीएचडी की थी तथा हिंदी के संकाय सदस्य रहे। पिता जी हिंदी साहित्य समिति भी चलाते थे और हिंदी के प्रचारक भी थे। मेरी दोनों बहनें भी हिंदी की संकाय सदस्य हैं। प्रारंभिक जीवन में ही मैंने हिंदी साहित्य को पढ़ लिया, हिंदी की बहुत सी किताबें घर पर थीं इसलिए मैंने जयशंकर प्रसाद के उपन्यास पढ़ डाले, साथ ही साथ 'वे कैसे सफल हुए' नाम की एक किताब पढ़ी फिर स्वामी विवेकानंद की 'हिज कॉल टू द नेशन' का हिंदी अनुवाद पढ़ा। मैंने हिंदी मीडियम में पड़ाई की थी क्योंकि हमारे समय में मध्य प्रदेश सरकार ने अंग्रेजी विषय को पाठ्यक्रम से निकाल दिया था। अतः मैने अंग्रेजी भाषा को अपने हाईस्कूल में ही पढ़ा था। मैंने इंदौर इंजीनियरिंग कॉलेज से स्नातक किया, इसके बाद सन् 1975 से 1980 के दौरान मैंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से एम.टेक. और सीनियर रिसर्च फेलोशिप किया। तत्पश्चात मैंने 1990 में न्यूयॉर्क से वित्त में एमबीए किया। मैंने सन् 1990 में मेटलाइफ, न्यूयार्क में मैनेजमेंट एग्जिक्यूटिव ट्रेनी का पदभार ग्रहण किया और 1990 से 2007 तक इसी संस्थान में रहा। मैं जनवरी 2008 से एक स्वतंत्र वित्तीय सलाहकार के रूप में अपनी सेवाएं दे रहा हूं। मैं आईबीएम एडवांस्ड सेंटर फॉर एजुकेशन का संस्थापक भी रहा हूं। उल्लेखनीय है कि इस केंद्र के माध्यम से भारत में शिक्षण संस्थानों के लिए अमेरिका से पेशेवरों को लाकर अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों में उन्नत सॉफ्टवेयर संबंधी प्रशिक्षण प्रदान करने का कार्य किया गया। इस शैक्षिक केंद्र में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर और अमेरिकी विश्वविद्यालयों के कई प्रोफेसर पढ़ाते थे। मुझे भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के विशिष्ट सेवा पुरस्कार 2019 से भी सम्मानित किया गया।

अंतस परिवारः अपने छात्र जीवन में आपको किन-किन समस्याओं का सामना करना पड़ा?

राकेश शर्माः छात्र जीवन के दौरान मुझे अंग्रेजी लिखने और बोलने मे बहुत परेशानी होती थी, उस समय सब अंग्रेजी में बात करते थे। मैं अंग्रेजी बोलते समय थोड़ा अटक-अटक कर बोलता था। इस कारण से हम जितने हिंदी वाले छात्र थे सब हॉस्टल के एक ही विंग में रहते थे। इस समस्या से उभरने के लिए हमने धीरे-धीरे अंग्रेजी के अखबार पढ़ने शुरू किये तथा आपस में अंग्रेजी में बातें करके हम लोग अंग्रेजी सीखने की कोशिश किया करते थे। अंततः हम लोगों ने अंग्रेजी बोलना सीख ही लिया।

अंतस परिवारः भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर से पढ़ाई के पश्चात अपनी उपलब्धियों के बारे में कुछ बताइए।

राकेश शर्माः संस्थान से अध्ययन पूरा करने के पश्चात सबसे पहले मुझे स्टेट बैंक ऑफ इंडिया में पीओ के पद पर नौकरी प्राप्त हुई। मेरी पहली पोस्टिंग मुरैना में हुई। मुझे गाँवों में माइक्रोफाइनेंस देखने का कार्य सौंपा गया। इंटीग्रेटेड रुरल डेवलपमेंट प्रोग्राम (IRDP) के तहत अंत्योदय योजना के अंतर्गत हर गाँव में 5-5 गरीब लोगों को लोन देना पड़ता था या कोई एक गाँव गोद लेना पड़ता था। हम लोगों ने छत्तीसगढ़ के बस्तर गाँव को गोद लिया और 95 लोगों को लोन दिया। उस समय गाँव के लोगों को गाय और सिलाई मशीन की जरूरत होती थी। हमने पाँच लोगों के बीच एक गाय तथा तीन लोगों के बीच एक सिलाई मशीन लोन के रूप में दी। सिलाई मशीन वालों को रेडीमेड गारमेंट वालों से जोड़ दिया और गाय वालों को दूध वालों से जोड़ दिया जिससे कि इन्हें गाय एवं सिलाई मशीन का फायदा भी होने लगा। ये लोग कर्ज के बदले रोजाना एक प्रतिशत ब्याज देते थे। इस योजना पर कार्य करते-करते मुझे लगा कि मुझे इसी क्षेत्र में कार्य करना चाहिए। जब मैं इंदौर में था तो मलिन बस्तियों के लोगों को हाथ ठेले का लोन दिया था। हाथ ठेले के लोन के अंतर्गत मैंने लोगों की सुविधा के लिए ठेले में प्रोफेशनल बाल वियरिंग लगवा दी। उस समय 200 रुपये में बाल वियरिंग इंजीनियरिंग का इस्तेमाल लोगों को बहुत पसंद आया। उन्होंने मेरी फोटो अपने साथ खींची। उन लोगों की खुशी मेरे लिए बहुत बड़ी उपलब्धि थी। जब मैं भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में एक विद्यार्थी के रूप में रह रहा था, उस समय हॉस्टल के स्वीपर का लड़का एक फ्लोर से गिर गया था जिससे उसका काफी खून बह गया था तब मैंने उसके ब्लड के इंतजाम के लिए सभी हॉस्टल के लोगों से धन एकत्रित किया। यह मेरे जीवन का धन एकत्रित करने का प्रथम अनुभव था। मैंने ब्लड डोनेशन अभियान चलवाकर ब्लड इकट्ठा करवाने का कार्य भी किया। मैंने भोपाल में भी ब्लड डोनेशन करवाया था। उस समय वहां कई लोगों ने स्वयं आगे आकर ब्लड डोनेट किया। हमारे पास इतना ब्लड एकत्रित हो गया कि इसको रखने के लिए बोतलें कम पड़ गयीं। हालांकि उस समय जो लोग ब्लड डोनेट नहीं कर पाये थे तो हम लोगों ने उनके नंबर ले लिए थे ताकि भविष्य में ब्लड की जरूरत पड़ने पर उनसे संपर्क किया जा सके। कुछ दिनों बाद मेरे पास एक कॉल आया। कॉल करने वाले व्यक्ति ने किसी महिला को ब्लड की सख्त जरूरत के बारे में बताया। तब मैंने उस व्यक्ति से महिला का ब्लड ग्रुप पूछा और ब्लड बैंक की टीम को कॉल करके ब्लड

मंगवाया जिससे उस महिला की समय रहते जान बच गयी। यह सब देखकर मुझे आत्मिक संतुष्टि एवं खुशी मिली।

जब मैं भारतीय स्टेट बैंक में था, उस समय बैंक के नियम बहुत खराब हुआ करते थे। निरीक्षण के नाम पर लोगों को फीस देनी पड़ती थी जो कि 12 रुपये होती थी। जब भी हम निरीक्षण के लिए साइट पर जाते थे तो 12 रुपये फीस ली जाती थी। मैंने इस फीस का विरोध किया एवं इस संबंध में केन्द्रीय कार्यालय को एक पत्र लिखा, क्योंकि इसकी वजह से गरीब आदमी के खाते से बार-बार फीस के नाम पर पैसे काट लिए जाते थे। मेरे द्वारा इस नियम का विरोध करने का परिणाम यह हुआ कि पूरे देश में 5000 रुपये तक कोई भी निरीक्षण शुल्क नहीं लिए जाने का निर्णय लिया गया। मैंने माइक्रोफाइनेंस में भी काम किया, इसमें मैंने बैंक पासबुक के लिए विभिन्न कलर कोड बनवाए जो कि 1400 बैंकों की शाखाओं में लागू कराए गए। जनसेवा के प्रति मेरे योगदान को देखते हुए मुझे जून 1982 में भारतीय स्टेट बैंक के प्रबंध निदेशक द्वारा 'कर्मचारी सुझाव योजना' के तहत पुरस्कार दिया गया। यह पुरस्कार भारतीय स्टेट बैंक की चेक बुक के विज्ञापन और संगठन के विभिन्न विभागों के परिपत्रों पर कलर कोडिंग के लिए दिया गया था। इसके पश्चात मेरा स्थानांतरण 1984 में न्यूयार्क में हो गया। मुझे इस बीच सर्वोच्च चेयरमैन का पुरस्कार भी मिला। जब मुझे 1992 में पता चला कि आईआईटी कानपुर का एल्यूमनी एसोसिएशन भी चल रहा है तब से मैं इस एसोसिएशन से जुड़ गया हूं। 1995 में, मैं न्यूयार्क में नारायण मूर्ति से मिला तब मुझे पता चला कि वह भी भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर के छात्र रह चुके हैं।

अंतस परिवारः आपके अनुसार भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान के छात्रों को किन चुनौतियों का सामना करना पड़ता है ?

राकेश शर्माः छात्र अपने पढ़ाई के दिनों मे अपने ग्रेड पर ज्यादा ध्यान देते हैं। मैंने देखा कि बड़े-बड़े प्रेसिडेंट गोल्ड मेडलिस्ट को भी कई बार नौकरी नहीं मिलती। मेरा मानना है कि अच्छी ग्रेड, नौकरी की गारंटी नहीं है, कई बार साधारण छात्र भी अच्छी ग्रेड पाने वाले छात्रों से बहुत आगे निकल जाते हैं। जिंदगी ग्रेड पर निर्भर नही होनी चाहिए। मेरे हिसाब से आपका जिस क्षेत्र में लगाव अथवा रुचि हो आपको वही कार्य करना चाहिए। निश्चित रूप से उसी में आपको अपने जीवन मे सफलता प्राप्त होगी।

अंतस परिवारः सामाजिक क्षेत्र में आपके द्वारा किए गए कुछ उल्लेखनीय कार्यों/उपलब्धियों के बारे में बताइए।

राकेश शर्माः मैंने कई उल्लेखनीय कार्य किए हैं, जैसे फंड रेजिंग, विवेकानंद समिति, ब्लड डोनेशन कैंप आदि। विवेकानंद समिति द्वारा हठ योग चलाया गया। बाद में स्टूडेंट जिमखाना के द्वारा

विवेकानंद समिति, एनसीसी तथा एनएसएस में से कोई एक चुनना पड़ता था। मैं अपने हॉस्टल का बैटमिंटन का सचिव भी था। मुझे लोगों से कोष एकत्रित कर जरूरतमंद लोगों की मदद करना बहुत अच्छा लगता था। जब भोपाल में गैस कांड हुआ उस वक्त मैं अमेरिका में था। जब मुझे इसके बारे में पता चला कि यह घटना हुई है तो मैं अमेरिका में रहते हुए ही लोगों से कोष एकत्रित करने लगा ताकि भोपाल गैस की घटना से पीड़ित लोगों को सही समय पर सहयोग प्राप्त हो सके। हाल ही में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर में बन रहे 'गंगवाल मेडिकल स्कूल' के लिए कोष जुटाने में भी मेरी भूमिका रही है। पढ़ाई के अलावा, मैंने जो कुछ भी किया, जीवन में उसका मुझे बहुत फायदा मिला। मैंने कॉलेज के दिनों में विवेकानंद समिति चलाई। फंड एकत्रित करने की मेरी हमेशा प्रबल इच्छा रही है। मैं सन् 1977 में आंध्र प्रदेश चक्रवात राहत समिति का सचिव था। आंध्र प्रदेश में चक्रवात के समय प्रभावित लोगों की सहायता करने के लिए मैंने पूंजी जुटाने के लिए लोगों को प्रोजेक्टर पर फिल्म दिखाई। प्रोजेक्टर पर फिल्म देखने वाले लोगों में सबसे अधिक नानकारी (आईआईटी कानपुर की चहारदीवारी से सटा एक गाँव) के लोगों को 2-2 रुपये में टिकट बेचे और चक्रवात प्रभावित लोगों के लिए पूंजी एकत्र की। एकत्रित की गई पूंजी से हमारी टीम ने कई जरूरतमंद लोगों को आर्थिक रूप से मदद पहुंचाई। मैंने बंगाल में बाढ़ पीड़ित लोगों के लिए कार्य किया था। मैं वर्तमान में अमेरिका में फाइनेंस कंसल्टेंट हूँ तथा साथ ही साथ मैं एल्यूमनी एसोसिएशन का प्रेसिडेंट भी हूँ। उल्लेखनीय है कि इस पद के लिए मेरा चुनाव 29 जुलाई 2023 को हुआ था और मैं इस पद पर वर्ष 2025 तक अपने कर्तव्यों का निर्वहन करूंगा।

अंतस परिवारः बहुत-बहुत धन्यवाद !

गुरुदक्षिणा
श्री जीत बिंद्रा

कड़ी मेहनत एवं निरन्तर प्रयास से व्यक्ति अपने जीवन में सफलता के शिखर पर पहुंच सकता है। हमारे आस-पास ऐसे कई व्यक्ति मिल जाएंगे जिन्होंने बेहतर संसाधनों के अभाव के बावजूद अपने जीवन में सफलताओं एवं उपलब्धियों के शिखर को छुआ है। निश्चित रूप से सफल व्यक्तियों द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों एवं सफलताओं से देश एवं समाज को मार्गदर्शन एवं लाभ प्राप्त होता है जिसके फलस्वरूप भावी पीढ़ियां भी कठिन परिश्रम करने के लिए प्रेरित होती हैं और वह भी अपने जीवन में सफलताएं एवं उपलब्धियां हासिल करने का प्रयास करती हैं। इसी क्रम में हम पत्रिका के इस अंक के माध्यम से आपका परिचय संस्थान के ऐसे ही एक पूर्वछात्र श्री जीत बिंद्रा जी से करा रहे हैं जिन्होंने बचपन में कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करते हुए भी जीवन की शीर्ष उपलब्धियां हासिल की हैं। अभी हाल ही में श्री जीत बिंद्रा की अंतस परिवार के साथ भेंटवार्ता हुई।

प्रस्तुत है भेंटवार्ता के प्रमुख अंश.....

अंतस परिवारः सर, कृपया अपने आरंभिक जीवन के बारे में कुछ बताइए?

जीत बिंद्राः मेरा जन्म 18 सितम्बर 1947 को वाराणसी में हुआ जिसे औपचारिक रूप से बनारस के नाम से जाना जाता है। मेरे पिता जी ने सैन्य इंजीनियर सेवाओं के अंतर्गत इलेक्ट्रिकल फोरमैन के रूप में अपनी सेवाएं दीं। देश के विभाजन के बाद उनकी तैनाती बनारस में रही। मेरे परिवार में मेरा एक बड़ा भाई, एक बड़ी बहन तथा एक छोटा भाई और एक छोटी बहन भी है। मेरा प्रारंभिक जीवन उत्तर प्रदेश में बीता। मेरे पिता जी का वेतन बहुत अधिक नहीं हुआ करता था जिसका मतलब यह था कि हमारा भोजन भी सादा ही हुआ करता था। सुबह के समय नाश्ते में प्रायः चाय अथवा दूध के साथ कुछ बिस्कुट, दोपहर के खाने में सामान्य रूप से चपाती के साथ गोभी, आलू या भिन्डी की सब्जी एवं रात के खाने में दाल और चपातियां। इस सबके बावजूद, मेरे माता-पिता ने शिक्षा की महत्ता पर ध्यान केन्द्रित रखा तथा हम सभी भाई एवं बहनों को श्रेष्ठ अध्ययन के लिए प्रोत्साहित किया। मैं अपने परिवार में एक ऐसा बच्चा था जिसने पढ़ाई में कोई दिलचस्पी नहीं दिखाई। हाँ... इसके विपरीत मैं बचपन में अपने मोहल्ले के बच्चों के साथ लड़ाई-झगड़ा किया करता था। मेरी हरकतों से तंग आकर, एक दिन मेरे पिता जी ने दंड स्वरूप मुझे लकड़ी की एक कोठरी में बंद कर दिया जहाँ ढेर सारे चूहे रहा करते थे। इस काल कोठरी में काफी समय तक बंद रहने के पश्चात, मैंने पिता जी से दरवाजा खोलने की विनती की। कोठरी से बाहर आने के बाद मुझे अहसास हुआ कि मुझे अपने माता-पिता की इच्छाओं का पालन करना चाहिए। इस प्रकार उस दिन के बाद से मैं एक अध्ययनशील (पढ़ाकू) बच्चा बन गया।

अंतस परिवारः सर, कृपया अपनी आरंभिक शिक्षा के बारे में कुछ बताइये?

जीत बिंद्राः मेरी एकमात्र शिक्षा इलाहाबाद शहर में हुई जिसे अब प्रयागराज के नाम से जाना जाता है। यहां पर मैंने पहली से छठी कक्षा तक की पढ़ाई कैंटोनमेन्ट जूनियर हाईस्कूल में की। यहां पर हम चटाई (जूट की चटाइ) पर बैठते थे तथा लिखने के लिए बांस की कलम का इस्तेमाल किया करते थे। मैंने इस स्कूल में अच्छी पढ़ाई की

जिसके फलस्वरूप मेरे माता-पिता ने सातवीं कक्षा में मेरा दाखिला इलाहाबाद के सिटी ए वी कॉलेज में करा दिया जहां मैंने नौवीं कक्षा तक की पढ़ाई पूरी की। उसी समय मेरे पिता जी का तबादला अल्मोड़ा जिले के रानीखेत में हो गया, जहां मेरा दाखिला रानीखेत के नेशनल हाई स्कूल में कराया गया लेकिन दाखिले के तुरंत बाद मुझे मालूम हुआ कि इस स्कूल में पढ़ाई जाने वाली पाठ्य-पुस्तकें उन पाठ्य-पुस्तकों से भिन्न थीं जो मैंने इलाहाबाद में नौवीं कक्षा में पढ़ीं थीं। उल्लेखनीय है कि उस समय उत्तर प्रदेश में हाई स्कूल की अर्हता प्राप्त करने के लिए नौवीं एवं दसवीं की कक्षाओं में शामिल विषयों की परीक्षा पास करनी होती थी। इस बदलाव के कारण मुझे पढ़ाई में कठिनाई आ रही थी। मेरी इस कठिनाई को दूर करने के लिए मेरे पिता जी ने रानीखेत स्थित जोशी परिवार से मुझे निजी ट्यूशन देने का अनुरोध किया ताकि मैं इन नई पाठ्य-पुस्तकों को समझ सकूं। उल्लेखनीय है कि इस घटना के कारण मेरे जीवन में असाधारण परिवर्तन आया।

जोशी परिवार ने मुझे अपने परिवार के सदस्य के रूप में अपनाया और पढ़ाई में मेरी खूब मदद की। परिवार में सबसे बड़े, जिन्हें हम ''बड़े मास्टर साहब'' कहकर बुलाया करते थे, ने मुझे गणित पढ़ाया तथा उनके दो बेटों ने मुझे अंग्रेजी एवं हिंदी विषय पढ़ाये। बड़े मास्टर साहब की आंखों की रोशनी बहुत कम उम्र में ही चली गई थी लेकिन उनके अंदर फोटोग्राफिक मेमोरी बरकरार थी। मैं फर्श पर बैठा रहता था और वह मुझे पृष्ठ संख्या 147 खोलने के लिए कहते थे। उन्हें पता होता था कि गणित का कौन सा प्रश्न उस पृष्ठ पर है। ऐसे प्रतिष्ठित विद्वान/अध्यापक से ऐसी शिक्षा प्राप्त करना, मेरे लिए वास्तव में एक उल्लेखनीय अनुभव था। जोशी परिवार के सदस्यों के मार्गदर्शन से मैंने अपना हाई स्कूल अच्छे अंकों के साथ उत्तीर्ण किया जिसके फलस्वरूप मुझे राष्ट्रीय स्तर की छात्रवृत्ति प्राप्त हुई। मैंने मिशन इंटर कॉलेज में पढ़ाई जारी रखी और राष्ट्रीय छात्रवृत्ति के साथ सन् 1964 में अपनी इंटरमीडिएट की परीक्षा पास की। मेरे जीवन की यह उपलब्धि बहुत विशिष्ट रही लेकिन मैं इस बात को कभी नहीं भूलूंगा की जोशी परिवार के सदस्यों ने मेरा जीवन बदलने के लिए क्या कुछ नहीं किया। मैं सदैव उनका ऋणी रहूंगा। यहीं से मेरी ''गुरु दक्षिणा'' का पहला अध्याय प्रारंभ होता है तथा आज मेरे पास जोशी परिवार का धन्यवाद ज्ञापित करने के लिए शब्द नहीं हैं।

अंतस परिवारः सर, आई आई टी कानपुर में आप कैसे आए और आपने अध्ययन के लिए आई आई टी कानपुर को ही क्यों चुना?

जीत बिंद्राः मैंने आई आई टी की प्रवेश परीक्षा दी। जब परिणाम आया तो मुझे आई आई टी में चुने जाने पर आश्चर्य हुआ। प्रवेश के लिए वरीयता भरते समय मैंने आई आई टी कानपुर को वरीयता दी क्योंकि

यह संस्थान हमारे घर से नज़दीक था और मेरे माता-पिता मुझसे मुलाकात करने के लिए आसानी से आ सकते थे। जब मैं कैंपस में इंटरव्यू देने के लिए आया तो मुझे बताया गया कि प्रवेश के लिए केवल सिविल अभियांत्रिकी में ही सीटें उपलब्ध हैं तथा रासायनिक अभियांत्रिकी में सीटें भर चुकीं हैं। मेरी रासायनिक अभियांत्रिकी पढ़ने में गहरी रुचि थी लेकिन मुझे बताया गया कि यदि मैं पहले तीन वर्षों में अच्छा करता हूं तो मुझे इसके बाद अपना अध्ययन विषय (ब्रांच) बदलने की अनुमति दी जा सकती है। मेरे सामने यह एक चुनौती थी जिसे मैंने अपनाया और इस प्रकार से आई आई टी कानपुर में अध्ययन के लिए प्रवेश ले लिया। डॉ0 सी.एन.आर. राव मेरे संकाय सलाहकार थे और उन्होंने मेरी सहायता करने में गहरी रुचि दिखाई। मुझे अच्छी तरह से याद है कि दूसरे सेमेस्टर में मुझे वित्तीय कठिनाइयों का सामना करना पड़ा था। डॉ0 राव ने मुझसे कड़ी मेहनत करने के लिए कहा। उन्होंने मुझसे कहा कि यदि मेरा सेमेस्टर प्रदर्शन सूचकांक (एसपीआई) 7.5 या उससे अधिक रहा तो वह प्रशासन से मुझे वित्तीय सहायता उपलब्ध कराने का अनुरोध करेंगे। एक बार फिर मैंने उनकी सलाह मानते हुए इस चुनौती को स्वीकार किया। अगले सेमेस्टर में मेरी (एसपीआई) 10.0 थी। डॉ0 राव ने अपना वादा पूरा किया। इस प्रकार मैं सफलतापूर्वक अपनी बी.टेक. की डिग्री पूरा करने की ओर अग्रसर हुआ। प्रदर्शन के आधार पर तीसरे वर्ष के पश्चात मुझे 'मेजर' चेंज करने का विकल्प दिया गया। विकल्प स्वीकार करते हुए मैंने रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग ज्वाइन कर लिया। आई आई टी कानपुर में अध्ययन करना मेरे जीवन में बदलाव का कारण बना।

अंतस परिवारः सर आपने उच्च अध्ययन के लिए किस संस्थान का चयन किया?

जीत बिंद्राः आई आई टी कानपुर ने इंजीनियरिंग शिक्षा में मुझे ठोस पृष्ठभूमि उपलब्ध कराई तथा एक रासायनिक अभियंता के तौर पर तैयार किया। अपने बाकी सहपाठियों की तरह मैंने भी मास्टर की पढ़ाई करने के लिए अमेरिका के कई विश्वविद्यालयों में आवेदन किया था। रासायनिक अभियांत्रिकी विभाग के प्रोफेसर डॉ0 वासुदेव मेरे मेंटर बन गये तथा कई विश्वविद्यालयों को मेरे लिए उन्होंने अनुशंसा पत्र लिखे। इनमें से मुझे कुछ विश्वविद्यालयों से प्रस्ताव प्राप्त हुए लेकिन डॉ0 वासुदेव ने मुझे सिएटल स्थित वाशिंगटन विश्वविद्यालय से प्रस्ताव स्वीकार करने की सलाह दी थी क्योंकि डॉ0 वासुदेव ने भी इसी विश्वविद्यालय से अपनी पीएचडी की थी। मैंने डॉ0 वासुदेव की सलाह मानी और कपड़ों से भरा एक छोटा बैग लिए आठ डालर के साथ 7 सितम्बर 1969 को सिएटल स्थित वाशिंगटन विश्वविद्यालय पहुंच गया। मैंने कड़ी मेहनत की और सन् 1970 में अपनी मास्टर डिग्री पूरी की। सौभाग्य से सन् 1971 में मेरी शादी भी हो गई थी तथा नई दुल्हन के साथ भारत लौटा। मैंने कुछ समय के लिए डा0 वासुदेव के मार्गदर्शन में फ़ाइबर ग्लास पिलकिंगटन के लिए काम किया जो उस समय इस कंपनी के तकनीकी प्रबंधक के रूप में पदोन्नत हो चुके थे। इसके बाद अमेरिका वापस लौटने का निर्णय लेने से पहले मैंने भारत स्थित कुछ अन्य कंपनियों में भी काम किया। मैं और मेरी पत्नी सिएटल वापस आ गये जहां पर मैंने अपनी पत्नी के माता-पिता के घर पर कुछ सप्ताह साथ बिताए। मैंने विश्वविद्यालय के प्लेसमेंट कार्यालय के माध्यम से रोजगार के लिए साक्षात्कार देने शुरू कर दिये। जल्द ही मुझे शेवरॉन रिसर्च कंपनी द्वारा नौकरी का प्रस्ताव दिया गया जिसे मैंने स्वीकार करते हुए सन् 1977 में एक रिसर्च इंजीनियर के रूप में कार्य करना आरंभ कर दिया। मैंने अगले 33 वर्षों तक इस कंपनी में कार्य किया जहां पर मैं कॉरपोरेट की सीढ़ियां चढ़ता चला गया और सौभाग्य से इस कंपनी के 'प्रेसीडेंट' ऑफ ग्लोबल मैन्यूफैक्चरिंग फॉर शेवरॉन के पद से सेवानिवृत्त हुआ हूं।

अंतस परिवारः सर, आप समाज को क्या संदेश देना चाहेंगे?

जीत बिंद्राः शेवरॉन ने समाज को वापस लौटाने में विश्वास किया। कंपनी ने कई परोपकारी संगठनों को दान देने का कार्य किया है। इस प्रेरणा ने मुझे अपनी 'गुरु दक्षिणा' यात्रा आरंभ करने का असाधारण अवसर प्रदान किया। मेरा एवं मेरी पत्नी का दृढ़ता से मानना है कि ईश्वर ने हमें अद्भुत जीवन दिया है। हम इस बात को भी जानते हैं कि ऐसे बहुत से जरूरतमंद लोग हैं जिनका जीवन हमारे द्वारा उपलब्ध कराई गई आर्थिक मदद से बन सकता है। यही हमारी दार्शनिकता का आधार है और इसी को ध्यान में रखते हुए मैं अपने मातृ संस्थान आई आई टी कानपुर एवं यूनिवर्सिटी ऑफ वाशिंगटन सिएटल की सेवा करता हूं। इस उस विनम्र शुरुआत को कभी नहीं भूल सकते जहां से हम आए हैं और ऐसे लोगों की मदद करने का हर संभव प्रयास करते हैं जो वास्तव में इसके पात्र अथवा हकदार हैं। साथ ही साथ मैं उन लोगों का सम्मान करने में दृढ़तापूर्वक विश्वास करता हूं जिन्होंने हमारे जीवन को किसी न किसी स्तर पर गइराई से प्रभावित किया। इन लोगों में हमारे अध्यापक, प्रोफेसर्स एवं हमारे माता-पिता की विशिष्ट भूमिका रही है। हमने जितना संभव हो सकता था उतना इन संस्थानों को वापस देने का प्रयास किया है।

मेरा मानना है कि यदि आप कठिन परिश्रम करते हैं और ईमानदारी तथा सदाचार के सर्वोच्च स्तर को बनाये रखते हैं और अच्छे मेंटर्स बनते हैं तो आप जीवन में कुछ भी हासिल कर सकते हैं। हालांकि जब आप एक बार सफल व्यक्ति बन जाते हैं तो आपको दूसरों की मदद करना बिल्कुल भी नहीं भूलना चाहिए। मेरे जीवन में अनेक उतार-चढ़ाव आए हैं लेकिन मेरे जीवन को सबसे अधिक प्रभावित मेरे माता-पिता, मेरे अध्यापक, प्रोफेसर्स तथा उनके द्वारा दी गई शिक्षा ने किया है जिसको मैं जिंदगी भर नहीं भूल पाऊंगा। मैं सदैव उनका ऋणी रहूंगा।

धन्यवाद!

साहित्य-यात्रा
अध्यापन के नये आयाम

नाटक कोपेनहागेन का मंचन

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर इसकी स्थापना के समय से ही शिक्षण एवं शोध की मौलिकता एवं नए प्रयोगों में अग्रणी एवं इसके लिए सुप्रसिद्ध रहा है। अपने 75 वर्षों के इतिहास में यहाँ पर स्थापित शिक्षण के तौर-तरीकों को देश के अन्य संस्थानों ने धीरे-धीरे अपनाया। संस्थान में नये क्षेत्रों पर आधारित पाठ्यक्रम विकसित कर नवीनतम ज्ञान स्नातक एवं परास्नातक छात्रों तक पहुंचाने का सतत प्रयत्न रहता है। इसके चलते हर दशक पश्चात संस्थान अपने सभी कोर्सों की समीक्षा करते हुए पाठ्यक्रम को नयी दिशा देता है। ऐसी पिछली समीक्षा सन् 2021 में पूरी हुई और इस पर आधारित नया पाठ्यक्रम 2022 से लागू किया गया।

नये पाठ्यक्रम में भौतिकी में दो की जगह चार कोर कोर्सेज बनाए गये जिनमें पूर्व कोर्सेज (i) यान्त्रिकी (ii) विद्युत चुम्बकीय सिद्धांतो के साथ-साथ नये कोर्स (iii) दोलन एवं तरंग तथा (iv) क्वांटम मैकेनिक्स भी शामिल किये गये। ये सभी कोर्स प्रथम वर्ष के छात्रों के लिए बनाए गये। यद्यपि सभी भौतिकी के कोर्स छात्रों को चुनौतीपूर्ण लगते हैं पर क्वांटम मैकेनिक्स का कोर्स विशेषतया चुनौतीपूर्ण है, क्योंकि जिन तथ्यों की व्याख्या करने के लिए क्वांटम सिद्धांत विकसित किये गए उन्हें आम दैनिक जीवन में नहीं देखा जाता। अतः छात्रों के लिए ये तथ्य एक नयी अद्भुत दुनिया की तरह दिखायी पड़ते है। साथ ही क्वांटम सिद्धांतों की अवधारणा क्लासिकल सिद्धांतों से बिलकुल अलग है जिससे छात्रों को उनको स्वीकार करने में कठिनाई होती है। अतः इस कोर्स को

पढ़ाने में यह आवश्यक हो जाता है कि एक ऐसा वातावरण छात्रों के इर्द-गिर्द उत्पन्न किया जाये जिससे वे इस निराले/अनोखे क्वांटम संसार का भाग बन सकें। ऐसा करने में व्याख्यानों के अतिरिक्त कुछ गतिविधियां छात्रों के साथ करना बहुत सहायक होता है। इस तरह के प्रयोग मेरे द्वारा 2022-23 तथा 2023-24 में किये गये। 2022-23 में आधे सेमेस्टर के एक्स्पोजर देने के बाद छात्रों द्वारा एक निबंध "Our world is quantum mechanical and classical mechanics is a very good approximation to it" लिखवाया गया तथा उनके द्वारा इसकी प्रस्तुति करायी गयी। अंत में इन निबंधो का संग्रह एक पुस्तक The Quantum world- my first understanding of it के रूप में इन छात्रों को भेंट किया गया। इस वर्ष 2023-24 में छात्रों के लिए एक नाटक "कोपेनहागेन" का मंचन किया गया, साथ ही इस नाटक को देखने के लिए न केवल भौतिकी के छात्र परंतु पूरे संस्थान को आमंत्रित किया गया। ऐसा करने के दो उद्देश्य थे : पहला उद्देश्य छात्रों में एक वातावरण पैदा करना जिसके बारे में ऊपर लिखा जा चुका है। दूसरा यह कि छात्रों में यह अनुभूति हो कि वे एक बौद्धिक वातावरण का हिस्सा हैं और जो वह सीख रहे है वह बहुत प्रासंगिक है। जैसा कि निम्नलिखित वर्णन से विदित होगा, कोपेनहागेन इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए एक उपयुक्त नाटक है।

क्वांटम सिद्धांतों के प्रमुख जनकों में से दो व्यक्ति नील्स बोह्र एवं वर्नर हाइज़ैनबर्ग रहे हैं। नील्स बोह्र ने सर्वप्रथम 1913 में हाइड्रोजन से निकलने वाले प्रकाश की व्याख्या के लिए कुछ क्वांटम सिद्धांत दिये थे। तत्पश्चात उनके द्वारा कोपेनहागेन (डेनमार्क की राजधानी) में सरकार के सहयोग से एक संस्थान खोला गया जिसका उद्देश क्वांटम सिद्धांतों को पूरी तरह समझना एवं विकसित करना था। इसके लिये उनके संस्थान में पूरे विश्व से नवयुवक आकर उनके साथ क्वांटम

सिद्धांतों पर शोध करते थे। इनमें से एक वर्नर हाइज़ैनबर्ग थे जो जर्मनी से 1924 में बोह्र के संस्थान आये। इसी के साथ आरंभ हुई बोह्र और हाइज़ैनबर्ग के बीच एक वैज्ञानिक साझेदारी जिसके परिणाम स्वरूप हाइज़ैनबर्ग ने क्वांटम थ्योरी का प्रथम निरूपण किया एवं दोनों ने मिलकर क्वांटम थ्योरी की कोपेनहागेन व्याख्या दी, जो कि अब तक प्रयोगों पर पूर्णतया खरी उतरती है। वैज्ञानिक साझेदारी के साथ-साथ बोह्र एवं हाइज़ैनबर्ग में एक पिता-पुत्र तुल्य संबंध भी बनता गया और हाइज़ैनबर्ग बोह्र के परिवार के एक सदस्य बन गए। 1927 में हाइज़ैनबर्ग जर्मनी में लीपज़िग विश्वविद्यालय में व्याख्याता नियुक्त हो गए परंतु बोह्र के साथ उनका मिलना-जुलना एवं वैज्ञानिक विचारों का आदान-प्रदान जारी रहा। परंतु यह सब 1939 में दूसरे विश्व युद्ध के शुरू होते ही बदल गया। युद्ध के दौरान जर्मनी ने डेनमार्क पर 1940 में कब्जा कर लिया। नाटक इसी पृष्ठभूमि में बोह्र और हाइज़ैनबर्ग की 1941 में हुई एक भेंट पर आधारित है।

हाइज़ैनबर्ग का 1941 में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहागेन जाना और वहाँ पर बोह्र से मिलना इतिहासकारों के बीच एक चर्चा का विषय रहा है। यह उत्सुकता इसलिए है क्योंकि उनके बीच हुई बातचीत के दौरान उनके बीच और कोई उपस्थित नहीं था या शायद बोह्र की पत्नी मार्गरेट वहाँ रही हों। कुछ इतिहासकारों का मानना है कि हाइज़ैनबर्ग बोह्र से परमाणु ऊर्जा का बम बनाने के लिए प्रयोग के बारे में बात करने आए थे, कुछ मानते हैं कि वे बोह्र को यह बताने आए थे कि जर्मनी परमाणु बम बनाने जा रहा है और कुछ यह मानते हैं कि संभवतः वे बोह्र से जानना चाहते थे कि मित्र राष्ट्र बम बनाने में कितने सक्षम हैं। हाइज़ैनबर्ग की ओर से बाद में यह बताया गया कि जर्मन वैज्ञानिक इन कोशिशों में लगे हुए हैं कि जर्मनी बम न बना पाये। लेकिन बोह्र ने अपने साथियों को यह बताया कि उन्हें ऐसा बिलकुल नहीं लगा था।

यह स्पष्ट है कि उस बैठक के बारे में केवल अटकलें लगायी जा सकती हैं और निश्चित तौर पर यह नहीं कहा जा सकता कि वहाँ क्या घटित हुआ। क्योंकि यह बैठक पिछली सदी के दो महान वैज्ञानिकों के बीच हुई थी और इसका संदर्भ दो विरोधियों जिनमें से एक नात्ज़ी पार्टी थी, के द्वारा परमाणु बम बनाने के बारे में था, इसके बारे में चर्चाएं होती रही हैं और होती रहेंगी। इन्हीं चर्चाओं की एक कड़ी कोपनहागेन नाटक भी है। यह नाटक माइकेल फ्रेन द्वारा लिखा गया है। इसका पहला मंचन रॉयल नेशनल थिएटर, लंदन में मई, 1998 को हुआ था। तत्पश्चात इसका कई और स्थानों पर और अनेक भाषाओं (भारत में अंग्रेजी में बंगलुरु में एवं मराठी में कोल्हापुर में) में मंचन हो चुका है। साथ ही इस पुस्तक पर आधारित एक टी०वी० फिल्म भी बनाई गयी जो कि यू.एस.ए. के पब्लिक ब्रॉडकास्टिंग सिस्टम पर प्रसारित हुई। सन् 1998 से कई बार इस नाटक को सर्वश्रेठ नाटक के लिए पुरस्कृत किया गया है।

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए कोर्स PHY114 के छात्रों के लिए कोपनहागेन नाटक के मंचन पर विचार कर छात्रों के ड्रामाटिक्स क्लब (फुर्सत मंडली), आई.आई.टी. कानपुर से इसके लिए संपर्क किया गया। मैं आभारी हूँ उनका कि वे इसका मंचन करने के लिए सहजता से तैयार हो गए और वे इसे हिंदी में करना चाहते थे। यहाँ पर राजभाषा प्रकोष्ठ एवं शिवानी सेंटर इस मंचन के सहभागी बने एवं प्रो० अर्क वर्मा ने अंग्रेजी में लिखे इस नाटक का हिंदी में अनुवाद करवाया। साथ ही इसके मंचन पर आने वाले खर्च के लिए भौतिकी विभाग, आई.आई.टी. कानपुर एवं एप्रोच सेल आई.आई.टी. कानपुर ने राशि प्रदान की। इस प्रकार 10 नवम्बर, 2023 को सायंकाल आई.आई.टी. के मुख्य ऑडिटोरियम में इस

नाटक का मंचन करा गया। मंचन के दौरान श्री अतुल तिवारी, जो कि एक प्रसिद्ध फिल्म लेखक एवं कलाकार हैं, मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे। मंचन से पहले संस्थान के निदेशक प्रो० एस० गणेश ने मंचन की भूमिका के बारे में बताया। तत्पश्चात श्री अतुल तिवारी ने उपस्थित दर्शकों को संबोधित करते हुए इस बात पर जोर दिया कि किस प्रकार विज्ञान और वैज्ञानिकों पर बने नाटक एवं चलचित्र समाज में वैज्ञानिक सोच एवं स्वभाव बढ़ाने में सहायक होते हैं। नाटक का निर्देशन गुरुदत्त शर्मा (210402) ने किया एवं इसमें भाविन कुमार सिंह (210269) ने नील्स बोह्र, सुष्मित डागर (211086) ने वर्नर हाइज़ेनबर्ग तथा लक्सिता महाजन (220581) ने मार्गरेट बोहर की भूमिका निभाई। नाटक के दर्शकों में PHY114 के छात्र, विभिन्न बैचों के स्तानक छात्र, परास्नातक छात्र एवं संस्थान के शिक्षकों एवं अन्य सदस्यों को मिलाकर 1000 से अधिक लोग थे तथा वे अंत तक इस मंचन को मंत्रमुग्ध होकर देखते रहे। यह उल्लेखनीय है कि आई. आई. टी. कानपुर में "कोपेनहागेन" की प्रस्तुति इस नाटक का हिंदी में पहला मंचन है।

संदर्भ :

i. Copenhagen, Michael Frayn (Anchor Books, 2000)
ii. "What Happened in Copenhagen?: A Physicist's View and the Playwright's Response, The Hudson Review, Vol 53, 182-191 (2000)

आभारः

- राजभाषा प्रकोष्ठ, आई.आई.टी. कानपुर
- शिवानी सेंटर, आई.आई.टी. कानपुर एवं इसके समन्वयक प्रो० अर्क वर्मा
- भौतिकी विभाग आई.आई.टी. कानपुर
- एप्रोच सेल आई.आई.टी. कानपुर
- ड्रामाटिक्स क्लब, आई.आई.टी. कानपुर एवं इसके समन्वयक गुरुदत्त शर्मा (210402) भाविन कुमार सिंह (210269) नितिश कुमार त्रिवेदी (210680) एवं सुष्मित डागर (211086)
- निदेशक प्रो० एस० गणेश आई.आई.टी. कानपुर
- अधिष्ठाता शैक्षणिक कार्य प्रोफेसर शलभ
- अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य स्व० प्रोफेसर समीर खांडेकर

समर्पणः

(i) स्व. प्रो० अमित दत्ता (भौतिकी विभाग, आई.आई.टी. कानपुर) जिन्होंने मेरी विज्ञान के इतिहास में रुचि देखते हुए मुझे कोपनहागेन पुस्तक, शिक्षक दिवस 2019 पर भेंट की।

(ii) स्व. प्रो० समीर खांडेकर जो शिक्षा में कला के उपयोग के समर्थक थे एवं इस नाटक के मंचन के लिए उन्होंने एप्रोचसेल के समन्वयक एवं अधिष्ठाता विद्यार्थी कार्य के रुप में मेरा उत्साहवर्धन किया।

–प्रोफेसर मनोज कुमार हरबोला
भौतिकी विभाग
आई.आई.टी. कानपुर

चाँद की ख्वाहिश: जीवन का नया रास्ता

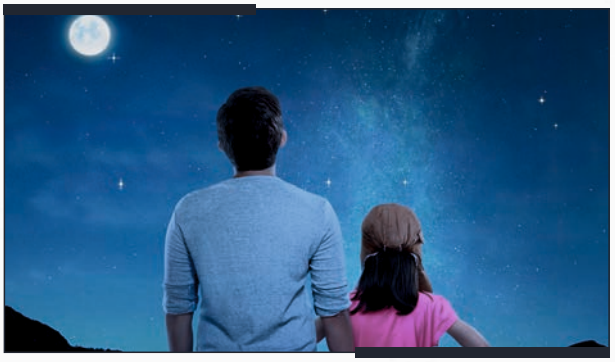

दिल ने चाहा था कभी, एक टुकड़ा चाँद का,
अंधेरों में कहीं खो गया, मीठा सा टुकड़ा प्यार का।

आसमान की बाहों में, चमकता है वो अकेला,
मेरी तन्हाईयों का साथी, वो चाँद बड़ा है अलबेला।

चाँद से बिछड़ा हुआ, पर दिल में है उसका प्यार,
उसकी चाँदनी में ही सही, मुझे मिला मेरा संसार।

पर तूने सिखाया है मुझे, अंधेरों में भी चमकना,
गमों की काली रात हो, फिर भी कभी ना हारना।

तेरी रोशनी में छुपा, एक जहाँ है सपनों का,
तेरी मुस्कान में बसी, जिन्दगी की हर खुशी।

तू है साथी हर रात का, तेरी बातों में है सुकून,
अब नहीं डरता मैं कभी, जीवन में किसी भी हार से।

अब उठ खड़ा हुआ हूँ मैं सदा, अपने सपनों के साथ,
चाँद की ख्वाहिश ने दिखाया, मुझको मेरा रास्ता।

है अब मेरी आँखों में चमक,मेरे दिल में है अब हर बात नई,
चाँद की ख्वाहिश ने ही सिखाया, जीने का नया रास्ता।

मंजिल पहुँच कर ही रुकेंगे, अब मेरे ये कदम,
चाँद की ख्वाहिश ने ही सिखाया, जीने का नया रास्ता।

- **अवनीश सिंह**
कंप्यूटर साइंस एंड टेक्नोलॉजी
आई आई टी कानपुर

उठ मुसाफिर

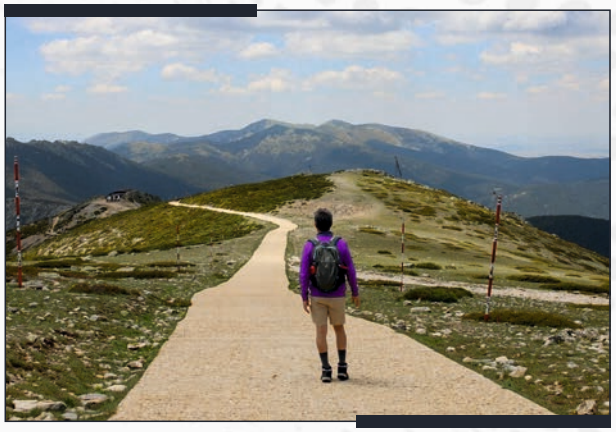

ये सफर है बाकी और तू सोया है
है उनींदा किन ख्वाबों में खोया है
बाकि है अभी काम तुझे जो करना है
उठ मुसाफिर उठ तुझे तो चलना है।

कैसे बंधू, कैसे परिजन
अरे रह अलग फिर कैसा बंधन
कैसी लाठी, कैसे साथी
कुछ पल का मिलना फिर बस यादें बाकी
छोड़ सहारे संगी साथी तुझे खुद राहों पर ढलना है
उठ मुसाफिर उठ तुझे तो चलना है।

कैसी पहाड़ी कैसी झाड़ी
तू अपने रास्तों का खुद माली
कैसा बिछोना कैसा सोना
वक्त कीमती क्यों है खोना
चल समय के साथ नहीं तो
हाथों को पीछे मलना है
उठ मुसाफिर उठ तुझे तो चलना है

कैसा सागर कैसा थार
जब मंजिल से तुझको प्यार
कैसी नदी और कैसे जंगल
बस राह के धोखे हैं तू बढ़ चल
'अनिल' ये संकट की आंधी है
जिसमें तुझको पलना है
उठ मुसाफिर उठ तुझे तो चलना है

- **मेजर अनिल कुमार (भारतीय सेना)**
231110037 (कंप्यूटर साइंस-इंजीनियरिंग)

चाँद को पाने की ख्वाहिश बदस्तूर जहन में होती है...

चाँद को पाने की ख्वाहिश बदस्तूर जहन में होती है,
उसको पाऊँ, उसकी चाँदनी में रंग जाऊँ ये तमन्ना हर पल में होती है

"चाँद की ख्वाहिश" करना बहुत आसान नहीं होता है परंतु आज जब कि भारत का चंद्रयान स्वयं चंद्रमा पर चहल-कदमी कर रहा है तो कुछ भी मुश्किल नहीं लगता। मेरे अनुसार इस शीर्षक के माध्यम से चाँद को अमूल्य तथा अगम्य माना गया है और चाँद की ख्वाहिश से मतलब किसी दुर्लभ वस्तु या ऐसी इच्छा से है जो कठिन परिश्रम के बाद भी पूरी न हो पा रही हो। जीवन में कई ऐसी ख्वाहिशें होती हैं जिनको पाने की इच्छा मन के कोने में दबी रहती है। यह बात मेरे लिए सत्य ही है, कभी लगता है कि एक दिन के लिए मैं अपने पैरों पर खड़ी हो समुद्र के तट पर भागूँ या फिर विशाल पर्वत की श्रृंखलाओं पर पर्वतारोहण करूँ, मगर इस मन को समझाकर वास्तविकता में जीना ही पड़ता है, ख्वाहिश तो बस बढ़ती ही जाती है, एक पूरी हो तो दूसरी तैयार खड़ी रहती है। मानव जीवन में जिसने एक लक्ष्य बना लिया है उसको पूर्ण करने का हौसला रखा है वह सदैव ही सफल होता है। इस बात को समझने के लिए मैं एक छोटी सी कहानी यहाँ सुनाना चाहती हूँ।

सुनक गाँव में एक किसान और उसकी पत्नी रहती थी। उसके पास जीवन यापन करने के लिए एक छोटा सा घर, खेत, एक गाय तथा एक जोड़ी बैल थे। किसान का जीवन आराम से चल रहा था परंतु उसके जीवन में एक ही कमी थी कि उसको कोई संतान नहीं थी। दोनों ईश्वर से हमेशा एक संतान के लिए प्रार्थना करते रहते थे, परंतु अपने कर्तव्यों का वहन करते हुए वे अपनी अर्जी ईश्वर के सामने पेश करते रहते। भगवान को उनकी भक्ति और कर्तव्य-निष्ठा अच्छी लगी और एक सुंदर पुत्र की प्राप्ति दोनों को जल्द ही हुई। पुत्र प्राप्ति की खुशी इतनी ज्यादा थी कि किसान ने पूरे गाँव वालों को दावत दी और यह कार्यक्रम पूरा एक माह तक चलता रहा। किसान और उसकी पत्नी ना तो पशुओं पर ध्यान दे रहे थे और ना ही अपनी फसल पर। अंततः फसल मुरझा गयी तथा पशु बीमार पड़ गए।

किसान उनकी यह हालत देख अत्यंत दुखी हुआ और दोबारा ईश्वर से प्रार्थना करने लगा कि मेरे बच्चे के अच्छे भरण-पोषण के लिए दया करें और अपनी कृपा-दृष्टि डालें। ईश्वर ने प्रथम भूल समझ उसकी फसल तथा पशुओं को पहले की भांति अच्छा कर दिया। किसान को लगा कि उसकी थोड़ी सी मेहनत से ही जब सब कुछ भली-भांति चल रहा है तो बच्चे के बड़े होने में ही अपना समय व्यतीत क्यूँ ना करूँ। किसान और उसकी पत्नी अब फिर से अन्य कर्तव्यों को भुला सिर्फ बेटे के साथ समय गुजारने लगे, पूरा साल गुजर गया गाँव में सबकी फसल अच्छी हुई परंतु किसान कि नहीं। उसने सोचा कि मैंने तो सब कुछ भली भांति-किया परंतु मेरी फसल क्यों नहीं अच्छी हुई और आज-कल तो मेरे पशु भी पहले की भांति स्वस्थ नहीं। ये गाय भी दूध नहीं दे रही। मैं अपने बेटे को कैसे अच्छी परवरिश दूँगा। किसान ने पुनः ईश्वर को पुकारा कि हे प्रभु जब संतान दी तो उसके अच्छे भरण-पोषण के लिए आजीविका को सही बनाये रखते। ईश्वर को बड़ा क्रोध आया और उन्होने किसान को उसकी भूल को स्मरण कराने की ठानी। ईश्वर एक वृद्ध व्यक्ति का वेश धारण करके किसान के दरवाजे पहुंचे। बोले "हे भद्र मानव मैं मार्ग भटक गया हूँ क्या आज रात यहाँ रुक सकता हूँ" किसान ने सहमति जताई। किसान और उसकी पत्नी ने उनको चरागाह में रुका दिया। वृद्ध व्यक्ति ने कुछ खाने को मांगा तो किसान ने कहा खाने के तो लाले पड़े हैं, कुछ भी नहीं है, एक सूखी रोटी और चटनी मिलेगी। वृद्ध व्यक्ति बोले मैं इससे ही संतुष्ट हो जाऊंगा। किसान को अपने पास बैठा कर राहगीर ने पूछा, तुम्हारे पशु इतने दुर्बल क्यों हैं और तुम इतने गरीब क्यों हो। क्या तुम्हारे पास खेत नहीं। किसान बोला, सब कुछ है परंतु जबसे मेरा पुत्र हुआ कुछ भी पहले की भांति नहीं रहा। वृद्ध व्यक्ति बोले एक काम करो जब पुत्र ही कारण है तो इसको स्वयं से अलग कर दो। महाराज कैसी बात कर रहे इतने जतन और मन्नतों से पाया है, इसको कैसे अलग करूँ। वृद्ध व्यक्ति बोला जब इसके प्रति अपने कर्तव्य नहीं भूल रहे तो अपने पशु और आजीविका चलाने के साधन के प्रति कर्तव्य क्यों भूल गए। किसान पूरी रात उनकी बात को सोचता रहा। अंततः उसको अपनी गलती का एहसास हुआ और उसने अगले ही दिन अपने पशुओं और फसल का ख्याल पहले की भांति रखना आरंभ कर दिया। एक महीने में ही उसकी मेहनत रंग लाई और सब पहले की भांति सहज हो गया।

हम चाँद की ख्वाहिश तो करते हैं परंतु मिल जाने पर उसको संरक्षित नहीं रख पाते और खो जाने पर उसका दोष औरों पर या भगवान पर थोप देते हैं। हम भी इस किसान के जैसे "चाँद की ख्वाहिश" करते हैं परंतु स्वयं कर्तव्यों को भूल अधिकारों का बखान करने लगते हैं। यदि सभी मनुष्य अपने-अपने कर्तव्यों का निर्वहन मेहनत के साथ करते रहे तो सबको ही उनका चाँद अवश्य मिलेगा और उनको जीवन में कठिनाइयों का सामना और संघर्ष कम करना पड़ेगा।

– रत्ना पाल
अधीक्षक, पृथ्वी विज्ञान विभाग
आई आई टी कानपुर

चाँद की ख्वाहिश

ये शीर्षक मात्र कुछ शब्दों से ही हमारे बचपन, युवावस्था व चंद्रयान तक को आंखों के समक्ष लाकर खड़ा कर देता है। एक शिशु के रूप में जब हम सब सर्वप्रथम प्रकृति की ओर आकृष्ट होते हैं तो चाँद सदैव ही उन प्रसंगों में होता है जिन्होंने हमें आकृष्ट किया है। बच्चे कभी चाँद को चंद्र खिलौना मान-कर तो कभी खीर का कटोरा समझ कर उसकी लालसा रखते हैं। दूसरी ओर हमारी माताएं जो बच्चों की समस्त अभिलाषाएं पूर्ण करने के लिए हमेशा ही प्रतिबद्ध रहती हैं, उन्हें चंदा मामा जो पुए पूर के पका कर खिलाएंगे तथा ताली बजा कर मनाएंगे ऐसी कहानियां सुनाकर बाल-मन को प्रसन्नता से ओत प्रोत कर देती हैं।

चाँद के प्रति आकर्षण मानव मन में सदा प्रत्येक अवस्था में विराजमान रहता है जिसे हम अपनी इच्छाओं के अनुरूप बदलते रहते हैं। जहां बाल-मन चाँद जैसा खिलौना, भूखा बालक-खीर का कटोरा, नवयुवक-चाँद सी महबूबा की अभिलाषा रखता है वहीं महिलाएं श्रद्धा वश शरद ऋतु के शोभा संपन्न चाँद के प्रकाश में खीर रखकर अमृतमयी खीर से स्वयं व परिवार के आरोग्य की कामना रखती हैं।

खगोल शास्त्र के लिए चाँद शोध का विषय है तो ज्योतिष शास्त्र के लिए ग्रह शांति का। इतना ही नहीं बल्कि हमारे विभिन्न धर्मों के तीज त्योहार भी चाँद पर आधारित होकर मन में उसकी ख्वाहिश बन के आ जाते हैं। फिर वो कभी ईद का चाँद होता है जिसके दीदार का सारी दुनिया बेसब्री से इंतजार करती है तो कभी करवा चौथ का चंद्रमा जिसके दर्शन से सुहागिन स्त्रियां स्वयं को सौभाग्यशाली मान अपने पति की लंबी आयु की मंगल कामना करती हैं। अतः जीवन की प्रत्येक अवस्था में हम चाँद की ओर विभिन्न ख्वाहिशों हेतु आकृष्ट होते हैं तथा होते रहेंगे।

हम सबको चाँद की ख्वाहिश है, पर मानव स्वभाव की स्वार्थपरता वश हम शायद ही कभी सामने वाले की अभिलाषाओं की तरफ ध्यान दे पाते हैं ठीक उसी प्रकार, उम्र के विभिन्न चरणों में चाँद की ख्वाहिश रखते हुए भी चाँद की अपनी स्वयं की ख्वाहिश के विषय में हम नहीं सोच पाते। हम ये तो कहते हैं कि ''चाँद को क्या मालूम चाहता है उसे कोई चकोर'' पर हमें भी कहां मालूम है कि चाँद चाहता क्या है? हम सभी उसकी ख्वाहिश रखते हैं तथा अपनी व चाँद दोनो की ही ख्वाहिशों को अपनी आवश्यकता के अनुसार बदलते रहते हैं।

चाँद की ख्वाहिश जो मेरी व्यक्तिगत कल्पना में आती है वो हो सकती है कि किस प्रकार विषम परिस्थितियों में भी अपनी आभा को बनाए रखना है। चाँद का वातावरण हर प्रकार से विषम परिस्थितियों से परिपूर्ण है, (जहां न वायु है न ही जल और तो और उसकी सतह पर भी गड्ढ़े हैं) फिर भी प्रतिकूल परिस्थितियों के बावजूद वह अपनी शीतल चाँदनी से आलोकित है। इतना ही नहीं प्रकृति के चक्रस्वरूप अपने पूर्ण रूप को खोता तो है पर नही खोता, तो ये उम्मीद कि मैं पुनः पूर्ण रूप में आऊंगा तथा इस प्रकार वह अपने खोए हुए स्वरूप को पाने की ख्वाहिश रखता है और पूर्ण भी करता है।

चाँद से हमें यह सीख मिलती है कि कैसे हमें विषम परिस्थितियों का डटकर सामना करना चाहिए और अगर जीवन की आपा-धापी में हम अपना कुछ खो भी देते हैं तो नही खोनी चाहिए ये ''उम्मीद'' कि हम पुनः वो सब कुछ प्राप्त कर सकते हैं।

तो मेरे व्यक्तिगत विचारों से चाँद की ख्वाहिश है ''विषम परिस्थितियों में भी अपने व्यवहार की शीतलता को बनाए रखना और जीवन के प्रति सब कुछ प्राप्त करने की उम्मीद को न खोना'' पर मेरे निज विचारों के साथ-साथ विचारणीय है कि क्या है ख्वाहिश....चाँद की? हो सकता है कि वो अपने इन काले दागों से भी अवमुक्त होना चाहता हो या सदैव अपने पूर्ण रूप में ही चमकना चाहता हो, जिसके लिए उसे अनरवत प्रयास-शील रहना पड़ता है। नित अपने अस्तित्व को बचाने का संघर्ष करना पड़ता है जबकि दूसरों को वह सहज ही प्राप्त हैं।

या ऐसा भी हो सकता है कि वह दिन व रात्रि दोनो में ही अपनी कमनीय कांति को समान रूप से बिखेरना चाहता हो। या फिर पृथ्वी से मासूम बच्चों की पुकार पर यहां आकर उन बच्चों को गोद में लेकर झूमना चाहता हो। कभी तो उसके मन में भी कलक सी उठती होगी कि जिस मनोहर कांति के लिए वह संपूर्ण विश्व में जाना जाता है वह आभा उसकी स्वयं की हो। जैसे मैं (चाँद) पृथ्वी

की परिक्रमा करती हूं वैसे काश कोई हो, जिसका कि आधार मैं स्वयं बनूं।

ऐसी तमाम इच्छाएं चाँद के मन में कभी तो आती होंगी हम भले ही उसे मोटा झिंगोला पहना कर या उसका मुंह टेढ़ा बता कर हँस लें पर उसकी इच्छाएं इनसे इतर भी हो सकती हैं, अपनी कल्पना से मैंने चाँद की कुछ संभावित ख्वाहिशों को निम्नांकित पंक्तियों में पिरोने का प्रयास किया है–

चाँद तेरी ख्वाहिश है क्या, जरा मुझे बतलाओ न
कभी तो बैठो साथ मेरे, कुछ अपनी बात बताओ न
दादी नानी सदा सुनाती, तेरी मुझे कहानी हैं
तुम आओ अब पास मेरे, कुछ अपने मन की गाओ न
दूर से दिखते हो शीतल, क्या अंतर्मन भी शीतल है
हमको दिखते सुंदर हो, क्या सचमुच इतने सुंदर हो
दिखते हो तुम सदा शांत
क्या होते नही कभी विक्रांत
नीरव लंबी रातों में, क्या होता नही मन अशांत
कोई तो साथी चाहा होगा
कभी तो मन कराहा होगा
कुछ तो दिल ने चाहा होगा
कभी तो टीस उठी होगी
अपनी निज आभा से दमकने की
सदा घूमते रहे तुम, अपनी दीदी (पृथ्वी) के चहुं ओर
कभी तो मन में आया होगा करे कोई मेरी मनुहार।
चाँद तेरी ख्वाहिश है क्या, जरा मुझे बतलाओ न।
आओ बैठो पास मेरे कुछ अपने मन की गाओ न।।

–दिव्या त्रिपाठी
परिसरवासी

चैत्र- चैत्र माह से हिंदू नव वर्ष की शुरुआत होती है। चैत्र माह की पूर्णिमा के दिन चंद्रमा चित्रा नक्षत्र में होता है। इसी कारण से इस माह का नाम चैत्र पड़ा। इस माह में चंद्र ग्रह मेष राशि और अश्विनी नक्षत्र में प्रवेश करते हैं। इस महीने से ही वसंत ऋतु का समापन और ग्रीष्म ऋतु का आगमन होता है। चैत्र माह में भगवान विष्णु ने अपना प्रथम मत्स्य अवतार लिया था। माना जाता है कि धरती के पहले मनुष्य मनु को भगवान विष्णु ने प्रलय के दौरान बचाया था और उन्हीं से पृथ्वी पर जीवन की शुरुआत हुई। इसी कारण से चैत्र का महीना महत्वपूर्ण माना जाता है।
नव संवत यानी कि हिंदू नव वर्ष प्रारंभ होने के साथ ही प्रकृति में भी बदलाव दिखने लगता है। वहीं, माना जाता है कि मां दुर्गा ने पहली बार अपने नव दुर्गा रूप के दर्शन समस्त संसार को इसी माह में दिए थे। इसलिए इस महीने में मां दुर्गा के नौ रूपों की पूजा की जाती है।

बड़े पिताजी

वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना न हो मुमकिन, उसे एक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा.....

आज मैं एक बार फिर वहीं खड़ी थी। कुछ भी वैसा नहीं था जैसा बीस साल पहले छोड़कर गयी थी। सब बदल गया था, या यूं कहें बेजार हो गया था। कोठरी उजाड़ हो चुकी थी, कुआँ सूख चुका था, चबूतरा टूट कर भूमिगत हो गया था, जगह-जगह जंगली घास उगी हुई थी, और घर की हालत भी कुछ खास कहने लायक न थी, आधा गिर चुका था.... जो बचा था वो किसी त्रासदी के जीते स्मारक का आभाष करा रहा था। ऐसा ही होता है ना जब अच्छे से अच्छे घर को छोड़ दिया जाए। पहले वो मकान बन जाता है फिर धीरे-धीरे खंडहर। मानो वो भी उसमें रहने वालों की चहल-पहल से महकता हो, उनसे जीवन पाता हो, और उनके जाते ही मुरझा जाता हो, और फिर बीस साल तो बहुत होते हैं ना किसी के लौटने की आस छोड़ने के लिए। इतने बरस पहले ही देखा था बाबा के इस घर को, जिस दिन आखरी बार देखा था उस दिन तो बहुत चहल-पहल थी, जानें कौन-कौन सी बुआ आई थीं भतीजे के मुंडन में, कुछ को बस हम नहीं जानते थे और कुछ को तो कोई नहीं जनता था। कोई मायके की तलाश में आया था, कोई नेग की आस में.... इस घर ने किसी का हिसाब नहीं लिया, बस द्वार खोला और बड़े से दालान में सबका स्वागत किया। पता नहीं कहाँ-कहाँ से चाचा-फूफा आए थे, पूरे रौब के साथ लड्डू पानी माँगते, हलवा पूरी में अभी कितनी देर और लगेगी ऐसा पूछने से पहले। ये घर मुस्कुराता हुआ उन्हें भी बाहें फैलाए स्वीकार करता। छोटे बच्चे कड़ी धूप में उछल-कूद करते तो घर अपने चौकीदार नीम को आदेश देता अपने पत्तों की छांव फैलाने के लिए। चाचा-फूफा पेड़ के नीचे कुर्सी डाल कर कितनी भी जगह घेर लें, पेड़ हाथ बढ़ाकर बच्चों को आशीर्वाद देता हुआ छांव की छतरी तान देता, और हम बड़े बच्चों के पाँव जब जलते धूप में नंगे पाँव खाना परोसने के लिए आते-जाते हुए, तो ये घर अपनी ठंडी मिट्टी के फर्श से मई की चुभती धूप में मरहम जैसा लगता। अंदर औरतें घूँघट में अपने को लता मंगेशकर समझती हुई उर्दू फारसी गीत गातीं, तो इस घर की मोटी ऊंची दीवारें सुरों को दोगुना कर गीत में सुंदर गुंजन भर कर लौटा देतीं।

घर में इतनी चहल पहल होती है तो चौकीदार चौकन्ना हो जाता है, मतलब बाबा कोठरी के मालिक, घर के मुखिया.... जो हाथ पीछे बांधे, कुर्ता-धोती पहने शान से घर का मुआयना करते और घर का हर कोना मानो उनको सलामी देता। बड़ी-माँ और माँ को फुर्सत नहीं थी अपनी बनारसी चंदेरी साड़ी का बखान करने से और पिताजी को चैन नहीं था नाते रिशतेदारों से अपने बच्चों का गुणगान करने से... इन सब से दूर अपनी दुनिया में मगन बड़ी तल्लीनता से हर एक

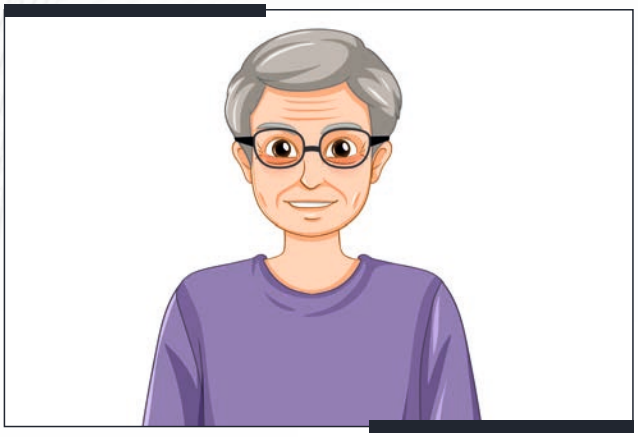

काम को खुद अपने हाथों से पूरा करने की जुगत में अगर कोई लगा था तो वो थे बड़े पिताजी। कभी कुछ सामान उठाते, कभी किसी आगंतुक का स्वागत करते, कभी पसीना पोछते, तो कभी राशन का सामान ताले से ऐसे खोलकर निकालते मानो पिछले जनम में कुबेर के खजांची वही रहे हों। बाबा छत थे तो पिताजी नींव, हमारे शान से उठे घर की...और बड़े पिताजी इन दो समानांतर रेखाओं को जोड़ने वाली मजबूत दीवार, जिनके बिना इन दोनों का मिलना संभव न था। चार बच्चों का पिता, हेडमास्टर या खेतिहर-किसान, क्या पहचान बताएं बड़े-पिताजी की। मेरे जहन में तो कुछ और ही यादें छपी हैं-नहर किनारे सभी बच्चों को हाथ पकड़ कर और एक को गोदी में लिए हुए शादी के न्योते से सही सलामत-वन पीस में वापस लाना, शाम को लौटने पर अपनी कावासाकी-बजाज मोटर साइकिल की डिक्की में हम बच्चों के लिए ढ़ेर सारी खुशियाँ यानि लीची छुपा के लाना, डिक्की पहले कौन खोलेगा इसका फैसला करने के लिए कुएं से मोटर साइकिल तक हमारी रेस लगवाना, गर्मी की शाम को हम बच्चे चैन से सो पाएँ इसके लिए उस बड़े से हवेलीनुमा घर की छत को पानी से धोना, पेड़ों से लाल मुंह वाला बंदर भगाकर आम तोड़ना, अच्छे वाले आम देवता-बुआ की नजरों से छुपाकर घर के सबसे छोटे बच्चे के लिए बचाकर रखना, हर दूसरे दिन बड़ी माँ से फरमाइश कर हम बच्चों के लिए पकवान बनवाना और इसी बहाने अपना स्वाद लेना, बाबा को चाय मिली या नहीं-घर आते ही पूछना और बाबा के डांटने पर हम बच्चों को धीरे-से खिसक लेने का इशारा करना। पैसों से मितव्ययी पर दिल के अमीर और हौसलों से बुलंद.....

आज बीस साल बाद ये घर बड़े-पिताजी के साथ गुजारे बचपन की इतनी स्मृतियाँ लिए खड़ा है, कि आँसू से भीगी आँखों के आगे सब कुछ धुंधला है पर मन के पटल पर हर तस्वीर रील जैसी नाचती हुई साफ भाग रही है। कहतें हैं, जीवन अपना चक्र पूरा कर फिर वहीं लौटा देता है, जहाँ से शुरू हुए थे। सही कहतें हैं, समय का पहिया आज उसी घर पे ले आया था जहाँ आखिरी बार भाई (बड़े-पिताजी के बेटे) के मुंडन की खुशियाँ थीं, और आज उनका मृत शरीर जन्मभूमि के अंतिम स्पर्श के लिए रखा था। चेहरे से लगता था मानो अभी बोल पड़ेंगे, कुछ तो नहीं हुआ। मन रो रहा था, उन्हें देखूँ या उनका वो स्टडी रूम, जिसकी खिड़की बाबा की कोठरी में खुलती थी, क्योंकि उस समय बाबा और बच्चों के रिश्ते में प्राइवेसी की दीवार नहीं होती थी। वो टूटी हुई धूल खाती खिड़की मुझे समय में पीछे ले जा रही थी। बार-बार जब वो कमरा, उनकी टेबल, कुर्सी-किताबें सब सलीके से सजे हुये होते थे और इतना साफ होता था कि बाबा अपने भोजन का आसन भी वहीं जमा लेते थे। लगता था अभी बड़े-पिताजी, बोल पड़ेंगे रसोई सजाने को और अभी बाबा अपना स्थान ग्रहण कर लेंगे। दिख रहे थे वो मुझे छत पर पानी डालते हुए, बाबा से गंभीर मुद्रा में हाल-चाल पूछते हुए, और हमारे लिए आम तोड़ते हुए। पहले बाबा गए और आज कुछ ही वक्त बाद बड़े-पिताजी मानो उनके श्रवण कुमार का जीवन बस उनकी सेवा तक के लिए ही था, जैसे उनके बिना इस संसार में उनका कोई औचित्य ही न हो।

पीछे कुछ छोड़ गए तो पिताजी के ऊपर ढेर सारी जिम्मेदारियाँ, खट्टी-मीठी, कही-अनकही स्मृतियों की पाती और मेरे लिए? मेरे लिए कोने में खड़ी जंग लगी कावासाकी बजाज की टूटी हुई अधखुली डिक्की से झाँकती यादों की लीची के पुराने छिलके...."वो अफसाना जिसे अंजाम तक लाना न हो मुमकिन, उसे एक खूबसूरत मोड़ देकर छोड़ना अच्छा" शायद यही किया उन्होने भी। मृत्यु समय ही कहाँ देती है किसी को कुछ भी समेटने का, बिना अलविदा कहने का मौका दिए एक अंजान मोड़ पर छोड़ जाती है।

– ज्योति मिश्रा
पी एच डी
बी एस बी ई

वैशाख- वैशाख हिंदू वर्ष का दूसरा महीना होता है। वैशाख के महीने को अत्यंत पावन माना जाता है। यह महीना ब्रह्मा और भगवान विष्णु को समर्पित है।
शास्त्रों और धर्म-ग्रंथों के अनुसार, वैशाख के महीने में पाप कर्मों से मुक्ति पाने के लिए स्नान-दान को पुण्यकारी माना जाता है। धर्म-कर्म के लिहाज से भी यह माह बहुत ही श्रेष्ठ और उत्तम माना गया है। ऐसी मान्यता है कि वैशाख के महीने में भगवान विष्णु के साथ ही भगवान शिव और ब्रह्मा जी यानी त्रिदेव की पूजा हर कार्य में तीन गुना अधिक शुभ फल प्राप्त होता है। त्रिदेवों की कृपा से जीवन में आने वाली कठिनाइयों से मुक्ति मिलती है। जीवन में सुख समृद्धि बनी रहती है और व्यक्ति को मनचाहे फल की प्राप्ति होती है। बैसाखी का त्योहार वैशाख के महीने में मनाया जाता है. वैशाख महीने तक रबी की फसल पक जाती हैं और उनकी अच्छी पैदावार के लिए इस दिन अनाज की पूजा कर, प्रभु को धन्यवाद किया जाता है।

इंटरनेट में हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के प्रमुख कदम...

ऍथनोलॉग (www.ethnologue.com)(2023) के डेटाबेस अनुसार बोलने वालो की संख्या के अनुसार दुनिया की शीर्ष 30 भाषाओ में 8 भाषाएँ भारत की आती हैं (हिंदी, बंगाली, मराठी, तेलुगु, तमिल, उर्दू, गुजराती और भोजपुरी)। जिसमें शीर्ष से हिंदी (34.5 करोड़) चौथे नंबर पर आती है! लेकिन इंटरनेट पर हिंदी कंटेंट से देखे तो हिंदी का 39वां स्थान (w3techs.com 2023 के अनुसार) है और अगर हम कंटेंट के प्रतिशत को देखे तो इंटरनेट में अंग्रेजी के 53% कंटेंट है जबकि हिंदी कंटेंट का प्रतिशत 0.1% है जो कि एक बड़ा अंतर है ।

गूगल ने 2006 में संभावना व्यक्त की थी कि आने वाले 10 वर्षों में तीन भाषाओं (जिसमें मंदारिन, अंग्रेजी और हिंदी) के कंटेंट का इंटरनेट में प्रभुत्व होगा अर्थात मंदारिन और अंग्रेजी के बाद हिंदी तीसरे नंबर की इंटरनेट की भाषा होगी। गूगल की इस संभावना को व्यक्त किये हुए कई साल बीत गए और इंटरनेट पर हिंदी के कंटेंट की प्रचुरता अभी भी काफी कम देखने को मिलती है।

इन सब बातों को मद्देनजर रखते हए भारत सरकार ने हिंदी और अन्य भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए कई उपाय किये हैं जो निम्नानुसार हैं –

भारत सरकार के प्रमुख कदम

- **राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन : भाषिणी (https://bhashini.gov.in/)**

BHASHINI का अर्थ BHASa INterface for India यानि भारत के लिए भाषा इंटरफेस है।
2021 में 'राष्ट्रीय भाषा अनुवाद मिशन' या 'भाषिणी' का ऐलान किया है। इस मिशन का उद्देश्य है भाषा की बाधाओं को पार करना और भाषा से जुड़े लोगों, संस्थानों, और नागरिकों के बीच एक सहज और उपयोगकर्ता-मित्रता तंत्र बनाना। इसके जरिए, नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग करके डिजिटल समावेश और सशक्तिकरण को बढ़ावा देना है। यह मिशन भारतीय भाषाओं में इंटरनेट और डिजिटल सेवाओं तक पहुंच को सुगम बनाने और सामग्री को बढ़ाने का काम कर रहा है।

इस मिशन के माध्यम से, भारत सरकार ने एक सार्वजनिक डिजिटल प्लेटफॉर्म बनाने का प्रयास किया है, जिसमें आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और नेचुरल लैंग्वेज प्रोसेसिंग (NLP) का उपयोग होगा। इससे भारतीय भाषाओं का अनुवाद आसान हो जाएगा। मिशन भाषिणी के तहत मुख्य उपायों में शामिल हैं मशीन सहायता प्राप्त अनुवाद (MT), ऑटोमेटिक स्पीच रिकग्निशन (ASR), टेक्स्ट टू स्पीच सिस्टम (TTS), ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकॉग्निशन (OCR), स्पीच टू स्पीच ट्रांसलेशन (S2S), और भारतीय भाषाओं में IT टूल्स और समाधान। इन पहलों के माध्यम से, भारतीय भाषाओं के लोग इंटरनेट पर सहजता से स्वीकार्य कर सकेंगे और डिजिटल सेवाओं का लाभ उठा सकेंगे।

- **भाषा दान (Bhasha Daan) https://bhashini.gov.in/bhashadaan/en/home**

'भाषा दान' भाषिणी परियोजना का दूसरा अंग है, जिसका उद्देश्य सरकार को कई भारतीय भाषाओं के लिए भाषा इनपुट की क्राउटसोर्सिंग करना है। इस परियोजना के तहत, लोग अपनी भाषा के सीधे अनुवाद में योगदान देने के लिए चार विभिन्न तरीकों का उपयोग कर सकते हैं: सुनो इंडिया, बोलो इंडिया, लिखो इंडिया, और देखो इंडिया।

इसका मतलब है कि लोग आपस में भाषा इनपुट को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न तरीकों से सहयोग कर सकते हैं, जिससे विभिन्न भारतीय भाषाओं के सही और सुधारित अनुवादों की सामग्री मिलती है।

- **हिंदी/यूएन (Hindi@UN)** परियोजना

2018 में 'हिंदी/UN' परियोजना शुरू हुई थी, जिसका उद्देश्य था हिंदी को संयुक्त राष्ट्र में प्रमोट करना और दुनिया भर में हिंदी बोलने वालों को ज्यादा से ज्यादा सहायता पहुंचाना। इसके लिए भारत ने 8 लाख डॉलर (62 करोड़ रुपये) का योगदान किया।

संयुक्त राष्ट्र से जुड़ी खबरें हिंदी में निम्नलिखित प्लेटफार्मों के माध्यम से हिंदी में प्रसारित की जाती हैं।

यूएन न्यूज की वेबसाइट -https://news.un.org/hi/
ट्विटर हैंडल-https://twitter.com/UNinHindi
इंस्टाग्राम हैंडल-
https://www.instagram.com/unitednationshindi/
यूएन फेसबुक हिंदी पेज-
https://www.facebook.com/UnitedNationsHindi/
साप्ताहिक यूएन न्यूज-हिंदी ऑडियो बुलेटिन
https://soundcloud.com/un&news&hindi

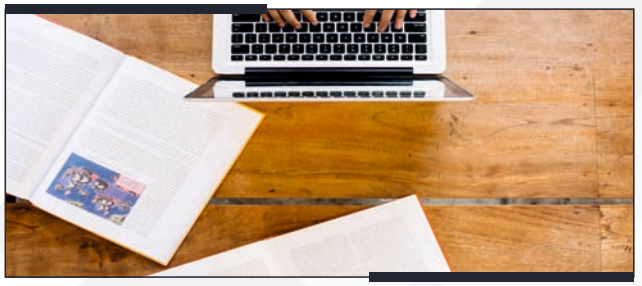

- **Digital India Campaign -**

Digital India अभियान एक महत्वपूर्ण पहल है जिसका मकसद है भारत को डिजिटल तरीके से बदलना और सभी नागरिकों को इंटरनेट की सुविधाओं तक पहुंचाना।

- **E-Governance Services**

सरकार ने अपनी विभिन्न सेवाओं को इंटरनेट के माध्यम से पहुंचाने के लिए विभिन्न वेब पोर्टल और मोबाइल ऐप्स विकसित किए हैं, जिन्हें विभागों और जनता के बीच जुड़ने के लिए उपयोग किया जा सकता है।

- **Language Localization**

सरकार ने ऐसे औद्योगिक सेक्टरों का समर्थन किया है जो भाषा संबंधित सामग्री का विकास करते हैं, जैसे कि भाषा संबंधित सॉफ्टवेयर और अप्लीकेशन।

ये ऐसे कुछ कदम हैं, जो भारत सरकार ने भारतीय भाषाओं के प्रति अपने समर्थन के रूप में उठाए हैं। ये समर्थन इंटरनेट पर हिंदी और अन्य भाषाओं की प्रवृत्ति और सुधार के लिए महत्वपूर्ण हैं।

स्रोत–

https://w3techs.com/technologies/overview/content_language

https://timesofindia.indiatimes.com/business/india&business/google&predicts&india&will&be&largest&net&mkt/articleshow/1549720-cms

https://www.bhaskar.com/national/news/un&general&assembly&hindi&language&resolution&multilingualism&129921162-html

-विवेक कुमार यादव
सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी
पी के केलकर पुस्तकालय

ज्येष्ठ- ज्येष्ठ हिंदी कैलेंडर का तीसरा महीना होता है। हिंदी पंचांग के मुताबिक ज्येष्ठ के महीने को तीसरा महीना माना जाता है। बता दें इस महीने में जहां सूर्य का प्रकोप काफी बढ़ जाता है। वहीं इस महीने में सूर्य देव और वरुण देव की पूजा करने का खास लाभ मिलता है। शास्त्रों में ज्येष्ठ मास का काफी अधिक महत्व है। क्योंकि इन माह में सबसे बड़े दिन होते हैं।

आषाढ़- आषाढ़ मास हिंदी कैलेंडर का चौथा महीना होता है। आषाढ़ के महीने को भगवान विष्णु का महीना कहा जाता है। माना जाता है कि इस महीने में भगवान विष्णु की पूजा-अर्चना करने से पुण्य फलों की प्राप्ति होती है। पुराणों के अनुसार आषाढ़ माह से ही भगवान विष्णु योगनिद्रा में चले जाते हैं। इस कारण से अगले 4 महीनों तक मांगलिक कार्यों पर रोक लग जाती है। आषाढ़ माह में ही गुरु पूर्णिमा का व्रत मनाया जाता है। इसके अलावा इस महीने में भगवान शिव की पूजा को भी काफी महत्वपूर्ण माना गया है।

चाँद की ख्वाहिश

सब की तरह चाँद को छूने और पाने की ख्वाहिश है मेरी,
क्यूंकि बचपन से आज तक तुझे देख कर ही दिल बहलाया है मैंने,
पर ख्वाहिशें भी कहीं चलती हैं क्या कभी किसी की सोच से,
बदलती और मरती रहती हैं जमाने की बंदिशों से।

हाथ जब बढ़ाउंगी मैं,
खाली हाथ अब न रह जाउंगी मैं,
समय अब वो चला गया है,
इंसान तो अब चाँद पे भी पहुँच गया है,
चन्द्रमा की धरती पर तिरंगा अब हमारा लहरा रहा है,
बरसों की मेहनत के बाद चंद्रयान हमारा दुनिया में नाम कमा रहा है।

बचपन में आप हमारे मामा थे,
जवानी में माशूका का चेहरा बन गए,
पहले तो आपको सिर्फ लोरी में सुनते थे हम,
आज आपकी जमीन तक पहुँच गए हैं हम,
बहुत दिनों बाद पहुँच पाए हम,
क्यूंकि कभी न घबराये हम,
स्वागत करो हमारा,
देखो मथुरा-काशी से आये हैं हम,
बता दो दुनिया वालों को कि भारत से आये हैं हम,
अपने साथ तिरंगा निशानी के तौर पे लाये हैं हम।

आज फिर से दिखा वही चाँद,
फिर से वही ख्वाहिशें जागी हैं,
हमने भी दिल से चाँदरात में,
इनके पूरे होने की दुआ मांगी है।

- छवि श्रीवास्तव
कनिष्ठ सहायक
विद्युत अभियांत्रिकी विभाग
आई आई टी कानपुर

ओ चाँद

तुम्हारी बिखरी चाँदनी,
प्रेमियों के मिलन और
सुहागनों का सुहाग प्रतीक।

शंकर के भाल की शोभा,
यशोदा की थाली में आना,
खगोल-शास्त्र के मुखिया।

इतनी उपलब्धियां समेटे भी
तुम्हारा मुस्कुराना
मन को बड़ा लुभाता है।

हमने एक उड़न खटोला,
तुम्हारी सौंधी मिट्टी की खुशबू
महसूस करने भेजा है।

आशा है, आप हमें उपहार देंगे।

माँ की लोरी का साथ,
हम सब याद करते हैं।

चन्दा मामा,
हमेशा चमकते और
मुस्कुराते रहना।

धरतीवासी

- श्रीमती चंद्रेश गुप्ता
परिसरवासी

मैं हूँ कविता, संगीत नहीं

मैं हूँ कविता संगीत नहीं
सुर बंधन मेरी रीत नहीं
लय से मेरी कोई बात नहीं
है ताल की ढाल भी साथ नहीं

हर बात कहूँ सीधी कठोर
उन्मुक्त विचारों की मैं डोर
एक नहीं अनेक हूँ मैं
ढलते हैं मेरे रूप कई
मैं हूँ कविता संगीत नहीं
सुर बंधन मेरी रीत नहीं

वीभत्स रूप अपनाकर मैंने
घृणा भाव का भार सहा
जो मंज़र जैसा दिखता है
उसको वैसा पुरजोर कहा
जब रणभूमि में जाऊँ मैं
सबका उत्साह बढ़ाऊँ मैं
हर घमण्ड को चकनाचूर करूं

सोते विचार जगाऊँ मैं
मन की तो मैं हर बात कहूँ
मन बहलाना मेरा काम नहीं
मैं हूँ कविता संगीत नहीं
सुर बंधन मेरी रीत नहीं

रौद्र रूप अपनाकर मैंने
सबका मान बचाया है
भक्ति की शक्ति को मैंने
जनमानस तक पहुंचाया है
कुंठित रिवाज को तोड़ा है
सत्ता का रुख भी मोड़ा है
शब्दों का भी श्रृंगार किया
प्रेमी के दिल को जोड़ा है
मैं आज भी हूँ मैं कल भी हूँ
बीता कल हूँ पर इतिहास नहीं
मैं हूँ कविता संगीत नहीं
सुर बंधन मेरी रीत नहीं

हर कलम की धार बढ़ा दूँ मैं
कागज़ को ढाल बना दूँ मैं
कभी कहके बात हंसा दूँ मैं
कभी अश्रु भी छलका दूँ मैं
निरीह को भी सबल करूं
ज्ञान की जोत जलाऊँ मैं
राष्ट्र का मान बढ़ाऊँ मैं
सच की कडवाहट कम कर दूँ
इसमें मेरी कोई जीत नहीं
मैं हूँ कविता संगीत नहीं
सुर बंधन मेरी रीत नहीं

- ध्रुवम पाण्डेय
20104277
पीएचडी, विद्युत अभियांत्रिकी

श्रावण या सावन- श्रावण हिंदी कैलेंडर का 5वां महीना होता है। हिंदू धर्म में इस महीने को बहुत पवित्र माना जाता है, क्योंकि ये माह भगवान शिव को प्रिय होता है। ये मध्य जुलाई में शुरू होता है और मध्य अगस्त तक चलता है।

भाद्रपद- भाद्रपद माह को भादो के नाम से भी जाना जाता है। भाद्र का अर्थ है- कल्याण देने वाला। भाद्रपद का अर्थ है- भद्र परिणाम देने वाले व्रतों का महीना। यह महीना लोगों को व्रत, उपवास, नियम तथा निष्ठा का पालन एवं भगवान श्रीकृष्ण की पूजा के लिए उत्तम माना जाता है। ऐसा इसलिए क्योंकि इसी माह में श्रीकृष्ण का जन्म हुआ था। कृष्ण जन्माष्टमी इसी महीने मनाया जाता है।

अश्विन- आश्विन माह हिंदू कैलेंडर का 7वां महीना है। आश्विन माह में पितरों की पूजा के लिए समर्पित पितृ पक्ष पूरे कृष्ण पक्ष में होता है। ये 15 दिन पितृ दोष मुक्ति और पितरों की तृप्ति के लिए होते हैं। उसके बाद शारदीय नवरात्रि का शुभारंभ होता है। पितरों की पूजा के बाद मां दुर्गा के नौ स्वरूपों की पूजा का उत्सव नवरात्रि कलश स्थापना के साथ प्रारंभ होती है। इसमें विजयादशमी यानि दशहरा, रावण दहन, दुर्गा पूजा, दुर्गा विसर्जन होता है। आश्विन माह में जितिया, शरद पूर्णिमा जैसे महत्वपूर्ण व्रत और पर्व होते हैं।

कार्तिक- कार्तिक माह हिंदू धर्म का 8वां महीना होता है। कार्तिक माह तप और व्रत का माह है। इस माह में भगवान की भक्ति और पूजा अर्चना करने से मनुष्य की सारी इच्छाएं पूर्ण होती हैं। पुराणों के अनुसार इस मास में भगवान विष्णु नारायण रूप में जल में निवास करते हैं। इसलिए कार्तिक कृष्ण प्रतिपदा से लेकर कार्तिक पूर्णिमा तक नियमित सूर्योदय से पहले नदी या तालाब में स्नान से अक्षय पुण्य की प्राप्ति होती है। शास्त्रों के अनुसार जो मनुष्य कार्तिक मास में प्रतिदिन गीता का पाठ करता है उसे अनंत पुण्यों की प्राप्ति होती है।

प्रयत्न

यूँ अस्त्र त्याग कर,
क्यूँ अर्जुन जैसे खड़े हो?
किस द्वन्द-प्रतिद्वन्द की उलझन में
स्वयं को बिसरे, यूँ अड़े हो?
अब कोई तुम्हें कह,
पार्थ न पुकारेगा
आशा निराशा के चक्र से,
कोई स्वजन जन न निकालेगा,
भीतर ही बैठा हूँ मैं,
जिसे ढूंढ़ते हो युद्ध-प्रागंण में
मंद-मंद मुस्कुराता हूँ,
ग्वालों संग गौ-चारण में
सुनो ध्वनि मधुर बंशी की
समझो हर एक नाद को
रहो तत्पर हे वीर,
प्रतिपल संग्राम को
धीरज के साथ लो निर्णय,
विनम्र हो परिणाम सहो
यदि हार है ही सुनिश्चित,
प्रयत्न से न हारो तुम।।
हे कौन्तेय! यूँ विगल हो
मेरी ओर मत निहारो तुम
क्योंकि
इस कलि-काल में स्वतंत्र तुम
मैं न विराट स्वरूप दिखलाऊँगा
हर बाधा से तुम्हें निकालने
न चक्र-सुदर्शन घुमाऊँगा
तेरे धीरज का चीर
तेरे ही निज हांथ है
उसे हरता दुःशासन भी
बैठा तेरे निज माथ है
करो सहायता स्वयं की
धीरज से, विवेक से
बढ़ते जाओ निज पथ पे
न हो संवेदित, निज परिवेश से
मातृ-पितृ ऋण का रखो मान
स्वकर्म को बिसराओ मत
यदि हार है ही सुनिश्चित
प्रयत्न से न हारो तुम।।

समर्पित उन सभी को,
जो हार मान लेते हैं।

- **शुचि त्रिपाठी**
पी एच डी
विद्युत अभियांत्रिकी

—◆◆◆—

गलत चाँद की यात्रा

यह मनुष्य जाति के लिए बड़े ही दुर्भाग्य की बात है कि चाँद तक पहुंचने में हम सक्षम हैं लेकिन अपने ही आंतरिक सत्य तक हमारी कोई पहुंच नहीं।

मनुष्य थोड़ा अजीब है, वह चन्द्रमा और मंगल तक पहुंचता है, वह हिमालय की ऊंचाइयों तक जाता है, वह महासागरों की गहराइयों को भी छूता है लेकिन केवल एक चीज है जिसे वह कभी नहीं आजमाताः अपने आंतरिक अस्तित्व की खोज। मनुष्य चन्द्रमा पर तो उतर गया है लेकिन मनुष्य अभी तक अपने अस्तित्व में नहीं उतर पाया है।

चाँद पर उतरना सिर्फ एक एस्केप है, वो वास्तविक गंतव्य से पलायन है। शायद आदमी अंदर नहीं जाना चाहता, क्योंकि वह बहुत डरा हुआ है। वह अच्छा महसूस करने के लिए कुछ अन्य मार्गों को प्रतिस्थापित करता है, दूसरे आयामों से सब्स्टीट्यूट करता है ताकि खुद को कह सके कि मैं पहुंचा, बेशक गलत ही पहुंचा पर कहीं तो पहुंचा। अन्यथा खुद को बहुत दीन और दोषी महसूस करना पड़ेगा।

वो एक पहाड़ पर चढ़ना शुरू करता है और उसको अच्छा महसूस होता है, लेकिन सबसे बड़ी ऊँचाई तो आदमी के भीतर है और अभी तक चढ़ी नहीं गई है। आदमी प्रशांत की गहराई में गोते लगाना शुरू करता है, लेकिन सबसे बड़ा प्रशान्त तो उसके भीतर है, जो एकदम अप्रयुक्त और अज्ञात है। ऐसे ही तुम चाँद पर जाने लगते हो, कैसी मूर्खता है! तुम चन्द्रमा पर जाने में अपनी ऊर्जा बर्बाद कर रहे हो और असली चन्द्रमा तो तुम्हारे भीतर है – क्योंकि असली रोशनी तुम्हारे भीतर है।

जब तक आदमी अपने अंदर स्थापित सत्य से सामना ना कर ले, वो गलत दिशाओं में जायेगा ही जायेगा।

इसलिए बुद्धिमान व्यक्ति सबसे पहले अपने भीतर जाएगा, कहीं और जाने से पहले वह अपने अस्तित्व में जायेगा। केवल जब आदमी स्वयं को जान लेता है तभी वह कहीं और जा सकता है। तब वह जहां भी जाएगा वह अपने चारो ओर एक आनंद, एक शांति, एक मौन और एक उत्सव लेकर जाएगा, और जब तुम्हारे अंदर वो उत्सव होगा, तो तुम उसे बाहरी दुनिया में नहीं तलाशोगे।

मैं कौन हूँ? इस बात का भी उत्तर ठीक-ठीक नहीं दिया जा सकता लेकिन चाँद तारों की हम बात करते हैं, चाँद तारों की हम खोज करते हैं।

- **विनय बलवान**
एम टेक
पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम

—◆◆◆—

मधुकर मेरे उपवन के

ए मधुकर उपवन के मेरे, गीत सुनाओ तो।
झंकृत कर मन-मंदिर को नृत्य दिखाओ तो।।

फूल खिले हैं, छाई है हरियाली चारों ओर,
मगन हो रहे मन ही मन, काग, पपीहे, मोर
प्यार करो, श्रृंगार करो, ठुमक भी जाओ तो।
ए मधुकर उपवन के मेरे, गीत सुनाओ तो।

बूँदे सावन की पत्तों पर जैसे खिली हुई हों,
बिछड़ी हुई कुमुदनी जाकर ताल मिली हो,
स्वर लहरी की ऊँची, तानें लहराओ तो।
ए मधुकर उपवन के मेरे, गीत सुनाओ तो।

ऊँच-ऊँचे सपनों की ऊँची-ऊँची सौगातें,
मैं सहेजकर रख लेता हूँ तेरी मेरी बातें,
मेरे आँगन टोली अपनी, लेकर आओ तो।
ए मधुकर उपवन के मेरे, गीत सुनाओ तो।

—राजेश कुमार उपाध्याय
ई-मास्टर प्रोग्राम
सस्टेनेबल कंस्ट्रक्शन प्रैक्टिसेस एंड प्रोजेक्ट मैनेजमेंट

मार्गशीर्ष- मार्गशीर्ष माह हिंदी कैलेंडर का 9वां महीना होता है। इस महीने को अगहन भी कहा जाता है। वैदिक पंचांग के अनुसार प्रत्येक वर्ष कार्तिक की पूर्णिमा तिथि समाप्त होने के बाद मार्गशीर्ष का महीना शुरु हो जाता है। जिस प्रकार कार्तिक भगवान नारायण का प्रिय माह होता है उसी प्रकार से मार्गशीर्ष का यह महीना भगवान श्री कृष्ण को समर्पित होता है। इस महीने जो भी भक्त श्री कृष्ण की पूजा-अर्चना करते हैं। उनका नाम जप करते हैं, स्नान-दान करते हैं और उनका चिंतन करते हैं, उन पर सदैव मुरलीधर कृष्ण की कृपा रहती है। उन भक्तों को जीवन के सारे भौतिक सुखों की प्राप्ति होती है।

समय

समय का विचित्र खेल होता है,
वर्तमान में व्यक्ति भूत और भविष्य को जीता है।

अतीत के आघातों को सहता है,
भविष्य के सपनों को बुनता है,
और वर्तमान से मुकरता है।

अतीत की काली छाया से,
भविष्य के कल्पित भयों से,
वर्तमान घबराया रहता है।

सुख के क्षणों में व्यक्ति मद में होता है,
सुखद अनुभवों में आत्मविस्मृत रहता है,
अज्ञानवश तब भी वर्तमान कहाँ जीता है।

वर्तमान में यदि वर्तमान को ही जीता है,
सुख-दुख के क्षणों में संयम नहीं खोता है,
तो कहिए, भूत और भविष्य कहाँ होता है।

समय का विचित्र खेल होता है,
वर्तमान में व्यक्ति भूत और भविष्य को जीता है।

—रंगोली अवस्थी
सहायक पुस्तकालय सूचना अधिकारी
पी के केलकर पुस्तकालय

पौष– पौष हिंदू धर्म का 10वां महीना होता है। पौष मास की पूर्णिमा पर चंद्रमा पुष्य नक्षत्र में वास करता है इसलिए इस महीने को पौष का महीना कहा जाता है। धार्मिक शास्त्रों की मानें तो इस महीने अच्छी सेहत, सम्मान और वैभव की प्राप्ति के लिए सूर्य देव की पूजा करने का विधान है।

उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है

उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है।
क्या कभी सोचा है कि जो चाँद तुम्हारी
ख्वाहिश है, उस चाँद की भी
कुछ ख्वाहिश है।

जो मांग रहे हो तुम नभ से, और
जान रहे हो तुम कब से, उसकी
भी कोई फरमाइश है।
उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है।
दिन का ढलना, उसका उठना, और
उस अम्बर का मन भरना,
चलना, थकना पर ना रुकना...
ये तो भली अजमाईश है
उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है।

देखा करता एकटक पल भर
या लगा-लगा हरदम टक-टक,
सम्मोहित हो सुबह ओ शाम पर
पर उसमें भी अभी गुंजाइश है
उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है।

चाहत उसकी बस है इतनी
सीपी में भरी स्वाती-जल सी,
वो मोती बनकर बह निकले
गर कोई बस इतना कह दे
हाँ, उस चाँद की भी कुछ ख्वाहिश है।

–डॉ. सन्तोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु'
बी एस बी ई

—◆◆◆—

धैर्य

धैर्य-बहुत कुछ ठीक कर देता है।
इस भागती-दौड़ती जिंदगी में
इक जरूरी ठहराव भर देता है।
जब सब कुछ उलझा-उलझा लगता है
डोर का वो छोर खीचकर अलग कर देता है
धैर्य-बहुत कुछ ठीक कर देता है।

कई बार ऐसा लगता है
जीवन ठगा सा लगता है
अपने औरों से लगते हैं
पंख पैरों से लगते हैं
उड़ाने थम सी जाती हैं
निगाहें जम सी जाती हैं
तब इक गरमाहट का बहाव सब ठीक कर देता है।
धैर्य-बहुत कुछ ठीक कर देता है।

जब भी लगे अभी कुछ नहीं बचा,
न चलते-न रुकते कहीं कुछ नहीं रखा,
न ये है ना वो है, ना जिसका भी जो है।
ना आगे, ना पीछे, ना ऊपर ना नीचे
ना सीखा ना जाना ना आके जा पाना
कुछ भी ना पाना ना तट ना मुहाना,
तब भी वो कर्म-के-बल पाप्र भर देता है।
धैर्य-बहुत कुछ ठीक कर देता है।

–डॉ. सन्तोष कुमार मिश्र 'केशवेन्दु'
बी एस बी ई

—◆◆◆—

माघ- माघ हिंदी कैलेंडर का 11वां महीना होता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इस महीने को अत्यंत पवित्र माना जाता है। माघ का महीना पवित्र नदी में स्नान, दान आदि के लिए अत्यंत शुभ माना गया है। माघ महीने में ढेर सारे धार्मिक पर्व आते हैं।

जलता जंगल

देख रविमुख पर धूम्र अनल का,
समझा मैं कारण इस कोलाहल का।

जानने में अब ना कोई कठिनाई थी,
यह दावानल मानव ने ही लगाई थी।

ज्यों-ज्यों पेड़ आग की आवट में आ रहे थे,
त्या-त्यों वे काल के गाल में समा रहे थे।

आकाश तक फैली थी लपटों की तपन,
किंतु जंगल की मौत पर मौन था गगन।

लेकिन उसका ना कोई कुसूर था,
बरसने वाला सावन अभी दूर था।

दूर-दूर तक तबाही का ही मंज़र दिखाई दिया,
तभी आकाशवाणी सा एक स्वर सुनाई दिया।

देखा आस-पास, एक परछाईंक भी न डोल रही थी,
ये उन शहीद पेड़ों की आत्माएं बोल रहीं थी।

करुण क्रन्दन भरे स्वर में बोलीं,
"राख बने हम, खेलकर आग से होली।"

"वसंत ने यह वन अभिनव रंगो से सजाया था,
डाल-डाल पर कुसुम कलियों को बिछाया था।"

"सराबोर थीं हवांए कलियों की महक से,
गूंजी थी फिजांए, चिड़ियों की चहक से।"

"एक इंसान ने आकर ऐसे प्रहार किए,
उसकी होली ने सारे रंग उतार दिए।"

"यहां उसके स्वार्थ के तीर इस कदर चल गए,
कि नए अंकुर फूटने से पहले ही जल गए।"

"क्या उसे कोई चिंता भी नहीं सताएगी,
हमें जिंदा जलाकर उसे नींद कैसे आ जाएगी।"

"लेकिन इंसान अपने अहंकार में इतना फूल जाता है,
कि वो अपनी सारी भावनाएं भूल जाता है।"

"गिर–गिर कर वो इतना गिर जाता है,
हमारी चिता पर वो अपना घर बनाता है।"

"हम ही देते सबको हवा, फल और छाया हैं,
किन्तु हमारे देहांत पर रोने कोई न आया है।"

"चिरनिद्रा में हमें सुलाने वालों के हृदय तो सो रहे हैं,
इसीलिए हम खुद ही अपनी चिता पर रो रहे हैं।"

"प्रकृति को ये जुल्म, अब और न सहने को दे,
कुछ पल ही सही, खुद को इंसान रहने तो दे।"

– अभिनव वर्मा
बी एस-एम एस
अर्थशास्त्र

अपॉर्चुनिटी स्कूल आई.आई.टी. कानपुर... एक स्कूल ऐसा भी...

भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर की स्थापना के समय से ही प्राध्यापकों से जुड़े हुए सेवकों के लिए भी रहने की व्यवस्था की गई थी। इन मकानों में रहने वाले, बच्चों को पढ़ाने के प्रति बहुत सजग नहीं थे और जो थे भी, उनके पास सुविधाएं नहीं थीं। आई आई टी कानपुर के प्राध्यापक और उनके परिवार के सदस्य चाहते तो कुछ भी न करते किन्तु उच्च मानवीय संवेदनाओं से अभिप्रेरित प्राध्यापकों ने तय किया कि ज्ञान के आलोक से किसी को अछूता न रहने देंगे। उसके उपरान्त 1966-67 में अपॉर्चुनिटी स्कूल की परिकल्पना ने साकार रूप धारण किया। सर विलियम (प्रथम अध्यक्ष) के संरक्षण में 13 बच्चों से प्रारम्भ अपॉर्चुनिटी स्कूल इस विशेष वर्ग के लिए वरदान साबित हुआ। साल दर साल बच्चों की संख्या बढ़ती चली गई। श्री राम शरण श्रीवास्तव ने प्रधानाचार्य के रूप में इस विद्यालय के संचालन का दारोमदार अपने कंधों पर लिया। विभिन्न कठिनाइयां आड़े आईं किन्तु वे कभी घबराए नहीं, अपितु तमाम सहायक अध्यापक भी इस पुण्य-कार्य में बराबर के सहयोगी रहे जिसके कारण ही यह विद्यालय तमाम उपलब्धियों के साथ-साथ वर्ष 2016 में अपनी स्वर्ण जयंती मना सका।

अपॉर्चुनिटी स्कूल समाज के आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के लिए एक वटवृक्ष की तरह है जिसकी छाया में आई आई टी से जुड़े आस-पास के गांव जैसे नानकारी, बारासिरोही, लोधर तथा आई आई टी के अंदर सर्वेंट क्वार्टर्स में रहने वाले बच्चे पल्लवित होकर अपना परचम लहरा रहे हैं। यहां पर न सिर्फ शिक्षा बल्कि बच्चों के सर्वांगीण विकास पर ध्यान दिया जाता है। सन् 1985 के समय तो स्कूल बिल्कुल डे बोर्डिंग की तरह था। बच्चे पढ़ाई के बाद शाम को पुनः स्कूल जाते थे जहां उनको दूध के साथ फल दिए जाते थे फिर बाद में क्रिकेट और फुटबॉल जैसे खेलों को प्रशिक्षण दिया जाता था तथा रोजगार परक शिक्षा जैसे सिलाई का भी प्रशिक्षण दिया जाता था।

सन् 1986 से पहले यह विद्यालय प्राथमिक विद्यालय ही था। इन बच्चों की पढ़ाई प्राथमिक स्तर तक ही सीमित न रहने दी जाये, इन्हें आगे भी पढ़ाया जाये, इस कारण कक्षा 6 प्रारम्भ की गई। यह बच्चे जब कक्षा 8 में पहुंचे तब समस्या आ खड़ी हुई बोर्ड परीक्षा की। यह इलाहाबाद बोर्ड द्वारा कक्षा 8 की बोर्ड परीक्षाओं का दौर था। विद्यालय को मान्यता प्राप्त नहीं थी। फलतः बच्चों के परीक्षा फॉर्म किसी न किसी विद्यालय से व्यक्तिगत रूप से भरने पड़ते थे। प्रबंधन समिति के तत्कालीन अध्यक्ष, प्रो0 हरीश वर्मा की कड़ी मेहनत के बाद, सन् 2014 में स्कूल को कक्षा 8 तक मान्यता प्राप्त हुई।

अब विद्यालय में बच्चों की लगातार बढ़ती हुई संख्या को देखते हुए प्रबंधन समिति की तत्कालीन अध्यक्षा, डॉ0 प्रभा शर्मा ने विद्यालय को रिहायशी घरों से निकालकर केन्द्रीय विद्यालय के एक ब्लॉक में प्रतिस्थापित करने में अहम योगदान दिया।

इतने वर्षों बाद भी अपॉर्चुनिटी स्कूल कामयाब रूप से अपने उद्देश्य को पूरा कर रहा है तो सिर्फ आई आई टी कानपुर के पूर्व छात्रों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों के सहयोग से। अभी हाल में प्रो0 हरीश वर्मा के प्रयासों के कारण अपॉर्चुनिटी स्कूल के अध्यापकों का मानदेय एक सम्मान जनक स्तर तक पहुंचा। बालक-बालिकाओं को किताबें तथा कॉपियां निःशुल्क प्रदान की जाने लगीं। प्रतिदिन बच्चों को लइया चना, तहरी, मटर की चाट जैसा अल्पाहार भी दिया जाता है। पुस्तकालय का दायरा बढ़ाया गया। BOSS प्रोजेक्ट के तहत प्रतिवर्ष योग्य विद्यार्थियों को मेरिट कम मीन्स के आधार पर आगे की पढ़ाई सुलभ कराने का दायित्व विद्यालय ने ग्रहण किया। इसके अंतर्गत 14 विद्यार्थी उच्च कक्षाओं में पढ़ रहे हैं।

डॉ0 चंद्रलेखा सिंह के अत्यंत उदार हृदय के कारण स्कूल को एक भव्य इमारत मिली है जिसकी भव्यता देखते ही बनती है। यहां पर सूरज की रोशनी से भरपूर हवादार कक्षाओं के साथ ही बच्चों के खेलने के लिए एक बड़ा सा मैदान है। प्रो0 हरीश वर्मा एवं प्रो0 समीर खांडेकर द्वारा स्थापित ''विज्ञानालय'' विज्ञान प्रयोगशाला का वैभव हमें अपॉर्चुनिटी स्कूल के बेहतर भविष्य का संकेत देता है। हमारे वर्तमान अध्यक्ष, प्रो0 सुदीप भट्टाचार्जी तो विज्ञान लैब की तरह कम्प्यूटर लैब भी बनवाने का प्रयास कर रहे हैं। अभी वर्तमान में बच्चों के लिए प्रत्येक शनिवार आई आई टी कानपुर के योग प्रशिक्षक योग करवाते हैं तथा इसके साथ ही शनिवार को नृत्य, संगीत और पेंटिंग की शिक्षा योग्य शिक्षकों द्वारा दी जाती है। शनिवार को ही सामाजिक विज्ञान क्लब होता है जिसमें बच्चों को बताया जाता है कि वर्तमान समय में बढ़ते प्रदूषण को कैसे कम किया जा सकता है। इसके अलावा बच्चों को प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी भी करवाई जाती है।

हमारे विद्यालय के पूर्व छात्र विभिन्न भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थानों में प्रोजेक्ट में, लैब में या ऑफिस में कार्यरत मिल जाएंगे। इसके अलावा ओएनजीसी, राष्ट्रपति भवन एवं कई प्राइवेट कंपनियों में भी हमारे पूर्व छात्र अपने दायित्वों को पूरी जिम्मेदारी के साथ निभाते हुए मिल जायेंगे। कुछ ने स्वयं के कार्य जैसे फर्नीचर बनाना और बाइक रिपेयरिंग आदि शुरू करके अच्छा मुकाम हासिल कर लिया है।

अपॉर्चुनिटी स्कूल विगत 56 वर्षों से अपने अथक प्रयासों से सफलता के पथ पर अग्रसर आज सन् 2024 में पहुंच गया है। इस लम्बी अवधि में विद्यालय ने प्राकृतिक आपदाओं का सामना भी किया किन्तु अपने शिक्षण कार्य को बाधित नहीं होने दिया। कोविड-19 जैसी वैश्विक प्राकृतिक बीमारी के चलते भी शिक्षण कार्य अवरूद्ध नहीं हुआ। ऐसी आपदा के समय विद्यालय ने ऑनलाइन कक्षाओं का संचालन शुरू करके छात्र/छात्राओं के अध्ययन को निरन्तर जारी रखा। हमारा विद्यालय प्रतिवर्ष विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करता है। कुछ प्रतियोगिताएं आंतरिक स्तर पर छात्र/छात्राओं में प्रतिस्पर्धा उत्पन्न करने के उद्देश्य से भी आयोजित की जाती हैं। अगर अपॉर्चुनिटी स्कूल को इसी तरह से आई आई टी कानपुर के पूर्व छात्रों, प्राध्यापकों एवं कर्मचारियों का सहयोग मिलता रहा तो अवश्य ही अपॉर्चुनिटी स्कूल के बच्चे, एक दिन विश्व पटल पर अपना नाम लिखेंगे। हमारे बच्चे नवोदय विद्यालय, एचबीटीयू, पॉलीटेक्निक, अज़ीम प्रेमजी विश्वविद्यालय आदि विद्यालयों में अध्ययन कर रहे हैं। हौसलों की कोई कमी नहीं है। इनको बस कुछ मार्गदर्शन और अवसरों की आवश्यकता है।

– साभार
अपॉर्चुनिटी स्कूल

रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र: ग्रामीण विकास की एक नई पहल

रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र ग्रामीण विकास के क्षेत्र में अग्रसर आई आई टी कानपुर का एक प्रोजेक्ट है जिसमें पिछले दो वर्षों से बच्चों की शिक्षा, युवाओं के रोजगार और किसानों के विकास के लिए अनेक महत्वपूर्ण प्रयास किए जा रहे हैं। संस्थान ने अपनी सामाजिक जिम्मेदारी का दायित्व एक नई सोच के साथ प्रारम्भ किया जिसमें तकनीकी और विज्ञान का लाभ ग्रामीण भारत को मिल सके और उच्च शिक्षण संस्थान के मेधावी युवा गाँव से रूबरू हो सकें। सैकड़ों आईआईटियन्स ने रोजी शिक्षा केंद्र के साथ जुड़कर जो प्रयास किए उसने थोड़े ही समय में ग्रामीणों का भरोसा जीत लिया। केंद्र के द्वारा कई महत्वपूर्ण योजनाएँ शुरू की गई हैं, जिसमें अनेक संस्थाओं से सहयोग और तमाम प्रयासों का अभिसरण करते हुये कार्य किए गए हैं।

केंद्र की स्थापना स्वर्गीय डॉ0 रंजीत सिंह के द्वारा दिये गए अनुदान से नवम्बर 2021 में उनकी पत्नी मार्था कैरिनों ने की थी। डॉ0 रंजीत सिंह एक अद्भुत सोच और व्यक्तित्व वाले व्यक्ति थे और ग्रामीणों के विकास में सोचते रहे। वह संस्थान के प्रथम बैच के पूर्व छात्र थे और मेटलर्जी (धातु विज्ञान) में बी टेक करके डॉक्ट्रेट के लिए MIT US गए। अपने शोध कार्य से निकली कृत्रिम हीरे (क्यूबिक जिरकोनिया) बनाने की विधि को उन्होने 70 के दशक में व्यावसायिक बाजार मे उतारा। यह कृत्रिम हीरा इतना प्राकृतिक लगता था कि पूरी दुनिया में उसकी धूम मच गई और उसे अमेरिकन डायमंड के नाम से जाना जाने लगा। डॉ0 रंजीत सिंह के अनुसार वह बढ़ते हुये कृत्रिम हीरे के बाजार में सबसे अग्रणी थे और एक समय में विश्व व्यापार का 50 प्रतिशत शेयर उनके पास था। सत्तर के दशक में किसी एशियन के द्वारा पाई गई यह सफलता बहुत ही अभूतपूर्व थी और उनके नाम के हॉलीवुड शो भी चले। किन्तु सफलता के चरम पर बैठे रंजीत को याद आता था यमुना किनारे का वो गाँव जहां वो बड़े हुये थे। अरसन बांगर गाँव आज भी विकास के पायदान पर इतना नीचे खड़ा है कि बच्चों को हाईस्कूल करने कि लिए भी बाहर जाना पड़ता है और सभी नौजवान काम की तलाश मे गाँव से पलायन कर जाते हैं। अमेरिका मे बैठे रंजीत को यह दिख रहा था कि शिक्षा और हुनर के अभाव में, अरसन जैसे ना जाने कितने ही गाँव, विकास की दौड़ मे बहुत पीछे छूट जाएंगे। आई आई टी कानपुर के तत्कालीन निदेशक प्रो0 अभय करंदीकर के अमेरिका दौरे पर हुई मुलाकात मे रंजीत जी ने अपने विकसित गाँव के विचार रखे और एक प्रोजेक्ट की शुरुआत करने पेशकश की।

प्रो0 संदीप संगल और टीम उसी समय उन्नत भारत अभियान के

तहत, जो कि शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार की योजना है, कुछ गाँव गोद लेकर विद्यार्थियों के साथ कार्यरत थे। संस्थान ने रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र की स्थापना नवम्बर 2021 में करके उसके संचालन की जिम्मेदारी उन्हे दी जिसमें ग्रामीण विकास के दो मुख्य उद्देश्य निर्धारित हुये (1) प्रत्येक बच्चे को यह हक हो कि उसे उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा मुफ्त में उपलब्ध हो और (2) हर नौजवान के हाथों में हुनर और ट्रेनिंग हो जिससे कि उसे अच्छी आजीविका मिल सके। आज रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र उन्नत भारत अभियान के वृहद बैनर के तले, इन दोनों उद्देश्यों को लेकर अग्रसर है। सरकारी योजनाओं को गाँव वालों तक ले जाना, नए मैटीरियल और तकनीकी सिखाना एवं महिलाओं के सशक्तीकरण के लिए कार्य करना ही इस केन्द्र का मुख्य उद्देश्य है।

शिक्षा का अनोखा मॉडल

उन्नत भारत अभियान के तहत संस्थान के सौ से अधिक छात्र, गाँव में जाकर बच्चों को पढ़ने-पढ़ाने का काम बखूबी कर रहे थे। कोविड के पश्चात आए व्यवधान के बाद, तकनीकी को लाकर गाँव के स्कूलों को केंद्र से संचालित स्मार्ट क्लास से जोड़ लिया गया। इससे आई आई टी के विद्यार्थी (अधिकतर पीएचडी) स्मार्ट क्लास द्वारा गाँव की कक्षा में बैठे बच्चो से दो-तरफा संवाद करते हुये पढ़ाई कराते हैं। यह पढ़ाई कक्षा 9 और 10 के लिए रोज नियमित समय पर लगती है जिससे ग्रामीण स्कूल जुड़कर विज्ञान और गणित की पढ़ाई करते हैं। कक्षा में बैठे बच्चे, आई आई टी से पढ़ाने वाले अध्यापकगणों से बहुत ही आसानी से प्रश्न-उत्तर करते हुये पढ़ पा रहे हैं। इस प्रोजेक्ट को Online Rural Education Initiative (OREI) के नाम से जाना गया है।

आज 40 से अधिक पीएचडी के छात्र, स्वेच्छा से कार्यरत अनेक स्टाफ सदस्य और केंद्र से जुड़े अनुभवी शिक्षक गणों ने मिलकर ग्रामीण स्कूलों में शिक्षा के स्तर को विश्व स्तर पर पहुंचा देने का एक सफल मॉडल देश को दिया है। इस मॉडल में उच्च शिक्षण संस्थाओं के छात्र, अपनी स्वेच्छा से, तकनीकी का सहारा लेकर, शिक्षा देकर देश के विकास में बहुत अहम भूमिका निभा पाने का हर्ष

अनुभव कर पा रहे हैं।

यह संस्थान के लिए हर्ष का विषय रहा कि उत्तर प्रदेश सरकार ने इस मॉडल को स्वीकार करते हुये ग्रामीण क्षेत्र के स्कूलों को OREI से जोड़ने की पेशकश की और उसके लिए एक अनुबंध किया गया। शीघ्र ही बहुत से अन्य उच्च शिक्षण संस्थान और ग्रामीण स्कूल OREI से जुड़कर गाँव मे रहने वाले हर बच्चे को मुफ्त और उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा पहुंचा पाएंगे।

माटी कला का संरक्षण

बिठूर और कल्याणपुर क्षेत्र मे बसे दर्जन भर गाँव का सर्वे करके यह पाया गया कि वहाँ आज भी माटी कला में पारंगत प्रजापति समाज हैं, किन्तु बाजार की होड़ में उनके द्वारा बनाए गए सामान अपना आकर्षण खो बैठे हैं। उनका उत्पाद कुछ दिवाली और उत्सवों में ही बिकता है, और दूसरी तरफ ग्राहकों का रुझान हाथ से बनाई गई वस्तुओं में बढ़ रहा है। रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र ने करीब 100 कुम्हारों को विश्वकर्मा योजना में पंजीकृत करा कर सरकारी योजना का लाभ उन तक पहुंचाया। साथ ही डिजाइनर के साथ कार्यशालाएं कराकर नए किस्म के दिये और लैम्प बनवाकर दीपावली में एक नई बाजार और पहचान कानपुर के कुम्हारों को दी, जिसका भरसक लाभ सीधा उन्हें मिल सका। सबसे उत्साहित करने की बात यह रही कि महिला कुम्हारों ने भी बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया और अपना काम आगे बढ़ाने का भी जोश दिखाया। आने वाले समय में केंद्र इस पारंपरिक कला को, जिससे महिला सशक्तीकरण, गाँव की अर्थव्यवस्था और गंगा का स्वास्थ्य भी जुड़ा है, समाज के केंद्र मे लाने को प्रतिबद्ध है।

रोजगार की ट्रेनिंग और स्वरोजगार

सिलाई करने वाले ऑपेरेटरों की उद्योगों मे बढ़ती मांग और ट्रेन्ड लोगों की कमी देखते हुए Sewing Machine Operator का 35 दिवसीय ट्रेनिंग कोर्स सितंबर 2021 में प्रारम्भ किया गया। दो वर्षों में

357 ग्रामीण युवक और युवतियाँ ट्रेनिंग लेकर उद्योगों में कार्यरत हैं और कुछ अपना रोजगार शुरू कर चुके हैं। ट्रेनीज का प्लेसमेंट मुख्यतः कानपुर की 5 सबसे बड़े निर्यातक कंपनियों में हो रहा है और कुछ बड़े मेट्रो की ओर रुख कर लेते हैं।

प्रथम एजुकेशन फाउंडेशन के सहयोग और नाबार्ड पोषित यह ट्रेनिंग कार्यक्रम भारत सरकार के NSDC के लेवेल 4 का vocational कोर्स है जो उद्योगों में रोजगार की गारंटी देता है। यह ट्रेनिंग ग्रामीणो के लिए एक गेम चेंजर के रूप मे उभर रहा है। ऐसी कितनी ही बहुएँ और बेटियाँ हैं जिन्होने गाँव के बाहर कदम ही नहीं रखा था और आज कंधे से कंधा मिलाकर पुरुषों के साथ उद्योगों में कार्यरत हैं। उनका बढ़ता हुआ आत्मविश्वास इस केंद्र की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

महिलाओं के समूहों ने डिजाइनर की मदद से खूबसूरत बैग और प्रोडक्ट बनाकर उसकी मार्केटिंग भी शुरू कर दी है जिसे नुमाइशों और ऑनलाइन पोर्टल के द्वारा मार्केट में लाने की तैयारी चल रही है। ग्रामीणों और विशेषकर महिलाओं का उत्साह देख कर लगता है कि कुछ ही वर्षों मे आई आई टी कानपुर के नजदीक ऑपरेल और गारमेंट में काम करते हुये तमाम लघु उद्योग खड़े हो जाएंगे।

भविष्य की दिशा

आज ग्रामीणों के बीच अपनी पहचान बनाने में सक्षम रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र, ग्रामीण उत्पादों की गुणवत्ता और बाजार मे मांग बढ़ाने के लिए डिजाइन और डेवलपमेंट प्रोग्राम की योजना बना रहा है, जिसमें कारीगरों और ग्रामीण लघु उद्योगों को डिजाइन और व्यवसाय डालने की ट्रेनिंग और मेंटोरिंग की जा सकेगी।

OREI कार्यक्रम के जरिये अधिक से अधिक ग्रामीण स्कूलों के बच्चों तक पहुचने का प्रयास किया जाएगा। आई आई टी के छात्र-छात्राओं को अपने फ्री समय में ग्रामीण भारत से जुड़ने, ग्रामीण व्यवस्था को समझने और विकास मे भागीदारी करने का यह एक बेहतरीन अवसर होगा ।

– रंजीत सिंह रोजी शिक्षा केंद्र की टीम
प्रो0 संदीप संगल, प्रो0 सुधांशु शेखर सिंह, प्रो0 अर्क वर्मा,
प्रो0 शिखर मिश्रा और श्रीमती रीता सिंह

अंतस के 24वें अंक के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार

1. **डॉ. सन्तोष कुमार मिश्र, बी एस बी ई**
2. **सुश्री ज्योति मिश्रा, पीएचडी, बी एस बी ई**
3. **श्रीमती दिव्या त्रिपाठी, परिसरवासी**

संगीत- रसोत्पत्ति का एक सशक्त माध्यम

रस का हमारे जीवन में एक विशेष स्थान है। मनुष्य की प्रवृत्ति होती है कि वह उस कार्य में अधिक दिलचस्पी लेता है जिसमें उसे रस मिलता है। जिस कार्य या उसके फलस्वरूप होने वाले परिणाम में रस निहित नहीं होता उस कार्य में मनुष्य का रुझान ना के बराबर होता है। रस साहित्य की दृष्टि से एक व्यापक शब्द है और इसे प्राचीन समय से अलग-अलग प्रकार से मनीषियों ने परिभाषित किया है। हमारे भारतीय संगीत शास्त्रों में भी रस की विस्तृत व्याख्या की गई है और संगीत को रसानुभूति का एक सशक्त माध्यम बताया गया है।

संगीत साहित्य के प्रसिद्ध ग्रन्थ नाट्यशास्त्र में, जो कि भरत मुनि द्वारा लिखा गया, नाट्य एवं संगीत के क्षेत्र में सबसे पहला ग्रन्थ माना जाता है उसमें सर्वप्रथम 8 रसों का उल्लेख मिलता है जो इस प्रकार है–

श्रृंगार वीर करुण रौद्र हास्य भयानकः।
वीभत्साद्भुत इत्यष्टौ नाट्ये रसा स्मृताः।।

ग्रंथकार ने इस सूत्र में श्रृंगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, अद्भुत, वीभत्स एवं आश्चर्य इन आठ रसों को ही नाट्यकला में स्वीकार किया है किन्तु आगे चलकर "शान्तोपी नवमो रसः" इस प्रकार नौवें रस के रूप में शांत रस को मान्यता प्राप्त हुई है। इस प्रकार से कुल नौ रस माने जाते हैं, जिन्हें नवरस भी कहा जाता है।

नाट्य कला के साथ-साथ संगीत के द्वारा भी रसानुभूति प्राचीन काल से होती रही है जिसमें विभिन्न स्वर सन्निवेश के द्वारा विभिन्न भावों और विभावों को उत्पन्न कर अलग-अलग रसों की अनुभूति होती है। संगीत के प्रकांड विद्वान पं. भातखंडे जी के अनुसार संगीत की उत्पत्ति 'ऊँ' इस आदिनाद से हुई है और इससे मनुष्य को ये ज्ञात हुआ कि हम अपने कंठ से या अन्य साधनों के द्वारा नाद अथवा स्वरों को निकाल सकते हैं, लेकिन ये सामान्य विषय नहीं है उसे इसका भी बोध हो गया था। सामान्य जीवन शैली की अपेक्षा नादसृजन का संसार पृथक है। मनुष्य ने यह भी अनुभव किया कि इसके नियम इसका चलन आदि सभी अलग होने के कारण ही इसे अलौकिक कहा गया है जो कि रसानुभूति कराने में सक्षम होता है।

जब हम कोई गीत सुनते हैं तब उसके शब्द में निहित जो भावनाएं होती हैं उनका पहला स्थान होता है लेकिन वह भावना उसमें प्रयोग किये जाने वाले स्वर, लय तथा गायन शैली आदि से प्रभावित होकर पुनः विकसित होकर स्वरों की भावना बन कर हमारे सन्मुख आती हैं। अतः गीत में सही स्वरों, सही लय एवं सही गायन शैली का उपयोग करके वांछित भावना को और परिपोषित कर दिया जाता है जो हमें एक विशेष रसास्वादन कराती है। शब्दों से केवल उसका अर्थ समझने वाले श्रोता को ही भावविभोर किया जा सकता है लेकिन उसमें उचित संगीत के प्रयोग से वह अनेक लोगों तक उस भावना को पहुँचाने में सफल होता है।

एक निश्चित गति के साथ गायन या वादन करने को संगीत की भाषा में 'लय' कहा जाता है। एक गीत को कम या अधिक लय में गाने पर उसकी भावना में परिवर्तन लाया जाता है। अतः सही लय का चुनाव भी रसोत्पत्ति में आवश्यक होता है। कहा भी गया है –

तथा लय हास्य श्रृंगारयोर्मध्यमाः।
वीभत्सभयानकोर्विलम्बितः वीररौद्राद्भुतेषुचद्रुतः।।

अर्थात हास्य और श्रृंगार रस के लिए मध्यम लय, वीभत्स और भयानक रस के लिए विलंबित लय तथा वीर, रौद्र और अद्भुत रस के लिए द्रुत लय होती है।

लय और स्वर के साथ ही काव्य के वृत्त और छंद का भी रस के साथ संबंध है। मंदाक्रांता जैसे दीर्घ धीमी लय के वृत्त कवि कालिदास के मेघदूत के यक्ष की विरह भावना को व्यक्त करते हैं तो वहीं रामायण का युद्ध प्रसंग आदि दिखाने के लिए द्रुत लय के अनुष्टुभ छंद का प्रयोग किया जाता है। ये वृत्त और छंद गीत के सही ताल का चयन करने में सहायक होते हैं। अतः काव्योचित स्वर, लय एवं ताल के अनुरूप संगीतबद्ध किये गए गीत से पूर्ण रसोत्पत्ति संभव हो पाती है।

संगीत में भावनाओं को उद्दीप्त करने की विलक्षण क्षमता होती है। इसके परिणाम स्वरुप शरीर पर पड़ने वाले विभिन्न परिवर्तनों जैसे नाड़ी गति एवं रक्तचाप, ऊर्जा आदि को वैज्ञानिक उपकरणों द्वारा नापा जा सकता है। अमेरिका के प्रख्यात विज्ञानी डॉ0 कीथ वैलेस ने प्रयोगों के आधार पर यह पाया कि रोगी विभिन्न रागों के प्रति अलग-अलग प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है। यही कारण है कि संगीत द्वारा विभिन्न रोगोपचार में अब कई देश के चिकित्सक एवं विज्ञानी अपनी दिलचस्पी दिखा रहे हैं जिनमें विभिन्न बीमारियों के लिए अलग-अलग प्रकार के संगीत का प्रयोग किया जाता है। रोगोपचार में अब संगीत को एक वैकल्पिक चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रयोग किया जा रहा है। यह सब संगीत के द्वारा भावोत्पत्ति एवं रसोत्पत्ति जैसे विशेष गुण की वजह से ही संभव हो पा रहा है।

संगीत से उत्पन्न होने वाली सूक्ष्म ध्वनि-तरंगों का हमारी मनोदशा पर गहरा प्रभाव पड़ता है। वैज्ञानिकों के अनुसार इन ध्वनि तरंगों से हमारे शारीर की अन्तः-स्रावी ग्रंथियाँ सक्रिय हो जाती हैं और उनसे रिसने वाला रसायन मानसिक स्थिति में परिवर्तन का संकेत देते हैं। जब किसी संगीत को सुन कर मनुष्य का मन प्रसन्न होता है तो उस समय होने वाला रसायन स्राव भिन्न होता है और उसी प्रकार जब किसी करुण रस वाले संगीत को सुनता है तो उस समय होने वाला रसायन स्राव भिन्न होता है।

संगीत के द्वारा रसोत्पत्ति पर विचार करने से यह ज्ञात होता है कि स्वर और लय इसमें एक माध्यम के तौर पर प्रमुख भूमिका निभाते हैं परन्तु स्वरों के साथ ही कलाकार की प्रस्तुतीकरण करते समय उसकी अंतर्भावना काफी महत्वपूर्ण होती है। कलाकार का उस राग या गायन शैली के प्रति कैसा दृष्टिकोण है वह भी काफी महत्वपूर्ण हो

जाता है। साथ ही यह भी विदित होता है कि अकेला एक स्वर रस की उत्पत्ति करने में सक्षम नहीं होता उसे कम से कम एक साथी स्वर की आवश्यकता होती है। विभिन्न स्वर संयोजन भाव उत्पन्न करने में अधिक सक्षम होते हैं और उन स्वर संयोजनों में निहित स्वरांतर भावोत्पत्ति का कारण बनते हैं। स्वरों के आपस का सम्बन्ध ही स्वरांतर है। प्रत्येक स्वर का अन्य स्वर से एक निश्चित सम्बन्ध होता है और स्वर आपस में मिलकर किस भाव का द्योतन करें यह उनके स्वरांतर या आपसी संबंध पर निर्भर करता है। उदहारण के लिए सा और 'रे' स्वरों का स्वरांतर 'सा' और 'ग' स्वरों के मध्य मौजूद स्वरांतर से भिन्न होता है अतः इन दोनों युगल स्वरों से निकलने वाला भाव भी भिन्न होगा। यही स्थिति सभी स्वरों की है। अतः उचित भाव उद्दीप्त करने वाले विभिन्न स्वरान्तरों से युक्त स्वर समूह जब शब्दों के साथ मिलकर एक कर्णप्रिय गीत बनाते हैं तभी उसमें भाव और रस की निष्पत्ति होती है।

कई बार जब हम चलचित्र या टी.वी. पर प्रसारित होने वाले किसी धारावाहिक को देख रहे होते हैं तब पार्श्व में बजने वाले संगीत पर अगर हम ध्यान दें तो हम पायेंगे कि बिना किसी शब्दों के केवल स्वर लहरियों के माध्यम से कैसे उस दृश्य के भावों को उभार कर विशेष रस की उत्पत्ति की जाती है। इसमें भी संगीतकार को ये ध्यान रखना होता है कि दृश्यानुकूल भाव की वृद्धि के लिए कौन से स्वर संयोजन का प्रयोग किया जाए, उस स्वर लहरी को किस वाद्य यन्त्र पर बजाया जाए तथा उसको बजाने की गति यानि कि लय धीमी हो या तेज हो या मध्यम हो। वाद्य यन्त्र का प्रयोग भावोत्पत्ति में विशेष सहायता करता है, जैसे कि प्रसन्नता का भाव या श्रृंगार रस के लिए सितार, संतूर आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, दुःख, उदासीन भाव या करुण रस को बढ़ाने के लिए सारंगी, सरोद आदि वाद्यों का प्रयोग किया जाता है, रौद्र एवं वीर रस के लिए ताल वाद्यों जैसे कि बैंड में प्रयोग किए जाने वाले ड्रम, पखावज के साथ-साथ दुन्दुभी एवं पाश्चात्य संगीत में प्रयोग किए जाने वाले स्ट्रिंग्स का प्रयोग किया जाता है, प्राकृतिक सौंदर्य की अनुभूति कराने के लिए बाँसुरी, विवाह संबंधित दृश्यों के लिए शहनाई वाद्य के प्रयोग से हम सभी भली-भाँति परिचित हैं। ऐसा अनुभव किया गया है कि चल-चित्रों में दृश्य के पार्श्व में संगीत ना होने पर रसोत्पत्ति पूर्ण रूप से नहीं हो पाती और एक सूनापन बना रहता है।

गीत 'ऐ मेरे वतन के लोगों' एवं गीत 'ऐ मालिक तेरे बन्दे हम' आदि करुण रस प्रधान गीतों में शब्द के साथ उचित संगीत का प्रयोग ही इन गीतों को लोकप्रियता देने में सफल हुआ। देशभक्ति गीतों में जैसे कि 'अपनी आजादी को हम हरगिज मिटा सकते नहीं' एवं गीत 'ऐ वतन वतन मेरे आबाद रहे तू' आदि गीतों में ऐसे स्वरों का संयोजन किया गया कि ये देशभक्ति की भावना को बढ़ाने में सहायक हों। गीत 'पंछी बनू उड़ती फिरूं मस्त गगन में' एवं गीत 'ये जमीं गा रही है आसमां गा रहा है' आदि में प्रसन्नता का भाव बढ़ाने वाला संगीत दिया गया है। भजन जैसे कि 'सुख के सब साथी दुःख में ना कोई', 'श्री रामचन्द्र कृपालु भज मन' आदि में भक्ति से ओत-प्रोत संगीत संयोजन किया गया है। अतः ये सिद्ध होता है कि ऐसे गीत जो श्रोताओं के मन में अमिट छाप छोड़ते हैं और कई दिनों तक अपना प्रभाव रखने में सक्षम होते हैं उनमें उचित स्वरों के साथ-साथ उचित संगीत का संयोजन होता है।

भारतीय शास्त्रीय संगीत रागों पर आधारित संगीत माना जाता है तथा इसमें अलग-अलग राग विभिन्न भावनाओं को उभारने में सक्षम होते हैं। उनको सही ढंग से प्रस्तुत करने से भावोत्पत्ति एवं रसोत्पत्ति कलाकार द्वारा की जाती है। कई संगीतकार रागों पर आधारित गीत बनाते हैं जो उन्हें वांछित रस की उत्पत्ति में सहायता करता है। डॉ0 जयाम नर्गिस के अनुसार राग जौनपुरी कोमल एवं करुणापूर्ण है, राग अडाना उत्साहपूर्ण, राग तोड़ी प्रगल्भा नायिका की वेदनायुक्त, राग मारवा अपनी पीड़ा छुपाने वाला नायक, राग मालकौंस शांत, गंभीर एवं सौम्य, राग हिंडोल आवेशयुक्त, राग खमाज संयोग एवं वियोग श्रृंगारपूर्ण अर्थात मुग्धा और विरहिणी नायिका की मनोदशा को प्रकट करता है। इसके अतिरिक्त राग भैरव भक्तिपूर्ण, राग शंकरा वीर एवं क्रोध का भाव तथा राग भूपाली आनंद एवं शांत भाव अभिव्यक्त करने में सक्षम है।

भावनाओं को शीघ्राति-शीघ्र संप्रेषित करने में संगीत का बड़ा महत्व है और संगीत के बिना गीत अधूरा ही रहता है। इसीलिए कहा भी गया है कि संगीत आत्मा का भोजन है। बिना संगीत के जीवन की कल्पना करना भी कठिन है। संगीत को मनुष्य ने कई वर्षों की खोज के बाद विकसित किया और उसमें निहित रसानुभूति के कारण उसके स्वरुप में वृद्धि होती गई और आज परिष्कृत रूप में हमारे सामने है जिसका हम सभी समय-समय पर रसास्वादन करते हैं। उपरोक्त समस्त तथ्यों से हम यह कह सकते हैं कि संगीत रसोत्पत्ति का एक सशक्त माध्यम है जो हमें विभिन्न भावों की अनुभूति कराता है और हमारे जीवन का एक अभिन्न अंग बन चुका है।

- डॉ0 देवानंद पाठक
मीडिया टेक्नोलॉजी सेंटर
आई आई टी कानपुर

भाषा-विमर्श
यात्रा-वृतांत

यात्रा वृतांत, 'यात्रावृत्त' या 'यात्रा-संस्मरण' हिन्दी गद्य की एक रोचक विधा है। मनुष्य अनादि काल से यात्राएं करता आ रहा है। 'ऐतरेय ब्राह्मण' का सूत्रवाक्य "चरैवेति चरैवेति" मनुष्य की यायावरी वृति का ही सूचक है। आज तो मनुष्य चंद्रमा पर जा चुका है, नक्षत्रों से होड़ ले रहा है। यात्राएं आसान हो गई हैं। किन्तु जब यह सुविधा नहीं थी तब भी मनुष्य उतना ही यात्रा प्रिय था। ईसा के चार-पाँच सौ वर्ष पूर्व गौतम बुद्ध के उपदेश यदि चीन, जापान, तिब्बत, वर्मा, थाईलैंड, श्रीलंका आदि देशों में पहुंच सके तो इसके पीछे मनुष्य की यायावरी प्रवृति की भूमिका ही मुख्य रही होगी। ह्वेनसांग और फाहियान के यात्रावृतांत हमारे इतिहास को जानने के महत्वपूर्ण स्रोत हैं। हमारे समाज की अनेक जातियां तो यायावरी वृत्ति की होती हीं थीं। ऐसे में यात्रा वायुयान से की गयी हो या बैलगाड़ी से-महत्व इसका उतना नहीं होता जितना यात्रावृत्त के चित्रण की दृष्टि और कला का होता है। हां यह जरूर है कि रेलगाड़ी के साथ आकाशमापी वायुयानों ने यात्रा-वृत्तांतों का फलक भी जमीन से आकाशीय बना दिया। यात्रा के दौरान विभिन्न प्रकार के चरित्रों से मुलाकात, उनके स्वभाव, प्रवृत्तियों की चर्चा-परिचर्चा, उनके सामाजिक आचार-व्यवहार, रहन-सहन, तीज-त्योहारों की जानकारी, प्रांत विशेष की भौगोलिक स्थिति, प्रकृत्ति-सौन्दर्य, मनोरंजन के साधन और जीवन दृष्टि, सकारात्मक दृष्टिकोण, स्थानीय और आंचलिक समस्याओं आदि का विवरण यात्रा-वृत्तांतों के मूल में होता है।

राहुल-सांकृत्यायन ने घुमक्कड़ी को धर्म का दर्जा दिया है। वे लिखते हैं-"मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी। घुम्मकड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता। मनुष्य स्थावर वृक्ष नहीं है, वह जंगम प्राणी है। चलना मनुष्य का धर्म है, जिसने इसे छोड़ा, वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है।" अतः मनुष्य-जाति की प्रगति का इतिहास यायावरी-वृत्ति में ही है। संसार के बड़े-बड़े यायावर अपनी मनोवृत्ति में साहित्यिक थे। फाहियान, ह्वेनसांग, इत्सिंग, इब्न बतूता, अल्बरूनी, मार्कोपोलो, बर्नियर आदि जितने प्रसिद्ध घुमक्कड़ हुए हैं अथवा देश-विदेश के साहसी अन्वेषक हुए हैं, सबमें साहित्यिक यायावर का रूप लक्षित होता है। यात्रा करने मात्र से कोई साहित्यिक यायावर की संज्ञा नहीं प्राप्त कर सकता और न यात्रा का विवरण प्रस्तुत कर देना मात्र यात्रा साहित्य है। जीवन दृष्टि और भाषा पर अधिकार-यात्रा वृतांत के लेखक में इन दो गुणों का होना अनिवार्य है। ऐसे दृष्टि संपन्न रचनाकारों की कृतियों में उनके यात्रा संस्मरण, सहज हिस्सा बन जाते हैं। महाकवि कालीदास के विभिन्न देशों तथा प्रकृतिक रूपों के वर्णनों से उनकी यायावरी मनोवृति का परिचय मिलता है। बाण की घुमक्कड़ प्रवृति की अभिव्यक्ति उनके 'हर्षचरित' तथा 'कादंबरी' के देश-देश की प्रकृति और नाना प्रकार के लोगों के वर्णनों में हुई है।

हिन्दी में यात्रावृतों की शुरुआत भारतेंदु युग से हुई। 'मेहदावल की यात्रा', 'लखनऊ की यात्रा', 'सरयूपार की यात्रा', 'हरिद्वार की यात्रा', 'वैद्यनाथ की यात्रा' आदि भारतेन्दु के कथात्मक यात्रा-संस्मरण हैं। भावात्मक स्थलों पर इन यात्रावृत्तों में भाषा की प्रवाहमयता में मुहावरे, लोकोक्तियाँ, अलंकार आदि सहजता से प्रवेश कर गए हैं। यात्रावृत्त की इस कड़ी को बालकृष्ण भट्ट के 'कतिकी का नहान', 'गया-यात्रा' एवं प्रताप नारायण मिश्र की 'विलायत यात्रा' ने मजबूती दी। इन लेखकों के प्रयत्नों से यात्रा-साहित्य ग्रंथों में सामने आने लगा। भारतेन्दु युग की यह महत्वपूर्ण उपलब्धि थी। श्रीमती हरदेवी रचित 'लंदन यात्रा' (1883 ई.) यात्रा वृतांत का सर्वप्रथम मुद्रित ग्रंथ था।

यात्रावृत्त की इस विकास-यात्रा में द्विवेदी युग की पत्रिकाओं 'सरस्वती', 'मर्यादा', 'इन्दु', 'गृहलक्ष्मी' आदि ने विशिष्ट भूमिका

निभाई। इन पत्रिकाओं में अनेक सुगठित यात्रा–वृतांत प्रकाशित हुए। इसमें प्रमुख हैं 'उत्तरी और दक्षिणी ध्रुव की यात्रा', 'विलायत की सैर', 'युद्ध क्षेत्र की सैर', 'जापान की सैर', 'मारीशस यात्रा',आदि। यात्रा-साहित्य संबंधी अनेक ग्रंथ भी इस दौरान प्रकाशित हुए। इनमें ठाकुर गदाधर सिंह का 'चीन में तेरह मास'(1903), स्वामी सत्यादेव परिव्राजक का 'अमेरिका-दिग्दर्शन'(1911), गोपाल राम गहमरी का 'लंका यात्रा का विवरण'(1912), जवाहर लाल नेहरू का 'रूस की सैर' (1926) आदि उल्लेखनीय हैं। इन विदेशी यात्राओं का एक ही मकसद था भारत को उनके समानांतर लाने के लिए उन देशों की प्रगति के रहस्यों को जानना। इन यात्रावृत्तों के घेरे में प्रकृति की खुशबू तो सिमटी ही, सामाजिक स्वतंत्रता की हवा का रुख भी भांपा गया। औद्योगिक विकास की गति, रीति-रिवाजों का प्रभाव भी इन यात्रा वृतांतों की जड़ों को शक्ति देता रहा।

देश की भौगोलिक सीमाओं के भीतर की यात्रा पर केंद्रित कृतियों में

पं. रामशंकर व्यास की 'पंजाब-यात्रा', हरिकृष्ण झांझड़िया रचित 'मेरी दक्षिण भारत-यात्रा' आदि महत्वपूर्ण हैं। तीर्थ यात्राओं के संस्मरण में देवी-प्रसाद खत्री रचित 'बदरिकश्रम यात्रा' का अपना अलग महत्व है।

सन 1936-37 का प्रगतिवादी आंदोलन, साम्यवादी विचारधारा के प्रति बढ़ता आकर्षण, द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति आदि परिस्थितियों ने भारत के यात्रा वृतांत साहित्य को नयी जमीन दी। सांस्कृतिक संबंधों के आदान-प्रदान ने एक-दूसरे देशों को समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह समय यात्रा-साहित्य की समृद्धि का समय था। डॉ. सत्यनारायण रचित 'रोमांचक रूस' (1939), महेश प्रसाद श्रीवास्तव कृत 'दिल्ली से मास्को', यशपाल कृत 'लोहे की दीवार के दोनों ओर (1953) अक्षय कुमार जैन की 'दूसरी दुनिया' (1965) आदि ग्रंथ रूस की सभ्यता-संस्कृति, सामाजिक व्यवस्था, साम्यवादी शासन प्रणाली, पूंजी की भूमिका और वहां की प्रगति का पूरा ब्यौरा प्रस्तुत करने वाले हैं। रूस-यात्राओं के अलावा राम-आसरे रचित 'माओ के देश में', भगवतशरण उपाध्याय रचित 'कलकत्ता से पेकिंग' आदि यात्रा-ग्रंथों से संबंधित देशों के विषय में सभी तरह की जानकारियां उपलब्ध होती हैं। योगेंद्र नाथ सिन्हा रचित 'दुनिया की सैर' (1941), सेठ गोविंद दास रचित 'पृथ्वी परिक्रमा' (1955), रामवृक्ष बेनीपुरी लिखित 'पैरों में पंख बांध कर (1952), 'उड़ते चलो-उड़ते चलो'(1954) आदि ग्रंथों से यूरोप, अमेरिका, जापान आदि देशों के विषय में रोचक सामग्री उपलब्ध होने के साथ-साथ वहां का प्राकृतिक सौंदर्य भी इन यात्रा-वृत्तांतों में उभर कर सामने आया। अज्ञेय का 'एक बूंद सहसा उछली' यात्रा-साहित्य का महत्वपूर्ण एवं खोजपरक ग्रंथ है। स्विट्जरलैंड, बर्लिन, पेरिस आदि देशों का सौंदर्यांकन इस कृति में प्रभाकर माचवे की 'गोरी नजरों में हम' (1964) और निर्मल वर्मा की 'चीड़ों पर चाँदनी' (1964) भी ऐसी ही कृतियां हैं जिनमें भारत और पाश्चात्य देशों की चिंतन-पद्धति का तुलनात्मक निष्कर्ष एक दूसरे को चुनौती देने की मुद्रा में हैं। बच्चन की 'प्रवास की डायरी' (1972) में इंग्लैंड के रहन-सहन, रीति-रिवाजों आदि पर एक भारतीय मानस की प्रतिक्रियाएं संकलित हैं।

स्वदेश यात्रा-साहित्य में गोपाल नेवटिया रचित 'कश्मीर'(1940) देवदत्त शास्त्री रचित 'मेरी कश्मीर यात्रा' (1948) सत्यवती मलिक रचित 'कश्मीर की सैर'(1950) स्वामी प्रणवानंद रचित 'कैलाश-मानसरोवर' (1943), स्वामी रामानन्द का 'कैलाश दर्शन' (1946), यशपाल जैन कृत 'उतरा खंड के पथ पर' (1958) आदि विशेष उल्लेखनीय ग्रंथ हैं। प्राकृतिक सौंदर्य, दार्शनिक चिंतन, भावुकता, साहस का संदेश आदि इन यात्रा-वृतांतों का मूल स्वर है। इन ग्रंथों में भी अज्ञेय की कृति 'अरे यायावर रहेगा याद' और मोहन राकेश की 'आखिरी चट्टान तक' का अपना अलग महत्व है। आसाम से लेकर पश्चिमी सीमा प्रांत तक की यात्रा का विस्तार यायावर अज्ञेय ने अमर कर दिया है। यही विस्तार मोहन राकेश की कृति में भी है इनकी कृति में सम्पूर्ण भारत की परिक्रमा है। वर्णन की कुशलता, बात कहने का अंदाज और अनुभव का विस्तार इस कृति को विशिष्ट बनाता है। यात्रा साहित्य के आधुनिक लेखकों में डॉ रघुवंश, धर्मवीर भारती, बलराज साहनी, शंकर दयाल सिंह, कमलेश्वर, अजित कुमार, कन्हैयालाल नंदन, विष्णु प्रभाकर, राजेंद्र अवस्थी, इंदु जैन, रामदरश मिश्र, शिवप्रसाद सिंह, कर्ण सिंह चौहान, मंगलेश डबराल, हिमांशु जोशी, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, गिरधर राठी, अमृतलाल बेगड़ आदि प्रमुख हैं।

अंततः रामचन्द्र तिवारी के शब्दों में, "आज हम यात्रावृतों में वस्तुओं, व्यक्तियों और स्थितियों के बाह्य संश्लिष्ट बिंब विधान के साथ ही लेखक के अंतर्जगत का पूरा साक्षात्कार कर सकते हैं। यात्रा वृत्तातों में देश-विदेश के प्राकृतिक दृश्यों की रमणीयता, नर नारियों के विविध जीवन संदर्भ, प्राचीन एवं नवीन संदर्भ चेतना की प्रतीक कलाकृतियों की भव्यता तथा मानवीय सभ्यता के विकास के प्रतीक अनेक वस्तु चित्र यायावर लेखक के मानस में रूपायित होकर उसकी वैयक्तिक रागात्मक ऊष्मा से दीप्त हो जाते हैं। यात्राकाल में यायावर का साहस, संघर्षशीलता, स्वच्छंदता, आकस्मिक रूप से आनेवाली प्रतिकूल परिस्थितियों को अनुकूल बना लेने की क्षमता आदि चारित्रिक विशेषताएं उसे नायक की गरिमा प्रदान कर देती हैं। पाठक उसे प्यार करने लगता है। यायावरों की साहसिक यात्राएं मानव की जिजीविषा का उद्घाटन करती हैं। जिजीविषा हर जीवधारी की मूलभूत वृत्ति है। यात्रा वृतांतों को पढ़ने से इस वृत्ति की तुष्टि होती है।

हिंदी का यात्रा साहित्य निरंतर समृद्ध हो रहा है और इसका भविष्य उज्ज्वल है।

आधार ग्रंथ:

1. हिंदी का गद्य साहित्य, रामचंद्र तिवारी।
2. यात्रा साहित्य का उद्भव और विकास, डॉ. सुरेंद्र कुमार।
3. आधुनिक हिंदी साहित्य का विकास, डॉ. श्री कृष्णलाल।
4. घुमक्कड़ शास्त्र, राहुल सांकृत्यायन।

- साभार
डॉ. अमरनाथ
हिंदी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली

तकनीकी लेख
सामाजिक सरोकार

नवाचार आधारित अनुसंधान एवं विकास को बाजार में पूर्ण उत्पाद के रूप उतारना बेहद लंबी और कठिन प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में प्रोटोटाइप बनाना और उसे आवश्यक दिशा–निर्देशों के साथ परीक्षण प्रक्रिया से गुजरना सबसे जरूरी और जटिल है। विशेषकर चिकित्सा एवं ग्रामीण तकनीक के क्षेत्र में यह और भी अधिक मुश्किल हिस्सा है।

आईआईटी कानपुर के सभी विभागों ने पिछले कुछ वर्षों में इस दिशा में जो काम किया है उसका प्रतिरूप ही हमें प्रौद्योगिकी हस्तांतरण एवं स्टार्टअप के क्षेत्र में संस्थान की रैंकिंग के रूप में दिखता है। इस प्रक्रिया में संस्थान के अन्य केन्द्रो के साथ इमेजिनियरिंग लैब केंद्र का बहुत योगदान रहा है। इमेजिनियरिंग लैब ने चिकित्सा और ग्रामीण तकनीक को आगे बढ़ाने के लिए नए मेडटेक केंद्र स्थापित करने के साथ-साथ रुताग केंद्र को भी नए तरीके से गढ़ा है।

मेडटेक, आई आई टी कानपुर, भारत सरकार के जैव प्रौद्योगिकी विभाग के तहत जैव–प्रौद्योगिकी औद्योगिक अनुसंधान सहायता परिषद (बीआईआरएसी) द्वारा वित्त पोषित एक सुविधा है। अत्याधुनिक बुनियादी ढांचे और गुणवत्तापूर्ण चिकित्सा उपकरणों का उत्पादन करने के लिए प्रशिक्षित कर्मियों को उपलब्ध कराने की क्षमता रखने के कारण, आई आई टी कानपुर का चयन इस सुविधा केन्द्र के लिए हुआ है।

यांत्रिकी अभियांत्रिकी विभाग से प्रोफेसर जे. रामकुमार, (एचएजी), इमेजिनियरिंग प्रयोगशाला के प्रमुख हैं। उल्लेखनीय है कि इस प्रयोगशाला के तहत निष्पादित होने वाले अनुसंधान कार्यों के लिए उन्हें अनुसंधान स्थापना अधिकारी डॉ0 अमनदीप सिंह का भरपूर समर्थन एवं सहयोग प्राप्त है।

कोविड महामारी के दौरान, नए स्थापित मेडटेक केंद्र ने ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर, वेंटीलेटर, ऑक्सीजन प्लांट, एवं अन्य कई उत्पादों के त्वरित विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है जिसकी प्रशंसा प्रतिष्ठित स्वास्थ्य, स्टार्टअप एवं औद्योगिक जगत के पेशेवरों ने की है।

नए अनुसंधान एवं विकास कार्यों के साथ ही कोविड महामारी के दौरान इस प्रयोगशाला द्वारा भारतीय स्वास्थ्य सेवा तंत्र को किफायती चिकित्सा उपकरणों की उपलब्धता सुनिश्चित करने के

लिए अत्याधुनिक उपकरणों की खरीद की गई। इस सुविधा ने सख्त ऑडिट प्रक्रिया के पश्चात ISO13485:2016 की मान्यता प्राप्त की। अपनी अनुभवी एवं दक्ष टीम के साथ ISO13485 प्रमाणन प्राप्त यह केंद्र नए स्टार्टअप्स और नवप्रवर्तकों को अपने प्रोटोटाइप (आद्यरूप) को औद्योगिक स्तर के उत्पादन एवं परीक्षण प्रक्रिया को आसानी से पूरा कर सकने योग्य बनाता है। जिसका प्रमाण इस केंद्र में विकसित हुए 6 उत्पादों को भारत की प्रतिष्ठित बायोटेक्नोलॉजी इग्निशन ग्रांट (बी.आई.जी.) मिलना है।

इसके साथ ही, यह केंद्र भारत के केंद्रीय औषधि मानक नियंत्रण संगठन (सीडीएससीओ) में पंजीकृत एक चिकित्सा उपकरण का उत्पादन भी कर चुकी है। ''मेक इन इंडिया'' के तहत यह पहल प्रमुख शैक्षणिक संस्थानों को उद्योगों से जोड़ती है। उद्योग जगत के साथ मिलकर अनुसंधान कार्य करते हुए, यह सुविधा हर किसी को सस्ती कीमत पर चिकित्सा उपकरण उपलब्ध कराए जाने का कार्य करती है। इस सुविधा का भावी दृष्टिकोण ''आइडियाज़ टू प्रोडक्ट्स'' नए विचारों और रचनात्मकता का स्वागत करता है।

साथ ही ग्रामीण तकनीक के विकास में इमेजिनियरिंग लैब केंद्र की टीम द्वारा किये कार्यो की परिणति स्वरूप नैनोटेक्नोलॉजी आधारित आर्गेनिक खाद और रसायनो एवं बिजली के बिना हरी सब्जियों एवं फलों को सुरक्षित रखने वाला भण्डारण यन्त्र भी समर्थित स्टार्टअप के माध्यम से बाजार में लाये गए हैं। दिव्यांगों के जीवन को सुगम बनाने के लिए भी केंद्र ने कृत्रिम हस्त, बिजली चलित ट्राई साइकिल एवं अन्य कई ऐसे उपकरणों का विकास किया है जोकि भारत के सभी वर्गों को सुगम जीवन के लक्ष्य की तरफ केंद्रित हैं।

3-D प्रिंटिंग, CAD डिजाइन, टेस्टिंग, सिमुलेशन, इलेक्ट्रॉनिक कम्पोनेन्ट डिजाइन, फंडिंग, मेंटरशिप, प्रारंभिक उपयोगकर्ता एवं उद्योगों से संबंध इत्यादि में समर्थन देकर विचारों को कार्यशील प्रोटोटाइप से बाजार के लिए तैयार उच्च गुणवत्ता एवं सही मानक के उत्पाद बनाने के लिए ही केंद्र की समस्त टीम स्टार्टअप एवं इनोवेटर के साथ कार्यरत रहती है।

आप कभी भी अपने विचारों को मूर्त रूप देने से पहले कोई विचार विमर्श करना चाहते हैं तो इन केंद्रों के किसी भी सदस्यों से वेबसाइट एवं ई-मेल के माध्यम से जुड़ सकते हैं।

–प्रोफेसर जे. रामकुमार (एचएजी)
एवं
डॉ अमनदीप सिंह
मेडटेक, आई आई टी कानपुर

—◆◆◆—

चाँद पर भारत

"वाक़िफ कहाँ ज़माना हमारी उड़ान से
वो और थे जो हार गए आसमान से।"
– फ़हीम जोगापुरी

चाँद हमेशा से ही इंसान के लिये एक कौतूहल का विषय रहा है। चाँद को लेकर हमेशा से ही वैज्ञानिकों और पूरी मानव जाति जिज्ञासु रही है। यही वजह है कि अनेक देशों की अंतरिक्ष एजेंसियाँ समय-समय पर चाँद पर अपने यान भेजती रही हैं। भारत भी इस कार्य में पीछे नहीं है। तमाम चुनौतियों को पार करता हुआ भारत आज अंतरिक्ष की दुनिया में काफी ऊँची छलांग लगाने के साथ ही वैश्विक स्तर पर अपनी मजबूत पहचान बना चुका है।

भारत के चंद्र अन्वेषण मिशन

भारतीय चंद्र अन्वेषण कार्यक्रम जिसे चंद्रयान कार्यक्रम के रूप में भी जाना जाता है। यह, इसरो (भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन) द्वारा बाह्य अंतरिक्ष मिशन की एक श्रृंखला है। चंद्रयान कार्यक्रम एक बहु मिशन कार्यक्रम है, जिसका संक्षिप्त परिचय निम्नवत उल्लिखित है–

चंद्रयान-1: चंद्रमा के लिए भारत का पहला मिशन, 22 अक्टूबर 2008 को एसडीएससी शार, श्रीहरिकोटा से सफलतापूर्वक लॉन्च किया गया था। अंतरिक्ष यान चंद्रमा के रासायनिक, खनिज और फोटो-भूगर्भिक मानचित्रण के लिए चंद्रमा की सतह से 100 किमी की ऊंचाई पर चंद्रमा के चारों ओर परिक्रमा कर रहा था। अंतरिक्ष यान में भारत, अमेरिका, ब्रिटेन, जर्मनी, स्वीडन और बुल्गारिया में निर्मित 11 वैज्ञानिक उपकरण थे। सभी प्रमुख मिशन उद्देश्यों के सफल समापन के बाद, मई 2009 के दौरान कक्षा को 200 किमी तक बढ़ा दिया गया है। उपग्रह ने चंद्रमा के चारों ओर 3400 से अधिक परिक्रमाएं कीं और मिशन तब समाप्त हुआ जब 29 अगस्त 2009 को अंतरिक्ष यान के साथ संचार खो गया था।

तकनीकी विनिर्देश:

प्रमोचन वाहन	: पीएसएलवी–सी11/ चंद्रयान -1 मिशन
शक्ति	: 700 वाट
प्रमो भार/प्रमोचन मास	: 1380 किलोग्राम

चंद्रयान–2: चंद्रयान-2 मिशन को 22 जुलाई 2019 का सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र (एस.डी.एस.सी.), श्रीहरिकोटा से सफलतापूर्वक प्रमोचन किया गया था। विक्रम लैंडिंग का प्रयास 7 सितंबर को किया गया था और इसने सतह से लगभग 2 किमी ऊपर 35 किमी की कक्षा से नियोजित अवरोही प्रक्षेप पथ का अनुसरण किया किंतु दुर्भाग्यवश लैंडर और भू-केंद्र से संपर्क टूट गया था। चंद्रयान-2 ने चंद्रमा के सतह भूविज्ञान, संरचना और बहिर्मंडलीय मापन का अध्ययन करने के लिए बोर्ड पर आठ प्रयोग नीतभार लगे थे। इन मापों में पिछले चंद्र मिशनों से अर्जित समझ में वृद्धि हुई।

तकनीकी विनिर्देश:

प्रमोचक राकेट	: GSLV-Mk III & M1 / चंद्रयान -2 मिशन
अनुप्रयोग	: ग्रहों का अवलोकन
लॉन्च वजन	: 3,877 कि०ग्राम

चंद्रयान-3: चंद्रयान-3, चंद्रयान-2 का अनुवर्ती मिशन है, जिसने चंद्र सतह पर सुरक्षित लैंडिंग और रोविंग की एंड-टू-एंड क्षमता प्रदर्शित किया है। इसमें लैंडर और रोवर विन्यास शामिल हैं। प्रणोदन मॉड्यूल में चंद्र कक्षा से पृथ्वी के वर्णक्रमीय और ध्रुवीय मीट्रिक मापों का अध्ययन करने के लिए स्पेक्ट्रा-पोलरिमेट्री ऑफ हैबिटेबल प्लैनेट अर्थ नीतभार, तापीय चालकता और तापमान को मापने के लिए चंद्र सतह तापभौतिकीय प्रयोग, लैंडिंग साइट के आसपास भूकंपीयता को मापने के लिए चंद्र भूकंपीय गतिविधि के लिए साधन भूतय प्लाज्मा घनत्व और इसकी विविधताओं का अनुमान लगाने के लिए लैंगमुइर जांच और नासा से एक निष्क्रिय लेजर रिट्रोरिफ्लेक्टर ऐरे को चंद्र लेजर रेंजिंग अध्ययनों के लिए सम्मिलित है। लैंडिंग साइट के आसपास मौलिक संरचना प्राप्त करने के लिए अल्फा कण एक्स-रे स्पेक्ट्रोमीटर और लेजर प्रेरित ब्रेकडाउन स्पेक्ट्रोस्कोप उपकरण सम्मिलित किए गए हैं।

तकनीकी विनिर्देश:

प्रमोचक राकेट	: LVM3 M4/ चंद्रयान -3 मिशन
प्रणोदक भाग	: 2148 किग्रा
लैंडर भाग (विक्रम)	: 26 किग्रा के (प्रज्ञान)

संदर्भ– इसरो (ISRO) की आधिकारिक वेबसाइट एवं दृष्टि

–आशीष शर्मा
कनिष्ठ तकनीशियन
पदार्थ विज्ञान कार्यक्रम

—◆◆◆—

विरासत
नीलकंठ : मोर

प्रयाग जैसे शांत और सांस्कृतिक आश्रम-नगर में नखास-कोना एक विचित्र स्थिति रखता है। जितने दंगे-फसाद और छुरे-चाकूबाजी की घटनाएँ घटित होती हैं, सबका अशुभारंभ प्रायः नखासकोने से ही होता है।

उसकी कुछ और भी अनोखी विशेषताएँ हैं। घास काटने की मशीन के बड़े-चौड़े चाकू से लेकर फरसा, कुल्हाड़ी, आरी, छुरी आदि में धार रखने वालों तक की दुकाने वहीं हैं। अतः गोंठिल चाकू-छुरी को पैना कराने के लिए दूर जाने की आवश्यकता नहीं है। आँखों का सरकारी अस्पताल भी वहीं प्रतिष्ठित है। शत्रु-मित्र की पहचान के लिए दृष्टि कमजोर हो तो वहाँ ठीक करायी जा सकती है, जिससे कोई भूल होने की संभावना न रहे। इसके अतिरिक्त एक और अस्पताल उसी कोने में गरिमापूर्ण ऐतिहासिक स्थिति रखता है। आहत, मुमूर्ष व्यक्ति की दृष्टि से यहाँ विशेष सुविधा है। यदि अस्पताल के अंतःकरणों में स्थान न मिले, यदि डॉक्टर, नर्स आदि का दर्शन दुर्लभ रहे तो बरामदे-पोर्टिको आदि में विश्राम प्राप्त हो सकता है और यदि वहाँ भी स्थानाभाव हो, तो अस्पताल के कंपाउंड में मरने का संतोष तो मिल ही सकता है।

हमारे देश में अस्पताल, साधारण जन को अंतिम यात्रा में संतोष देने के लिए ही तो हैं। किसी प्रकार घसीटकर, टाँगकर उस सीमा-रेखा में पहुंचा आने पर बीमार और उसके परिचारकों को एक अनिर्वचनीय आत्मिक सुख प्राप्त होता है। इससे अधिक पाने की न उसकी कल्पना है, न मांग। कम-से-कम इस व्यवस्था ने अंतिम समय मुख में गंगाजल, तुलसी, सोना डालने की समस्या तो सुलझा ही दी है।

यहाँ मत्स्य क्रय-विक्रय केंद्र भी है और तेल-फुलेल की दुकान भी, मानो दुर्गंध-सुगंध में समरसता स्थापित करने का अनुष्ठान है।

पर नखासकोने के प्रति मेरे आकर्षण का कारण उपयुक्त विशेषताएँ नहीं हैं। वस्तुतः वह स्थान मेरे खरगोश, कबूतर, मोर, चकोर आदि जीव-जंतुओं का कारागार भी है। अस्पताल के सामने की पटरी पर कई छोटे-छोटे घर और बरामदे हैं, जिनमे ये जीव-जन्तु तथा इनके कठोर हृदय जेलर दोनों निवास करते है।

छोटे-बड़े अनेक पिंजरे बरामदे में और बाहर रखे रहते है। जिनमें दो खरगोशों के रहने के स्थान में पच्चीस और चार चिड़ियों के रहने के स्थान में पचास भरी रहती हैं। इन छोटे जीवों को हंसने-रोने के लिए भिन्न ध्वनियाँ नहीं मिली हैं। अतः इनका महा-कलरव महा-क्रंदन भी हो तो आश्चर्य नहीं। इन जीवों के कष्टनिवारण का कोई उपाय न सूझ पाने पर भी मैं अपने आपको उस ओर जाने से नहीं

रोक पाती। किसी पिंजड़े में पानी न देखकर उसमें पानी रखवा देती हूँ। दाने का अभाव हो तो दाना डलवा देती हूँ। कुछ चिड़ियों को खरीदकर उड़ा देती हूँ। जिनके पंख काट दिये गये हैं, उन्हें ले आती हूँ। परंतु फिर जब उस ओर पहुँच जाती हूँ, सब कुछ पहले जैसा ही कष्टकर मिलता है।

उस दिन एक अतिथि को स्टेशन पहुंचाकर लौट रही थी कि चिड़ियों और खरगोशों कि दुकान का ध्यान आ गया और मैंने ड्राईवर को उसी ओर चलने का आदेश दिया।

बड़े मियां चिड़ियावाले कि दुकान के निकट पहुँचते ही उन्होने सड़क पर आकर ड्राईवर को रोकने का संकेत दिया। मेरे कोई प्रश्न करने के पहले ही उन्होने कहना आरंभ किया, "सलाम गुरु जी! पिछली बार आने पर आपने मोर के बच्चों के लिए पूछा था। शंकर गढ़ से एक चिड़ीमार दो मोर के बच्चे पकड़ लाया है, एक मोर है, एक मोरनी। आप पाल लें। मोर के पंजों से दवा बनती है, सो ऐसे ही लोग खरीदने आए थे। आखिर मेरे सीने में भी तो इंसान का दिल है। मारने के लिए ऐसी मासूम चिड़ियों को कैसे दे दूँ। टालने के लिए मैंने कह दिया, "गुरु जी ने मँगवाये हैं। वैसे यह कमबख्त रोजगार ही खराब है। बस, पकड़ो-पकड़ो, मारा-मारो।"

बड़े मियां के भाषण की तूफान मेल के लिए कोई निश्चित स्टेशन नहीं है। सुनने वाला थककर जहाँ रोक दे, वहीं स्टेशन मान लिया जाता है। इस तथ्य के परिचित होने के कारण ही मैंने बीच ही में उन्हें रोककर पूछा, "मोर के बच्चे हैं कहाँ? बड़े मियाँ के हाथ के संकेत का अनुसरण करते हुए मेरी दृष्टि एक तार के छोटे से पिंजड़े तक पहुँची, जिसमें तीतरों के समान दो बच्चे बैठे थे। मोर हैं, यह मान लेना कठिन था! पिंजड़ा इतना संकीर्ण था कि वे पक्षी-शावक जाली के गोल फ्रेम में कसे-जड़े चित्र-जैसे लग रहे थे।

मेरे निरीक्षण के साथ-साथ बड़े मियाँ की भाषण-मेल चली जा रही थी। "ईमान कसम, गुरुजी, चिड़ीमार ने मुझसे इस मोर के जोड़े के नकद तीस रुपये लिये हैं। बारहा कहा, भई जरा सोच तो अभी इनमें मोर की कोई खासियत भी है कि तू इतनी कीमत ही माँगने चला! पर वह मूँजी क्यों सुनने लगा। आपका खयाल करके अछता-पछताकर

देना ही पड़ा। अब आप जो मुनासिब समझे।" अस्तु, तीस चिड़ीमार के नाम के और पाँच बड़े मियाँ के ईनाम के देकर जब मैंने वह छोटा पिंजरा कार में रखा तब मानो वह जाली के चौखट का चित्र जीवित हो गया। दोनों पक्षी शावकों के छटपटाने से लगता था, मानो पिंजड़ा ही सजीव और उड़ने योग्य हो गया है।

घर पहुँचने पर सब कहने लगे, तीतर है, मोर कहकर ठग लिया।

कदाचित अनेक बार ठगे जाने के कारण ही ठगे जाने की बात मेरे चिढ़ जाने की दुर्बलता बन गई है। अप्रसन्न होकर मैंने कहा "मोर के क्या सुर्खाब के पर लगे हैं। है तो पक्षी ही। और तीतर बटेर क्या लंबी पूँछ न होने के कारण उपेक्षा योग्य पक्षी हैं?" चिढ़ा दिये जाने के कारण ही संभवतः उन दोनों पक्षियों के प्रति मेरे व्यवहार और यत्न में कुछ विशेषता आ गई।

पहले अपने पढ़ने-लिखने के कमरे में उनका पिंजड़ा रखकर उसका दरवाजा खोला, फिर दो कटोरों में सत्तू की छोटी-छोटी गोलियाँ और पानी रखा। वे दोनों चूहेदानी-जैसे पिंजड़े से निकलकर कमरे में मानो खो गये। कभी मेज के नीचे घुस गये, कभी आलमारी के पीछे। अंत में इस लुका-छिपी से थककर, उन्होने मेरी रद्दी कागजों की टोकरी को अपने नए बसेरे का गौरव प्रदान किया। दो-चार दिन वे इसी प्रकार दिन में इधर-उधर गुप्तवास करते और रात में रद्दी की टोकरी में प्रकट होते रहे। फिर आश्वस्त हो जाने पर कभी मेरी मेज पर, कुर्सी पर और कभी मेरे सिर पर अचानक आविर्भाव होने लगे। खिड़कियों में तो जाली लगी थी, पर दरवाजा मुझे निरंतर बंद रखना पड़ता था। खुला रखने पर चित्रा (मेरी बिल्ली) इन नवागंतुकों का पता लगा सकती थी और तब उसकी शोध का क्या परिणाम होता, यह अनुमान करना कठिन नहीं है। वैसे वह चूहों पर भी आक्रमण नहीं करती, परंतु यहाँ तो सर्वथा अपरिचित पक्षियों की अनधिकार चेष्टा का प्रश्न था। उसके लिए दरवाजा बंद रहे और ये दोनों (उसकी दृष्टि में) ऐरे-गैरे मेरी मेज को अपना सिंहासन बना लें, यह स्थिति चित्रा-जैसी अभिमानिनी मार्जारी के लिए असह्य ही कही जाएगी।

जब मेरे कमरे का काया-कल्प चिड़ियाखाने के रूप में होने लगा, तब मैंने बड़ी कठनाई से दोनों चिड़ियों को पकड़कर जाली के बड़े घर में पहुंचाया जो मेरे जीव-जंतुओं का सामान्य निवास है।

दोनों नवागंतुकों ने पहले से रहनेवालों में वैसा ही कुतूहल जगाया, जैसे नववधू के आगमन पर परिवार में स्वाभाविक है। लक्का कबूतर नाचना छोड़कर दौड़ पड़े चारों ओर घूम-घूम कर गुटर्गुं-गुटर्गुं की रागिनी अलापने लगे। बड़े खरगोश सभ्य सभासदों के समान क्रम में बैठकर गंभीर भाव से उनका निरीक्षण करने लगे। ऊन की गेंद जैसे छोटे खरगोश उनके चारों ओर उछल-कूद मचाने लगे। तोते मानो भली-भाँति देखने के लिए एक आँख बंद करके उनका परीक्षण करने लगे। ताम्रचूड़ झूले से उतर कर और दोनों पंखों को फैलाकर शोर करने लगा। उस दिन मेरे चिड़ियाघर में मानो भूचाल आ गया।

धीर-धीरे दोनों मोर बच्चे बढ़ने लगे। उनका कायाकल्प वैसा ही क्रमशः और रंगमय था, जैसा इल्ली से तितली का बनना। मोर के सिर की कलगी और सघन, ऊंची तथा चमकीली हो गयी। चोंच अधिक बंकिम और पैनी हो गयी, गोल आँखों में इंद्रनील की नीलाभ धुत्ति झलकने लगी। लंबी लील-हरित ग्रीवा की हर भंगिमा में धूपछाँही तरंगे उठने-गिरने लगीं। दक्षिण-वाम दोनों पंखों में स्लेटी और सफेद आलेखन स्पष्ट होने लगे। पूँछ लंबी हुई और उसके पंखों पर चंद्रिकाओं के इंद्र-धनुषी रंग उद्दीप्त हो उठे। रंगरहित पैरों को गर्वीली गति ने एक नयी गरिमा से रंजित कर दिया। उसका गर्दन ऊँचीकर देखना, विशेष भंगिमा के साथ उसे नीचाकर दाना चुगना, पानी पीना, टेढ़ीकर शब्द सुनना आदि क्रियाओं में जो सुकुमारता और सौंदर्य था, उसका अनुभव देखकर ही किया जा सकता है। गति का चित्र नहीं आँका जा सकता।

मोरनी का विकास मोर के समान चमत्कारिक तो नहीं हुआ, परंतु अपनी लंबी धूपछाँही गर्दन, हवा में चंचल कलगी, पंखों की श्याम-श्वेत पत्रलेखा, मंथर गति आदि से वह भी मोर उपयुक्त सहचारिणी होने का प्रमाण देने लगी।

नीलाभ ग्रीवा के कारण मोर का नाम रखा गया नीलकंठ और उसकी छाया के समान रहने के कारण मोरनी का नामकरण हुआ राधा।

मुझे स्वयं ज्ञान नहीं कि कब नीलकंठ ने अपने-आपको चिड़ियाघर के निवासी जीव-जंतुओं का सेनापति और संरक्षक नियुक्त कर लिया। सवेरे ही वह सब खरगोश, कबूतर आदि की सेना एकत्रकर उस ओर ले जाता, जहाँ दाना दिया जाता है और घूम-घूमकर मानो सबकी रखवाली करता रहता। किसी ने कुछ गड़बड़ की और वह अपने तीखे चंचु-प्रहार से उसे दंड देने दौड़ा।

खरगोश के छोटे और शरीर बच्चों को वह चोंच से उनके कान पकड़कर उठा लेता था और जब तक वे आर्त्तक्रंदन न करने लगते, उन्हें अधर में लटकाये रखता। कभी-कभी उसकी पैनी चोंच से खरगोश के बच्चों का कर्णवेध-संस्कार हो जाता था, पर वे फिर कभी उसे क्रोधित होने का अवसर न देते थे। उसके दंड-विधान के समान ही उन जीव जंतुओं के प्रति उसका प्रेम भी असाधारण था। प्रायः वह मिट्टी में पंख फैलाकर बैठ जाता और वे सब उसकी लंबी पूँछ और सघन पंख में छुआ-छुऔवल सा खेलते रहते थे।

एक दिन उसके अपत्यस्नेह का हमें ऐसा प्रमाण मिला कि हम विस्मित हो गये। कभी-कभी खरगोश कबूतर आदि सभी साँप के लिए आकर्षण बन जाते हैं और यदि जाली के घर में पानी निकलने के लिए बनी नालियों में से कोई खुली रह जाए तो उसका भीतर प्रवेश पा लेना सहज हो जाता है। ऐसी ही किसी स्थिति में एक साँप जाली के भीतर पहुँच गया।

सब जीव-जंतु भागकर इधर-उधर छिप गये, केवल एक शिशु खरगोश साँप की पकड़ में आ गया। निगलने के प्रयास में साँप ने उसका आधा पिछला शरीर तो मुंह में दबा रखा था, शेष आधा जो बाहर था, उससे चीं-चीं का स्वर भी इतना तीव्र नहीं निकाल सकता था कि किसी को स्पष्ट सुनाई दे सके। नीलकंठ दूर ऊपर झूले में सो रहा था। उसी से चौकन्ने कानों ने उस मंद स्वर की व्यथा पहचानी और वह पूँछ-पंख समेटकर सर्र से एक झपट्टे में नीचे आ गया।

संभवतः अपनी सहज चेतना से ही उसने समझ लिया होगा कि साँप के फन पर चोंच मारने से खरगोश भी घायल हो सकता है। उसने साँप को फन के पास पंजे से दबाया और फिर चोंच से इतने प्रहार किये कि वह अधमरा हो गया। पकड़ ढीली पड़ते ही खरगोश का बच्चा मुख से निकल आया, परंतु निश्चेष्ट सा वहीं पड़ा रहा।

राधा ने सहायता देने की आवश्यकता नहीं समझी, परंतु अपनी मंद केका से किसी असामान्य घटना की सूचना सब ओर प्रसारित कर दी। माली पहुँचा, फिर हम सब पहुँचे। नीलकंठ जब साँप के दो खंड कर चुका, तब उस शिशु खरगोश के पास गया और रात भर उसे पंखों के नीचे उष्णता देता रहा।

कार्तिकेय ने अपने युद्ध-वाहन के लिए मयूर को क्यों चुना होगा, यह उस पक्षी का रूप और स्वभाव देख कर समझ में आ जाता है। मयूर कलाप्रिय वीर पक्षी है, हिंसक मात्र नहीं। इसी से उसे बाज, चील आदि की श्रेणी में नहीं रखा जा सकता, जिनका जीवन ही क्रूरकर्म है।

नीलकंठ में उसकी जातिगत विशेषताएँ तो थीं ही, उनका मानवीकरण भी हो गया था।

मेघों की साँवली छाया में अपने इंद्रधनुष के गुच्छे जैसे पंखों को मंडलाकार बनाकर जब वह नाचता था, तब उस नृत्य में एक सहजात लय-ताल रहता था। आगे-पीछे दाहिने-बायें क्रम से घूमकर वह किसी अलक्ष्य समपर ठहर-ठहर जाता था।

राधा नीलकंठ के समान नहीं नाच सकती थी, परंतु उसकी गति में भी छंद रहता था। वह नृत्यमग्न नीलकंठ के दाहिनी ओर के पंख को छूती हुई बायीं ओर निकल आती थी और बाएँ पंख को स्पर्शकर दाहिनी ओर। इस प्रकार उसकी परिक्रमा में भी एक पूरक ताल का परिचय मिलता था। नीलकंठ नें कैसे समझ लिया कि उसका नृत्य मुझे बहुत भाता है, यह तो नहीं बताया जा सकता, परंतु अचानक एक दिन वह मेरे जालीघर के पास पहुँचते ही, अपने झूले से उतरकर नीचे आ गया और पंखों का सतरंगी मंडलाकार छाता तानकर नृत्य की भंगिमा में खड़ा हो गया। तब से यह नृत्य-भंगिमा नित्य का क्रम बन गयी। प्रायः मेरे साथ कोई न कोई देशी-विदेशी अतिथि भी पहुँच जाता था और नीलकंठ की मुद्रा को अपने प्रति सम्मान-सूचक समझकर विस्मयाभिभूत हो उठता था। कई विदेशी

महिलाओं ने उसे 'परफैक्ट जेंटिलमैन' की उपाधि दे डाली।

जिस नुकीली पैनी चोंच से वह भयंकर विषधर को खंड-खंड कर सकता था, उसी से मेरी हथेली पर रखे हुये भुने चने ऐसी कोमलता से हौले-हौले उठाकर खाता था कि हँसी भी आती थी और विस्मय भी होता था। फलों के वृक्षों से अधिक उसे पुष्पित और पल्लवित वृक्ष भाते थे।

वसंत में जब आम के वृक्ष सुनहली मंजरियों से लद जाते थे, अशोक नए लाल पल्लवों से ढक जाता था, तब जालीघर में वह इतना अस्थिर हो उठता था कि उसे बाहर छोड़ देना पड़ता। पर जब तक राधा को भी मुक्त न किया जाए, वह दरवाजे के बाहर ही उपालंभ की मुद्रा में खड़ा रहता। मंजरियों के बीच उसकी नीलाभ झलक संध्या की छाया से सुनहले सरोवर में नीले कमल-दलों का भ्रम उत्पन्न कर देती थी। हवा से तरंगायित अशोक के रक्तिमाभ पत्तों में तो वह मूँगे के फलक पर मरकत से बना चित्र जान पड़ता था।

नीलकंठ और राधा की सबसे प्रिय ऋतु तो वर्षा ही थी। मेघों के उमड़ आने से पहले ही वे हवा में उसकी सजल आहट पा लेते थे और तब उनकी मंद्र केका की गूंज-अनुगूँज तीव्र से तीव्रतर होती हुई मानों बूँदों के उतरने के लिए सोपान-पंक्ति बनने लगती थी। मेघ के गर्जन के ताल पर ही उसके तन्मय नृत्य का आरंभ होता। फिर मेघ जितना अधिक गरजता, बिजली जितनी अधिक चमकती, बूँदों की रिमझिमाहट जितनी तीव्र होती जाती नीलकंठ के नृत्य का वेग उतना ही अधिक बढ़ता जाता और उसकी केका का स्वर उतना ही मंद्र से मंद्रतर होता जाता। वर्षा के थम जाने पर वह दाहिने पंजे पर दाहिना पंख और बाएँ पर बायाँ पंख फैलाकर सुखाता। कभी-कभी वे दोनों एक-दूसरे के पंखों से टपकने वाली बूँदों को चोंच से पी-पी कर पंखों का गीलापन दूर करते रहते।

इस आनंदोत्सव की रागिनी में बेमेल स्वर कैसे बज उठा, यह भी एक करुण कथा है।

एक दिन मुझे किसी कार्य से नखासकोने से निकलना पड़ा और बड़े मियाँ ने पहले के समान कार को रोक लिया। इस बार किसी पिंजड़े

की ओर नहीं देखूँगी, यह संकल्प करके मैंने बड़े मियां की विरल दाढ़ी और सफेद डोरे से कान में बँधी ऐनक को ही अपने ध्यान का केंद्र बनाया। पर बड़े मियां के पैरों के पास जो मोरनी पड़ी थी उसे अनदेखा करना कठिन था। मोरनी राधा-जैसी ही थी। उसके मूँज से बंधे दोनों पंजों की उँगलियाँ टूटकर इस प्रकार एकत्र हो गयी थी कि वह खड़ी ही नहीं हो सकती थी।

बड़े मियाँ की भाषण-मेल फिर दौड़ने लगी–"देखिये गुरु जी, कमबख्त चिड़ीमार ने बेचारी का क्या हाल किया है। ऐसे कभी चिड़िया पकड़ी जाती है। आप न आई होती तो मैं उसी के सिर इसे पटक देता। पर आपसे भी यह अधमरी मोरनी ले जाने को कैसे कहूँ!"

सारांश यह कि सात रुपये देकर मैं उसे अगली सीट पर रखवाकर घर ले आयी और एक बार फिर मेरे पढ़ने-लिखने का कमरा अस्पताल बना। पंजों की मरहम-पट्टी और देखभाल करने पर वह महीने भर में अच्छी हो गयी। उँगलियाँ वैसी ही टेढ़ी-मेढ़ी रहीं, परंतु वह ठूंठ जैसे पंजों पर डगमगाती हुई चलने लगी। तब उसे जालीघर में पहुंचाया गया और नाम रखा गया कुब्जा। कुब्जा नाम के अनुरूप स्वभाव से भी वह कुब्जा प्रमाणित हुई।

अब तक नीलकंठ और राधा साथ रहते थे। अब कुब्जा उन्हें साथ देखते ही मारने दौड़ती। चोंच से मार-मार कर उसने राधा की कलगी नोच डाली, पंख नोच डाले। कठिनाई यह थी कि नीलकंठ उससे दूर भागता था और वह उसके साथ रहना चाहती थी। न किसी जीव-जन्तु से उसकी मित्रता थी, न वह किसी को नीलकंठ के समीप आने देना चाहती थी। उसी बीच राधा ने दो अंडे दिये, जिनको वह पंखों में छिपाए बैठी रहती थी। पता चलते ही कुब्जा ने चोंच मार-मार कर राधा को ढकेल दिया और फिर अंडे फोड़कर ठूँठ जैसे पैरों से सब ओर छितरा दिये।

हमने उसे अलग बंद किया तो उसने दाना-पानी छोड़ दिया और जाली पर सिर पटक-पटक कर घायल कर लिया।

इस कलह-कोलाहल से और उससे भी अधिक राधा की दूरी से बेचारे नीलकंठ की प्रसन्नता का अंत हो गया।

कई बार वह जाली के घर से निकल भागा। एक बार कई दिन भूखा-प्यासा आम की शाखाओं में छिपा बैठा रहा, जहां से बहुत पुचकारकर मैंने उतारा। एक बार मेरी खिड़की के शेड पर छिपा रहा।

मेरे दाना देने जाने पर वह सदा के समान अब पंखों को मंडलाकार बनाकर खड़ा हो जाता था, उसकी चाल में थकावट और आँखों में एक शून्यता रहती थी। अपनी अनुभवहीनता के कारण ही मैं आशा करती रही कि थोड़े दिन बाद सबमें मेल हो जाएगा। अंत में तीन-चार मास के उपरांत एक दिन सबेरे जाकर देखा कि नीलकंठ पूँछ-पंख फैलाये धरती पर उसी प्रकार बैठा हुआ है, जैसे खरगोश के बच्चों को पंख में छिपाकर बैठता था। मेरे पुकारने पर भी उसके न उठने पर संदेह हुआ।

वास्तव में नीलकंठ मर गया था। "क्यों" का उत्तर तो अब तक नहीं मिल सका है। न उसे कोई बीमारी हुई, न उसके रंग-बिरंगे फूलों के स्तबक जैसे शरीर पर किसी चोट का चिन्ह मिला। मैं अपने शाल में लपेटकर उसे संगम ले गयी। जब गंगा की बीच धारा में उसे प्रवाहित किया गया, तब उसके पंखों कि चंद्रिकाओं से बिंबित-प्रतिबिंबित होकर गंगा का चौड़ा पाट एक विशाल मयूर के समान तरंगित हो उठा।

नीलकंठ के न रहने पर राधा तो निश्चेष्ट-सी कई दिन कोने में बैठी रही। वह कई बार भाग कर लौट आया था, अतः वह प्रतीक्षा के भाव से द्वार पर दृष्टि लगाये रहती थी। पर कुब्जा ने कोलाहल के साथ खोज-ढूंढ आरंभ की। खोज के क्रम में वह प्रायः जाली का दरवाजा खुलते ही बाहर निकल आती थी और आम, अशोक, कचनार आदि की शाखाओं में नीलकंठ को ढूंढती रहती थी। एक दिन वह आम से उतरी ही थी कि कजरी (अल्सेशियन कुत्ती) सामने पड़ गई। स्वभाव के अनुसार उसने कजली पर चोंच से प्रहार किया। परिणामतः कजली के दो दाँत उसकी गर्दन पर लग गये। इस बार उसका कलह-कोलाहल और द्वेष-प्रेम भरा जीवन बचाया न जा सका। परंतु इन तीन पक्षियों ने मुझे पक्षी-प्रकृति की विभिन्नता का जो परिचय दिया है, वह मेरे लिए विशेष महत्व रखता है।

राधा अब प्रतीक्षा में ही दुकेली है। आषाढ़ में जब आकाश मेघाच्छन्न हो जाता है, तब वह कभी ऊँचे झूले और कभी अशोक की डाल पर अपनी केका को तीव्र से तीव्रतर करके नीलकंठ को बुलाती रहती है।

– साभार
महादेवी वर्मा

फाल्गुन- फाल्गुन हिंदू वर्ष का आखिरी और 12वां महीना होता है। फाल्गुन महीने में भगवान शिव और श्रीकृष्ण की खास पूजा का विधान है। धार्मिक दृष्टि से फाल्गुन का महीना पूजा-पाठ के लिए बहुत शुभ माना जाता है। चंद्र देव की आराधना के लिए फाल्गुन मास सबसे उपयुक्त समय होता है। शास्त्रों के अनुसार इसी माह में चंद्रमा का जन्म हुआ था। आयुर्वेद में भी फाल्गुन मास को रोग मुक्ति का महीना बताया गया है। इस महीने में वसंत ऋतु की शुरुआत होने से दिल-दिमाग में सकारात्मक विचार के साथ-साथ उत्साह और उमंग भी बनी रहती है। साथ ही मौसम परिवर्तन का संधिकाल होने से इस महीने खान-पान में छोटे-छोटे बदलाव करने पर बीमारियों से बचा जा सकता है।

अतिथि रचनाकार
भारतीय खाद्य निगम- "देश का खाद्य कवच"

भारतीय खाद्य निगम (भा.खा.नि.) की स्थापना खाद्य निगम अधिनियम, 1964 के तहत 14 जनवरी, 1965 को की गई थी। भारतीय खाद्य निगम, खाद्य और सार्वजनिक वितरण विभाग, उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय, भारत सरकार के अधीन एक सार्वजनिक क्षेत्र का उपक्रम है। भारतीय खाद्य निगम भारत सरकार की खाद्य नीतियों को निष्पादित करने के लिए उत्तरदायी मुख्य एजेंसी है। भारतीय खाद्य निगम के कार्यों में मुख्यतः भारत सरकार की ओर से खाद्यानों की खरीद, भण्डारण, परिचालन, वितरण और बिक्री करना शामिल है।

भारत सरकार, खाद्यानों का न्यूनतम समर्थन मूल्य (एमएसपी) तय करती है जिस पर किसानों से खाद्यान की अधिप्राप्ति की जाती है। राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) सहित भारत सरकार की विविध कल्याणकारी योजनाओं के अधीन विभिन्न राज्यों/संघ शासित प्रदेशों के लिए खाद्यानों को केन्द्रीय निर्गम मूल्य (सी.आई.पी.) तथा खाद्यान की मात्रा का आबंटन भारत सरकार द्वारा तय किया जाता है। एफसीआई की भूमिका किसानों की संकट विक्रय (distress sales) की संभावना को कम करने और खाद्य सुरक्षा संरचना के माध्यम से एमएसपी व्यवस्था से अटूट रूप से जुड़ी हुई है।

कार्य-संबंधी और वित्तीय विशेषताएं

भारतीय खाद्य निगम ने सरकार के प्रमुख कार्यक्रम अर्थात प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) की सफलता के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इस योजना के अंतर्गत, भारतीय खाद्य निगम पूरे वर्ष देश के सभी राज्यों में खाद्यानों का वितरण और परिचालन सुनिश्चित करती है। भारतीय खाद्य निगम के प्रयासों से 82 करोड़ लाभार्थियों को पीएमजीकेएवाई के अंतर्गत मुफ्त खाद्यान की आपूर्ति हुई। इसके अलावा, भारतीय खाद्य निगम ने परिवारों को राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के अंतर्गत मूल्य सब्सिडाइज्ड राशन की आपूर्ति की। इस अवधि के दौरान, भारतीय खाद्य निगम स्टाफ, अधिकारियों और श्रमिकों ने खरीद, परिचालन और निर्गम संचालन के सभी कार्यों को निर्बाध रूप से किया। इन योजनाओं को लागू करने के लिए, भारतीय खाद्य निगम ने मांग के अनुसार अपने संचालन को सफलतापूर्वक बढ़ाया।

खरीदः-

क्र.सं.	खाद्यान	2021–2022	2020–2021	वृद्धि
1.	गेहूं	398	333	20%
2.	चावल	343	334	3%
	योग	**741**	**667**	**11%**

परिचालनः— भारतीय खाद्य निगम ने 2021-22 के दौरान खाद्यान की 638 (एलएमटी) लाख मीट्रिक टन मात्रा की ढुलाई की, जबकि 2020-21 के दौरान 594 एलएमटी मात्रा परिचालित की गई थी। पिछले वर्ष की तुलना में वर्ष 2021-22 के दौरान परिचालन में लगभग 7% की वृद्धि हुई थी।

खरीद :—

क्र.सं.	खाद्यान	2021–2022	2020–2021	वृद्धि
1.	गेहूं	448	324	38%
2.	चावल	320	364	-12%
	योग	**768**	**688**	**12%**

कोविड-19 योजनाओं के अंतर्गत बिक्री

भारत सरकार ने कोरोना वायरस के कारण हुए आर्थिक व्यवधान की वजह से गरीबों को होने वाली कठिनाइयों को दूर करने के लिए गरीबोन्मुखी पहल की घोषणा की। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई) के अंतर्गत एनएफएसए आवंटन के अलावा एनएफएसए (एएवाई, पीएचएच और डीबीटी) के अंतर्गत कवर किए गए सभी लाभार्थियों को प्रति माह 5 किलोग्राम प्रति व्यक्ति की दर से अतिरिक्त खाद्यान आवंटित करने का निर्णय लिया गया। अन्य योजनाओं जैसे प्रवासियों/फंसे हुए प्रवासियों के लिए, गैर-एनएफएसए कार्डधारक के लिए गैर-सरकारी संगठनों/ चैरिटेबल संस्थानों के लिए भी जरूरतमंद लोगों को खाद्यान जारी करने की घोषणा की गई। विशेष कोविड-19 योजनाओं के अंतर्गत वर्ष 2021-22 के दौरान, कुल 329.90 लाख मीट्रिक टन की मात्रा का खाद्यान जारी किया गया, जिनका विवरण इस प्रकार हैः

खरीदः-

क्र.सं.	योजना	गेंहू	चावल
1.	प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना (पीएमजीकेएवाई)	175.42	149.34
2.	गैर–एनएफएसए कार्ड धारक	3.03	2.10
3.	गैर सरकारी संगठन / चैरिटेबल	0.0001	0.008
	योग	**178.45**	**151.44**

भारत सरकार द्वारा खाद्य सब्सिडी

ऋण और ब्याज के बोझ को कम करने के लिए, भारत सरकार ने वित्तीय वर्ष 2021-22 के दौरान निगम को रु0 2,08,929 करोड़ की खाद्य सब्सिडी मंजूर की जिसने निगम की स्थिति को सशक्त किया।

निगम की कार्य प्रणाली-खरीद तथा बिक्री

निगम, केन्द्रीय पूल के लिए गेहूं और धान/चावल की अधिप्राप्ति सीधे तौर पर किसानों से और राज्य सरकारों तथा उनकी एजेंसियों के

माध्यम से भी करता है। मूल्य समर्थन योजना (PSS) के अंतर्गत गेहूं और चावल की अधिप्राप्ति की गई थी। निगम, भारत सरकार के अधिदेश के अनुसार दालों की भी अधिप्राप्ति करता है। केन्द्रीय पूल के अंतर्गत राज्य सरकार/एजेंसियों द्वारा अधिप्राप्त खाद्यान की गणना निगम द्वारा भौतिक (Physically) रूप से अधिग्रहीत करने के बाद की जाती है।

खाद्यान की बिक्री, भारत सरकार द्वारा प्रत्येक राज्य/संघ शासित प्रदेश को किए गए आबंटन के अनुसार राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) के अंतर्गत तथा अन्य कल्याणकारी योजनाओं जैसे कि पीएमजीकेएवाई, अन्नपूर्णा, पोषाहार कार्यक्रमों, मध्याह्न भोजन योजना तथा रक्षा सेवाओं/सी.आर.पी.एफ. को की गई। बाज़ार मूल्यों में स्थिरता लाने तथा महंगाई रोकने (Inflation) के उद्देश्य से ई-ऑक्शन के माध्यम से घरेलू खपत के लिए खुली बाजार बिक्री भी की गई।

राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम

एनएफएसए के लिए खाद्यान की आपूर्ति भारत सरकार द्वारा किए गए मासिक आवंटन के प्रति राज्य सरकार और उनकी एजेंसियों के माध्यम से की जाती है। निगम पूरे देश में स्थित अपने भण्डारण स्थानों के माध्यम से खाद्यानों की आपूर्ति की व्यवस्था करता है। उचित दर पर दुकानों को वितरण की व्यवस्था राज्य सरकारों/केन्द्र शासित प्रदेशों द्वारा की जाती है। परिचालन, हैंडलिंग और भण्डारण में कई बाधाओं के बावजूद, पहाड़ी राज्यों और उत्तरी-पूर्वी राज्यों जैसे अन्य दुर्गम क्षेत्रों सहित सभी राज्यों/केन्द्र शासित प्रदेशों में पर्याप्त खाद्यान स्टॉक उपलब्ध कराया जाता है।

रक्षा सेवाओं और अर्ध सैनिक बलों को बिक्रीः वर्ष 2021-22 के दौरान रक्षा सेवाओं/अन्य अर्ध सैनिक बलों/बीएसएफ/सीआरपीएफ को 1.09 एलएमटी (0.05 एलएमटी गेहूं तथा 1.04 एलएमटी चावल) खाद्यान की बिक्री की गई थी।

खुली बाजार बिक्री योजना

वर्ष 2021-22 के दौरान, ई-ऑक्शन के माध्यम से थोक उपभोक्ताओं/निजी व्यापारियों/राज्य सरकारों के लिए खुली बाजार बिक्री योजना (घरेलू) के अंतर्गत 70.93 लाख मीट्रिक टन गेहूं तथा 11.27 लाख मीट्रिक टन चावल की मात्रा का विक्रय किया गया था।

हाल के वर्षों की कुछ उपलब्धियांः-

उत्कृष्टता रेटिंग

मंडल कार्यालयों में 45 दिनों के आवंटन के स्टॉक को बनाए रखने की उत्कृष्ट रेटिंग (100%) के लिए, भारतीय खाद्य निगम (96%) रेटिंग प्राप्त करने में सक्षम हो सका, चूंकि वर्ष 2021-22 के दौरान मंडल कार्यालयों में 96.39% खाद्यान का 45 दिनों का आवंटन बनाए रखा गया था।

आयात एवं निर्यात

आर्थिक लागत पर मोज़ाम्बिक की शिपमेंट के लिए विदेश मंत्रालय (एमईए) को 500 मीट्रिक टन चावल निर्गत किया गया, तिमोर-लेस्ते की शिपमेंट के लिए विदेश मंत्रालय (एमईए) को 2000 मीट्रिक टन चावल निर्गत किया गया, अफगानिस्तान की शिपमेंट के लिए विदेश मंत्रालय (एमईए) को निर्गत 10020 मीट्रिक टन गेहूं (50000 मीट्रिक टन की कुल आपूर्ति के लिए) किया गया।

भण्डारण

खाद्यानों का भण्डारण क्षमता में वृद्धिः बेहतर ऑपरेशनल आउटरीच के साथ लाभकारी एमएसपी के कारण खरीद ने नई ऊंचाइयों को छू लिया है। भण्डारण क्षमता की अल्पकालिक सर्वाधिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए, भारतीय खाद्य निगम ने खाद्यानों के भण्डारण के लिए भण्डारण क्षमता हेतु शॉर्ट टर्म हायरिंग को चुना है। निगम के पास 426.69 एलएमटी की भण्डारण क्षमता उपलब्ध है और खाद्यान के लिए राज्य एजेंसियों के पास केन्द्रीय पूल स्टॉक के लिए 361.73 एलएमटी उपलब्ध है। नतीजतन, खाद्यान के केन्द्रीय पूल स्टॉक के भण्डारण के लिए कुल कवर्ड क्षमता 788.42 एलएमटी उपलब्ध है।

भण्डारण की आवश्यकता को पूरा करने और देश भर में खाद्यानों के सुरक्षित भण्डारण को सुनिश्चित करने के लिए, सरकार भण्डारण क्षमता बनाने के लिए निजी उद्यमियों, केन्द्रीय भण्डारण निगम (सीडब्ल्यूसी) और राज्य भण्डारण निगम (एसडब्ल्यूसी) के माध्यम से निजी उद्यमी गारंटी (पीईजी) योजना लागू कर रही है। उपभोक्ता मामले, खाद्य और सार्वजनिक वितरण मंत्रालय द्वारा पीईजी योजना के अलावा प्लान योजना और साइलो के माध्यम से क्षमता वृद्धि को भी अत्यधिक महत्व दिया जाता है।

गोदामों को मानकीकृत करने के लिए, भारतीय खाद्य निगम के स्वामित्व वाले सभी गोदामों को वेयरहाउसिंग डेवलपमेंट रेगुलेटरी अथॉरिटी (डब्ल्यूडीआरए) द्वारा प्रमाणित किया जा रहा है। अब तक, भारतीय खाद्य निगम के 555 स्वामित्व वाले गोदामों में से, 531 गोदामों का प्रमाणीकरण डब्ल्यूडीआरए द्वारा किया जा चुका है और शेष प्रमाणीकरण की प्रक्रिया में है।

भारतीय गुणवत्ता परिषद (क्यूसीआई) द्वारा भारतीय खाद्य निगम के स्वामित्व और किराए पर लिए गए सभी गोदामों का तृतीय पक्ष मूल्यांकन पूरा कर लिया गया है। क्यूसीआई के आकलन में दिए गए फीडबैक के आधार पर डिपो के बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए कार्य योजना तैयार कर दी गई है। कार्य योजना में उत्कृष्ट रेटिंग से नीचे श्रेणीबद्ध डिपो के लिए उत्कृष्ट रेटिंग के लिए बेंचमार्किंग सुनिश्चित करने की रणनीति शामिल है। अधिकारियों की समिति ने डिपो और मानक संचालन प्रक्रियाओं (एसओपी) के उन्नयन के लिए कार्य योजना को अंतिम रूप दिया है।

निजी गोदाम योजना (पी.डब्ल्यू.एस.) की निविदाओं में डब्ल्यूडीआरए के साथ पंजीकरण अथवा डब्ल्यूडीआरए के साथ पंजीकरण के लिए आवेदन को अनिवार्य शर्त बना दिया गया है।

भारतीय खाद्य निगम, सीडब्ल्यूसी और एसडब्ल्यूसी की मौजूदा स्वामित्व वाली कवर्ड क्षमताओं का स्टैक आकार मानदंडों को मौजूदा 140 एमटी प्रति स्टैक से संशोधित कर 174 एमटी प्रति स्टैक किया गया है। स्टैक के आकार में वृद्धि के परिणामस्वरूप अतिरिक्त 69.46 एलएमटी क्षमता से भण्डारण क्षमता में वृद्धि हुई है।

निगम ने 179.30 एलएमटी कैप (राज्य एजेंसियों की 142.53 एलएमटी और भा.खा.नि. की 36.77 एलएमटी) के उपयोग को बंद करने के लिए बहुआयामी रणनीति तैयार की है।

निजी उद्यमी गारंटी योजना

देश में अतिरिक्त भण्डारण क्षमता की आवश्यकता के संबंध में, भारत सरकार/भारतीय खाद्य निगम ने निजी उद्यमी, सीडब्ल्यूसी तथा एसडब्ल्यूसी के माध्यम से भण्डारण क्षमता के निर्माण के लिए वर्ष 2008 तथा 2009 में निजी उद्यमी गारंटी (पीईजी) योजना बनाई है।

साइलो

साइलो के रूप में भण्डारण सुविधाओं का विस्तार/आधुनिकीकरण: भण्डारण क्षमता में वृद्धि और अपग्रेडेशन/आधुनिकीकरण के लिए, भारत सरकार ने (पीपीपी) सार्वजनिक निजी भागीदारी मोड के अंतर्गत देशभर में 100 एलएमटी साइलो के निर्माण के लिए एक कार्य योजना को मंजूरी दी। 100 एलएमटी में से, 29 एलएमटी क्षमता वाले साइलो का निर्माण भा.खा.नि. द्वारा, 2.5 एलएमटी सीडब्ल्यूसी द्वारा और 68.5 एलएमटी राज्य सरकार द्वारा पीपीपी मोड के अंतर्गत किया जाना था जिनमें से 24 स्थानों पर 12.25 एलएमटी की क्षमता पूरी की जा चुकी है और उपयोग में लाया जा चुका है और 33 स्थानों पर 16.50 एलएमटी का कार्यान्वयन किया जा रहा है। इनमें से अधिकांश साइलोज रेलवे साइडिंग वाले हैं।

हब एंड स्पोक मॉडल के अंतर्गत साइलो: भूमि अधिग्रहण के मुद्दे के कारण रेलवे साइडिंग वाले साइलो परियोजनाओं में अत्यधिक देरी को ध्यान में रखते हुए, भारत सरकार ने हब एंड मॉडल के अंतर्गत साइलो के विकास के लिए निर्णय लिया है जिसमें हब स्पोक साइलो के सीमित स्थानों पर रेलवे साइडिंग/कंटेनर रेल टर्मिनल (सीआरटी) की आवश्यकता होगी जो सड़क मार्ग से जुड़े होंगे। इस मॉडल में 249 स्थानों पर 111.125 लाख मीट्रिक टन क्षमता वाले साइलो की योजना 3 चरणों में बनाई गई है। डीएफपीडी ने दिनांक 25.04.2002 के पत्र के माध्यम से 14 स्थानों (10.125 एलएमटी) पर डीबीएफओटी (डिजाइन, बिल्ड, फाइनेंस, ऑपरेट और ट्रान्सफर) के लिए बोली दस्तावेजों की मंजूरी दे दी है और तदनुसार, दिनांक 26.04.2022 को निविदाएं जारी की गई हैं।

उच्चस्तरीय समिति (एचएलसी) की सिफारिश के भागस्वरूप, भारतीय खाद्य निगम ने कॉन्कर (CONCOR) के माध्यम से कुछ मार्गों पर खाद्यानों के कंटेनरीकृत परिचालन की शुरूआत की है और इसे पारंपरिक रेलवे रैकों की तुलना में किफायती पाया गया है।

भारतीय खाद्य निगम आंध्र प्रदेश से केरल में निर्धारित डिपो तक तटीय शिपिंग और सड़क परिचालन से जुड़े चावल के मल्टी मॉडल परिवहन का भी कार्य कर रहा है।

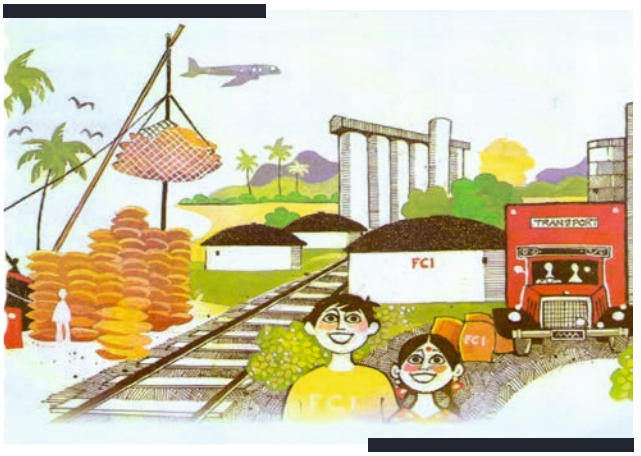

गुण नियंत्रण

भारतीय खाद्य निगम के गुणवत्ता नियंत्रण (क्यूसी) विंग में योग्य तथा प्रशिक्षित कार्मिक हैं जिन्हें खाद्यानों की अधिप्राप्ति तथा परिरक्षण का कार्य सौंपा गया है। भारत सरकार द्वारा निर्धारित विनिर्देशनों के अनुसार खाद्यानों की अधिप्राप्ति की जाती है तथा गुणवत्ता की निगरानी के लिए भण्डारण के दौरान नियमित रूप से निरीक्षण किए जाते हैं। भौतिक विश्लेषण के लिए भण्डार से प्रतिनिधित्व नमूने लिए जाते हैं ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि गुणवत्ता मानक भारत सरकार द्वारा निर्धारित विनिर्देशनों को पूरा करते हैं। खाद्यान के नमूनों को एनएबीएल मान्यता प्राप्त प्रयोगशालाओं को भी भेजा जाता है तथा एफएसएस अधिनियम के अधीन पैरामीटर के अनुरूप जांच भी करवाई जाती है।

भारतीय खाद्य निगम की टेस्टिंग प्रयोगशाला एफएसएस एक्ट, 2006

के अनुसार गुणवत्ता का आश्वासन दिलाने के लिए खाद्यानों की गुणवत्ता की प्रभावी मॉनीटरिंग हेतु देशभर में फैली हुई है ताकि उपभोक्ताओं के संतुष्टि स्तर में सुधार किया जा सके। देशभर की प्रयोगशालाओं को नवीनतम उपकरणों से अपग्रेड किया जा रहा है। आईएफएस (खाद्य सुरक्षा संस्थान) प्रयोगशाला, गुरुग्राम को स्टेट ऑफ आर्ट लैब के रूप में अपग्रेड किया गया है। इसके अलावा, 04 आंचलिक प्रयोगशालाओं रायपुर, हैदराबाद, भुवनेश्वर और पंचकुला में आधुनिकीकरण का कार्य प्रक्रियाधीन है। इन प्रयोगशालाओं में फोर्टिफाइड चावल में फोर्टिफिकेट तत्वों सहित रासायनिक मापदण्डों के परीक्षण के लिए तकनीकी सुविधा होगी और वर्ष 2022 के अंत तक इसे चालू कर दिया जाएगा। गुणवत्ता नियंत्रण ढांचे को मजबूत करने और पारदर्शिता बढ़ाने के लिए, कम्प्यूटराइज्ड राइस एनालाइजर की केएमएस 2016-17 के बाद से चावल अधिप्राप्ति संचालन की शुरूआत की गई है तथा वर्तमान में प्रशिक्षण के उद्देश्य से प्रमुख अधिप्राप्ति क्षेत्रों में 29 केन्द्रों और आईएफ़एस प्रयोगशाला में खाद्यानों का कम्प्यूटरीकृत विश्लेषण किया जा रहा है।

निष्कर्ष

भारत जैसे कृषि प्रधान देश में एफसीआई न केवल करोड़ों भारतीयों के लिए खाद्य बैंक के रूप में कार्य कर रहा है, बल्कि कीमतों को नियंत्रित करने के लिए एक बफर के रूप में भी कार्य कर रहा है। निगम का लक्ष्य किसानों को एमएसपी देना, खाद्यानों के मूल्यों को नियंत्रित करना एवं पोषण संबंधी सुरक्षा मुहैया कराना है।

कोरोना संकट के दौरान एफसीआई की प्रासंगिकता को भलीभांति देखा गया व निगम के कर्मचारियों ने कोरोना वारियर्स के रूप में दिन-रात काम किया। समय के साथ नई तकनीकों, उपकरणों और संचालनों को मानकीकृत किया गया है जो सराहनीय है। निगम के प्रत्येक कर्मचारी की प्रेरणा देश को खाद्य सुरक्षा प्रदान करना है।

निगम में डिजिटल एवं आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस के बढ़ते कदम

- भारतीय खाद्य निगम द्वारा खाद्यानों की खरीद के दौरान अनाज की गुणवत्ता को सुनिश्चित करने हेतु आर्टीफिशियल इंटेलीजेंस तथा इमेज प्रोसेसिंग की तकनीक पर आधारित एडवांस फूड ग्रेन एनालाइजर विकसित किया गया है। यह एनालाइजर खरीद के दौरान मानवीय भूल चूक की शंका को समाप्त करता है जिससे उपभोक्ताओं तक उच्च गुणवत्ता का खाद्यान पहुंचना सुनिश्चित होता है।

- प्रधानमंत्री पोषण शक्ति योजना के तहत देश के प्राइमरी विद्यालयों में निःशुल्क पौष्टिक भोजन वितरित किया जा रहा है

भारतीय खाद्य निगम के अध्यक्ष एवं सह प्रबंध निदेशक श्री अशोक के. मीणा व कार्यकारी निदेशक डॉ0 अजीत कुमार सिन्हा कृत्रिम बुद्धिमत्ता आधारित स्वचालित अनाज विश्लेषक (एआईएजी) का अवलोकन करते हुए इसे सरकारी एजेंसियों द्वारा खाद्यान खरीद के क्षेत्र में पहली बार उपयोग में लाया जा रहा है।

जो बच्चों के शारीरिक एवं मानसिक विकास में सहायक सिद्ध हो रहा है। इस योजना से 11.2 लाख विद्यालयों में पढ़ रहे 11.8 करोड़ बच्चे लाभान्वित हो रहे हैं।

- खाद्य सुरक्षा के लिए लागू की गई विभिन्न योजनाओं के तहत दिये जाने वाले खाद्यान की गुणवत्ता अच्छी हो, इसके लिए सरकार द्वारा मिक्स इंडीकेटर मेथड का उपयोग किया जाता है।

- आम उपभोक्ताओं के कल्याण के लिए लॉन्च किया गया भारत आटा, आपूर्ति बढ़ाने और खुदरा बाजार में आटे की कीमतों को नियंत्रित करने में प्रभावी रहा है।

- एफसीआई का डिजिटल शिफ्ट किसानों के आर्थिक हितों की रक्षा के उद्देश्यों को पूरा कर रहा है। खरीद प्रक्रिया का डिजिटलीकरण और डिजिलॉकर के साथ केन्द्रीय खाद्यान खरीद पोर्टल का एकीकरण किसानों को उनकी फसल के लिए भुगतान की स्वतः उत्पन्न रसीद प्रदान करता है।

- निगम के सभी फाइल्स का कार्य अब ई-ऑफिस व एचआरएमएस के द्वारा किया जाता है, सभी निविदाएं GeM पोर्टल के माध्यम से की जाती हैं।

- सभी डिपो सीसीटीवी युक्त हैं व सारा लेखा-जोखा ऑनलाइन सॉफ्टवेयर DOS के माध्यम से होता है जो पूरी तरह रियल टाइम में किया जाता है।

- नितिन वर्मा, मंडल प्रबंधक
भारतीय खाद्य निगम, कानपुर

बालबत्तीसी
सूरज नाराज है

बहुत दिनों से सूरज किसी गहरी चिंता में डूबा था। फिर धीरे-धीरे उसकी यह चिंता क्रोध में बदलने लगी। उसकी भौंहें तन गई थीं और वह बहुत गुस्से में नजर आ रहा था। "सूरज तो सौरमंडल का स्वामी है। उसे क्या चिंता हो सकती है?" बुध ने सूरज की परिक्रमा करते हुए धीमी आवाज में अपने पड़ोसी शुक्र से कहा।

सूरज के परिवार में कानाफूसी होने लगी। वहाँ कई छोट-बड़े ग्रह, ग्रहिका, धूमकेतु, उल्का आदि हैं। वे सभी सूरज की परिक्रमा करते हैं।

शुक्र का अंदाज ही निराला है। वह बुध के समान नहीं, बल्कि उलटी दिशा में सूरज की परिक्रमा करता है। वह धीरे से बोला, "अब तो सूरज आग बबूला हो रहा है, भाई!"

सूरज अपना प्रकाश फैलाता रहता है। सभी उसके चेहरे पर बदलते भावों को पहचान लेते हैं। शायद ही सूरज कभी इतना गुस्से में दिखाई दिया होगा। धीरे-धीरे यह बदलाव सभी ग्रहों ने महसूस किया। वे बहुत परेशान हो रहे थे। उन्हें डर था कि सूरज का गुस्सा किस पर उतरेगा?

शुक्र के बाद पृथ्वी और फिर मंगल का स्थान है। मंगल लाल रंग का दिखाई देता है। इस वजह से उसे उग्र स्वभाव का माना जाता है यानी कि गुस्से वाला ग्रह, जबकि अपनी लाल मिट्टी के कारण वह लाल रंग का दिखता है।

"क्या तुम जानते हो, सूरज इतना गुस्से में क्यों है?" शुक्र ने मंगल से पूछा। उन सभी की तरह मंगल भी सूरज की परिक्रमा करते हुए बोला, "मैं नहीं जानता हूँ। अगर किसी को मालूम हो सकता है तो वह पृथ्वी है। वही शायद बता सके।"

सूरज के बदलते स्वभाव को देखकर मंगल भी हैरान था, लेकिन उसका यह सुझाव सभी को पसंद आया। वे जानते थे कि सूरज की कृपा हमेशा धरती पर बनी रहती है। अन्य ग्रहों के मुकाबले सूरज का पृथ्वी से गहरा नाता है। इसकी मुख्य वजह है-केवल पृथ्वी पर ही जीवन होना। पृथ्वी पर पानी, हवा और मिट्टी भी हैं। ये सभी आदमी, पशु-पक्षी और पेड़-पौधों के लिए बहुत जरूरी हैं। इन्हें सूरज की भी बहुत आवश्यकता रहती है। सूरज के बिना जीव-जन्तु, पेड़-पौधे कोई भी जीवित नहीं रह सकता है।

शुक्र ने मंगल से कहा, "तुम ही पृथ्वी से पूछो।"

मंगल ने अपनी पड़ोसी पृथ्वी से तुरंत पूछा, "तुम जरूर जानती होगी कि सूरज क्यों गुस्से में है?"

पृथ्वी भी ग्रह है और सूरज के परिवार की सदस्य भी। वह भी सूरज के चारों ओर घूमती रहती है, लेकिन उसका सूरज से घनिष्ठ संबंध है। वह सूरज पर निर्भर रहती है।

मंगल के प्रश्न से पृथ्वी कुछ बेचैन हो गई। वह सोचने लगी कि क्या और कैसे बताऊँ? वह अच्छी तरह जानती थी कि सूरज क्यों गुस्से में है और बाकी ग्रहों को इस बारे में बताना भी चाहती थी, ताकि परिवार के अन्य सदस्य उसकी भी स्थिति को समझ सकें । वरना वे बाद में उसे दोषी कहेंगे। लेकिन कैसे बताए, वह इसी दुविधा में थी।

अंतरिक्ष में नीली-हरी दिख रही पृथ्वी ने भूमिका बाँधी। वह बतलाने लगी, "सूरज का प्रकाश रोजाना आसमान से जमीन तक फैलता है। उसकी गरमी में ही ऊर्जा है। उसी प्रकाश से मेरे यहाँ जीवन है।"

मंगल ने बेचैन होते हुए कहा, "हम जानते हैं कि तुम्हारे यहाँ जीवन है। सभी जीव और पेड-पौधे सूरज के प्रकाश से जीवित हैं। तुम राज की बात बताओ।" मंगल को सच जानने की जल्दी थी, परंतु पृथ्वी धीर और गंभीर दिख रही थी। वह इस समय अपनी नाजुक स्थिति की वजह से सारी बात अपने को बचाते हुए कहना चाहती थी। भले ही परिवार के अन्य सदस्य सूरज के गुस्से का राज जानने के लिए बेचैन हों। उनके पास उसकी बात सुनने के अलावा और कोई उपाय भी तो नहीं था।

पृथ्वी ने अपनी बात जारी रखी, "मैं खुद भी सूरज की गरमी सोखती रहती हूँ। उससे बीज अंकुरित होते हैं। कई फसलें पैदा होती हैं। मेरे समुद्रों का कुछ पानी सूरज के प्रकाश की गरमी से भाप बनकर ऊपर उड़ता रहता है, जिससे बाद में वर्षा होती है। मौसम और जल-चक्र चलते हैं।"

बुध ने पृथ्वी से कहा, "और कितनी भूमिका बाँधोगी?"

पृथ्वी ने तपाक से जवाब दिया, "बस थोड़ी और! अब तुम्हें राज बताने जा रही हूँ।"

वे चुप हो गए। फिर पृथ्वी कहने लगी, "मैं सूरज की गरमी उतनी ही सोखती हूँ, जितनी मुझे जरूरत होती है। सूरज की मुझ पर पड़ने वाली कुल गरमी का एक-तिहाई हिस्सा पलट कर अंतरिक्ष में जाता है। तुम सभी देखते ही होगे?"

सभी एक संग बोले, "देखते जरूर हैं, लेकिन कभी ज्यादा ध्यान नहीं दिया।" "तभी तुम्हें सूरज के नाराज होने का राज मुझसे पूछना पड़ा। वरना खुद ही जान जाते कि अब अंतरिक्ष तक कम गरमी लौट रही है!"

सबके मुख से निकला, "ओह! तो इसीलिए सूरज पहले चिंतित और अब गुस्से में है।"

सौरमंडल के बाहरी छोर पर लट्टू की तरह घूमते प्लूटो ने पूछा, "क्या तुम अब सूरज की गरमी को पहले से ज्यादा सोखने लगी हो?" प्लूटो ने पृथ्वी की बात का मतलब निकालते हुए पूछा।

प्लूटो आकार में बाकी ग्रहों से बहुत ही छोटा है। इसलिए बौना होने के कारण उसे अब ग्रह नहीं माना जाता।

पृथ्वी को बुरा लगा। उसे प्लूटो की बात पसंद नहीं आई, क्योंकि

अन्य ग्रह भी उसे शक की नजरों से देखने लगे थे। उसने तपाक से उत्तर दिया, "मैं जब इतनी गरमी सहन नहीं कर सकती तो ज्यादा सोखने की मूर्खता क्यों करूंगी?"
अब पृथ्वी के चाँद से चुप नहीं रहा गया। वह पृथ्वी का चक्कर लगाता रहता है। चाँद ने कहा, "गरमी अब भी पृथ्वी से पलट कर वातावरण में पहुँच रही है।"
ग्रहों के अपने-अपने चाँद हैं। किसी के पास तो कई चाँद हैं। उन्होने पृथ्वी के चाँद को घूर कर देखा। वह बेचारा सकपकाते हुए चक्कर लगाने में लग गया।
अचानक पृथ्वी ने सूरज के नाराज होने के राज से परदा उठाते हुए कहा, "मुझसे पलटकर अंतरिक्ष में जाती सूरज की गरमी रास्ते में चोरी हो रही है!"
यह सुनते ही सभी ग्रह दंग रह गए। किसी को पहले विश्वास ही नहीं हुआ। भला किसमें इतनी हिम्मत है कि सूरज की गरमी चोरी कर ले?
बृहस्पति ने कुछ सोचते हुए पूछा, "वह गरमी कहाँ चोरी हो रही है?"
पृथ्वी को अंदाजा था कि कई सवाल होंगे। उसके उत्तर देने से पहले ही बाकी सवालों कि बौछार हो गई। किसी ने पूछा, "कौन चोरी कर रहा है?" तो किसी ने पूछा, "चोरी का माल कहाँ जा रहा है?"
अब पृथ्वी को घबराहट होने लगी। इन सवालों के जवाब का सीधा संबंध उसी से था। अपनी स्थिति को साफ करते हुए उसने बताया, "मेरे यहाँ से पलट कर अंतरिक्ष में जाती काफी गरमी को वातावरण में रोक लिया जाता है। उस पर मेरा कोई नियंत्रण नहीं है।"
गैस के गोले बृहस्पति ने अपना सवाल दोहराया, "तो क्या वह गरमी वहीं बंदी रहती है?"

एक लंबी साँस भरते हुए पृथ्वी बोली, "यही तो मेरा दुर्भाग्य है। वह गरमी वातावरण से दोबारा मेरी ओर भेज दी जाती है। मैं और अधिक कष्ट सहन नहीं कर सकती!"
पृथ्वी से सभी को हमदर्दी होने लगी। उन्हें यह भी संतोष हुआ कि सूरज किसी ग्रह से गुस्सा नहीं है, क्योंकि उनमें से कोई भी यह चोरी नहीं कर रहा है।
अब समस्या यही है कि कौन यह नुकसान पहुंचाने का काम कर रहा है? पृथ्वी पर गरमी बढ़ते रहने से सभी की हानि होगी। मंगल ने धरती से हमदर्दी जताते हुए पूछा, "वातावरण से सूरज की गरमी तुम तक दोबारा कौन और कैसे भेज रहा है?"
पृथ्वी ने दुखी होते हुए कहा, "पहली बात, यह तो मैं जानती नहीं हूँ। दूसरी, जान कर भी क्या कर लूँगी?"

सूरज सभी ग्रहों की बातें सुन रहा था। अब उसे ही पता लगाना था कि इसके पीछे किसका हाथ है, ताकि वह उसे सजा दे सके।
सूरज न्यायप्रिय है। उसने घोषणा की, "मैं इसका पता लगाऊँगा कि इसके लिए कौन जिम्मेदार है? मैं उसे सजा भी दूँगा।"
सुबह होते ही सूरज ने पूरे मामले की छानबीन करने के लिए अपनी किरणों को आदेश दिया, "तुम सब आसमान से पृथ्वी तक जाती हो। तुम इस बात का पता लगाओ कि धरती से पलटती मेरी भेजी गरमी को कौन वातावरण में रोक रहा है और उसे वापस पृथ्वी पर भेज रहा है? वह कौन है और कहाँ से आया है?"
अपनी किरणों को आदेश देकर, सूरज खुद भी पृथ्वी की ओर ध्यान से देखने लगा। सूरज की अनगिनत किरणें उसके आदेश का पालन करने के लिए चारों दिशाओं में फैल गईं।

वे धरती तक पहुँची और उनमें से बहुत सी किरणें खेतों पर भी पड़ीं। उन्होने धान की फसल को ध्यान से देखा तो चकित रह गईं। सूरज ने अपनी किरणों की बातें सुनते रहने का फैसला लिया था। किरणें उसे बता रही थीं, "अरे! यह धान के खेतों से गैस उड़ती हुई ऊपर जा रही है।" गैस लोगों को दिखाई नहीं देती, लेकिन सूरज की किरणों से कुछ भी छिप नहीं सकता।

इस गैस में रंग और गंध नहीं थी। वह जमीन पर कई जगहों से वातावरण में पहुँच रही थी। इस बात की पुष्टि उन किरणों ने की, जो वहाँ पर थीं, जहाँ गड्ढे पाटने के लिए कूड़ा-कचरा भरा गया था। वह कचरा सड़ने से गैस पैदा कर रहा था, जिसे मीथेन गैस कहते हैं। वही जो धान के खेतों से निकलती रहती है।
"देखो, ईंधन के जलने पर भी मीथेन गैस निकलती है।" वाहनों पर पहुँचती सूरज की किरणों ने अपनी साथी किरणों को दिखाया।
अब बारी आई पृथ्वी के वातावरण से गुजरती उन किरणों की, जो बीच में लटके जल-कणों को देख रही थी। वे कहने लगीं, "कमाल है! ये असंख्य जल-कण मीथेन गैस को ठिकाना दे रहे हैं। यहाँ काफी मीथेन इकट्ठा हो चुकी है।"

सूरज बोला, "यह बाद में देखेंगे की वातावरण में ये घुसपैठिए क्या कर रहें हैं ? अभी तो इनके साथियों का पता लगाना है।"
बहुत शातिर है- नाइट्रस ऑक्साइड। मीथेन के संबंध में सूरज को मिल चुकी खबर से सबक लेते हुए उसने खुद ही बताना उचित समझा। वह सूरज से कहने लगी, "सूरज महाराज, आप से क्या छिप सकता है? धरती पर देखिए, खेतों में रासायनिक खादें अंधाधुंध डाल रहे हैं और डीजल, पट्रोल जैसे ईंधन खेत-खलियान, घर, वाहन, कारखानों में पानी से भी ज्यादा इस्तेमाल हो रहे हैं। इनसे मेरा जन्म होता है और लगातार बढ़ती भी हूँ, किन्तु दोषी मैं नहीं हूँ।"
कड़ी नजर डालते सूरज नें डांट लगाई, "क्या तुमने कभी बताया कि तुम वातावरण में कम-से-कम 100 वर्षों के लिए डेरा डाल रही हो?"
मीथेन की आयु 12 वर्ष होती है। अब वातावरण में घुसपैठ करती नाइट्रस ऑक्साइड ने चुप्पी साध ली। उसे यह कहना भी सही नहीं लगा कि पृथ्वी के वातावरण में घुस आने के लिए तुम्हें क्यों बताती? हालाँकि, पृथ्वी भी सूरज के परिवार का हिस्सा है।
सूरज की किरणों को कार्बन डाइऑक्साइड के बारे में सूचना नहीं भेजनी पड़ी। सूरज को पता था। वातावरण में सबसे ज्यादा नाइट्रोजन, फिर ऑक्सीजन और थोड़ी-सी कार्बन डाइऑक्साइड होती है। लेकिन आज ध्यान से देखने पर हैरानी हुई। अब कार्बन डाइऑक्साइड की मात्र बहुत बढ़ गई है। सूरज इस गैस की करतूत एक तो अच्छी तरह जानता था। दूसरा, इसकी आयु लगभग 100 वर्ष होती है, इसकी उसे ज्यादा चिंता थी।
"तुमने क्यों वातावरण में शरण ली है? तुम्हें तो जमीन पर जंगलों और समुद्रों में ठिकाने बनाने होते हैं।" सूरज नें स्वयं पूछताछ की।
चूँकि पेड़-पौधे अपना भोजन बनाने के लिए कार्बन डाइऑक्साइड लेते रहते हैं। इसलिए जंगल ही उसका ठिकाना होता है। रह गई बची हुई गैस, तो वह समुद्रों में समा जाती है।

कार्बन डाइऑक्साइड खूब जानती थी कि उसकी छवि अच्छी नहीं है। उससे जीवों का दम घुटता है, लेकिन कहावत है-'बद अच्छा, बदनाम बुरा' वह बदनाम ज्यादा है। वरना वह ही आग बुझाने के काम आती है। पानी में उसका भी एक अंश होता है। फिर भी वह कुछ सोचकर अपने फायदे नहीं बता पाई। वह सीधा मुद्दे की बात पर आ गई, "बेशक मेरा प्रिय ठिकाना जंगल है, लेकिन धरती पर जंगल धीरे-धीरे साफ किए जा रहे हैं। देखो, अब भी जंगल में पेड़ों को काटा जा रहा है। अमेजन के विशाल जंगल भी नहीं बचे। अब दुनिया में इतने अधिक पेड़-पौधे नहीं हैं कि मैं वहाँ ठहर सकूँ।"

सूरज भी सोच में पड़ गया। वह देख रहा था। दुनिया में करोड़ों वाहनों, मशीनों और कारखानों से धुएँ के बादल निकल रहे हैं। उनमें काफी कार्बन डाइऑक्साइड भी होती है। फिर सूरज ने पूछा, "और समुद्रों में क्यों नहीं बसेरा करती हो?"

कार्बन डाइऑक्साइड ने तपाक से उत्तर दिया, "उनके भी पेट भरे हुए है।"

थोड़ी देर के लिए शांति छा गई। फिर कार्बन डाइऑक्साइड ने दुखी होते हुए कहा, "अब मैं कहाँ जाती? इसलिए मुझे आसमान में शरण लेनी पड़ी। मैं तो बेघर हो गई महाराज।"

अभी सूरज कुछ नहीं कहना चाहता था। वह पहले इन घुसपैठियों कि करतूत पता लगाने के बाद दोषियों को अपना फैसला सुनाएगा। उसे वातावरण में सीएफसी भी दिखाई दे रही थी। वह बुदबुदाते हुए बोला, "क्या ये सब काफी नहीं थे कि अप्राकृतिक गैस एसएफ6 भी वातावरण में भर रही है?" सूरज को अप्राकृतिक गैस से शिकायत उसकी बहुत लंबी आयु के कारण थी। उसने सोचा, "अवश्य ही ये सब कोइ-न-कोई गुल खिला रहे होंगे। क्या ये सब मिलकर किसी काम को अंजाम दे रहे हैं?"

तभी वातावरण से नीचे पृथ्वी पर जाती किरणों ने वह अदृश्य चादर देख ली, जो वहाँ मुख्यतः कार्बन डाइऑक्साइड ने तान रखी थी। उसे नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन आदि का सहयोग मिल रहा था। उन किरणों ने तुरंत सूरज को सूचित कर दिया, "महाराज, यह चादर हमें धरती तक जाने देती है, लेकिन धरती से पलट कर आती गरमी को रोकती है, उसे अंतरिक्ष में जाने नहीं देती है।"

सूरज के लिए उसकी गरमी का बंदी होना कोई अनोखी बात नहीं। इससे पहले धरती पर पहुँचती कितनी ही किरणों कि गरमी वहाँ बनाए गए कई काँच के घरों में कैद हो चुकी थी। लोग पौधों के लिए भी काँच के घर बनाते हैं। उनमें सूरज की ऊर्जा अंदर तो चली जाती है, फिर वह वापस नहीं निकलती, बल्कि वहाँ कैद हो जाती है।

अब तक सूरज जान चुका था कि वातावरण में उसकी पृथ्वी से पलटती ऊर्जा रोक ली जाती है। इस काम में कार्बन डाइऑक्साइड का साथ नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन, सीएफसी आदि दे रहे थे। उसे मुख्य दोषी कार्बन डाइऑक्साइड लग रही थी।

सूरज ने भारी मन से कहा, "तो धरती से अंतरिक्ष की ओर लौटती गरमी की चोरी हो रही है। चोरी के माल का क्या होता है?"

इस बार किरणों के उत्तर ने सूरज को चौंका दिया। उन्होने बताया, "वह गरमी दोबारा पृथ्वी पर जाती है।"

"ओह" सूरज सन्न रह गया।

सब बातें पृथ्वी सुन रही थी। उसे लगा कि यही अवसर है, जब वह अपनी दुखभरी कहानी सूरज महाराज को बताए। वरना कहीं उसे ही दोषी न मान लिया जाए। पृथ्वी इस डर से जल्दी-जल्दी कहने लगी, "मैं बहुत कष्ट में हूँ। मेरे यहाँ गरमी बढ़ती जा रही है। दुनिया में गरमी बढ़ते रहने से बहुत गड़बड़ियाँ हो रही हैं। वातावरण में बदलाव के कारण मौसम पर असर पड़ रहा है। सरदी में अधिक ठंड, गरमी के मौसम में बहुत ज्यादा गरमी और वर्षा ऋतु में मूसलाधार बारिश से बाढ़ आ रही है।"

सूरज ने कहा, "जलवायु-परिवर्तन से यही सब होता है। उसका असर वातावरण में ही नहीं, जमीन पर भी पड़ता है। बुरे कर्मों का परिणाम किसी-न-किसी को तो भुगतना ही है।"

इस समय सूरज किसी दार्शनिक जैसा बोल रहा था। उसे सारी बात मालूम हो गयी थी। अब दोषियों को पहचानने के बाद फैसला देना था। यही सोच कर कार्बन डाइऑक्साइड और उसके साथी परेशान थे।

कभी ऐसा नहीं हुआ कि सूरज का फैसला सही न हो, इसलिए अब तक सौरमंडल को किसी तरह की हानि नहीं हुई थी। सूरज के परिवार के सभी ग्रह उसकी परिक्रमा नियम से करते आ रहे थे। धरती के वातावरन में भी ऐसा खतरनाक बदलाव देखा और सुना नहीं गया था।

"मेरी अन्तरिक्ष को पलटती ऊर्जा की चोरी हो रही है। यह ऐसा अपराध है, जिसे क्षमा नहीं किया जा सकता है। इसमें कार्बन डाइऑक्साइड, नाइट्रस ऑक्साइड, मीथेन और सीएफसी विशेष तौर पर शामिल हैं।" चारों दोषियों के होश उड़ गए। उन्हें विश्वास हो गया की हमें सूरज छोड़ेगा नहीं। पृथ्वी की असहनीय तकलीफ से जमीन कराह रही थी। सभी प्राणी दुखी थे। पेड़ -पौधे भी बढ़ती गरमी से परेशान थे। सदियों से जमी बरफ पिघलने लगी थी, जिससे कई निचले क्षेत्रों में समुद्र का जल-स्तर बढ़ने से उनके डूब जाने की संभावना बढ़ गई थी।

"चारों आरोपी जरूर हैं, लेकिन अपराधी नहीं।" सूरज के यह कहने पर सभी चौंक पड़े। उसने आरोपी और अपराधी में अंतर बताते हुए कहा, "इन चारों पर दोष लगाया गया है, लेकिन इन्हें कौन दोषी बना रहा है, जिससे ये वातावरण में शरण लेने को मजबूर हैं। जो इन चारों को जन्म दे, या इन्हें बढ़ाए, केवल वही अपराधी है।"

वहाँ असली अपराधी का नाम सबके एक स्वर में बोलने पर गूँजा, "मानव...!"

तब सूरज ने दुखी होकर अपना फैसला सुनाया, "मनुष्य ही इन सबके लिए जिम्मेदार है। उसे ही इनसे हो रहे जलवायु-परिवर्तन से भयंकर ठंड, भीषण गरमी और मूसलाधार बारिश के साथ-साथ बाढ़ झेलने की सजा भुगतनी है।"

धरती को छोड़ कर दूसरे सभी ग्रह खुश नजर आ रहे थे। पृथ्वी ने शिकायत की। उसने कराहते हुए सूरज से कहा, "मुझे बढ़ती गरमी से असहनीय कष्ट हो रहा है। मेरा वातावरण भी और अधिक दूषित होता जा रहा है। इन सब में मेरा क्या दोष है? मुझे क्यों सजा मिल रही है?"

सूरज नें दो टूक उत्तर दिया, "मानव को तुम आश्रय देती हो। वे अपराधी हैं और अपराधियों को आश्रय देना भी अपराध है।"

बेचारी धरती को मनुष्य के बिना सोचे समझे कर्मों का परिणाम भुगतना पड़ रहा है। वह जलवायु परिवर्तन से होने वाली हानि से कराह रही है।

अब सभी जानते हैं - सूरज किससे नाराज है?

—साभार : इदरीस सिद्दीकी

कार्यालयीन टिप्पणियाँ

भुगतान के लिए स्वीकृत	Accepted for payment
इस मामले में कार्रवाई की जा चुकी है।	Action has already been taken in the matter
सक्षम प्राधिकारी की मंजूरी आवश्यक है।	Competent authority's sanction is necessary
आवश्यक कार्रवाई करें।	Do the needful
प्रारूप तदनुसार संशोधित कर दिया गया है।	Draft has been amended accordingly
उत्तर का प्रारूप अनुमोदन के लिए प्रस्तुत है।	Draft reply is put up for approval
यथा संशोधित भेज दें।	Issue as amended
कृपया पावती भेजें।	Kindly acknowledge
तदनुसार सूचित कर दिया जाए।	May be informed accordingly
नीचे रखे मसौदे के अनुसार आवश्यक अधिसूचना अनुमोदनार्थ प्रस्तुत है।	Necessary notification as per draft placed below for approval
इस मामले पर अभी तक कोई निर्णय नहीं हुआ है।	No decision has so for been taken in the matter
कृपया सभी को दिखाकर फाइल कर दें।	Please circulate and file
प्रस्ताव अपने आप में स्पष्ट है।	The proposal is self explanatory
अपेक्षित कागज-पत्र नीचे रखे हैं।	The required papers are placed below

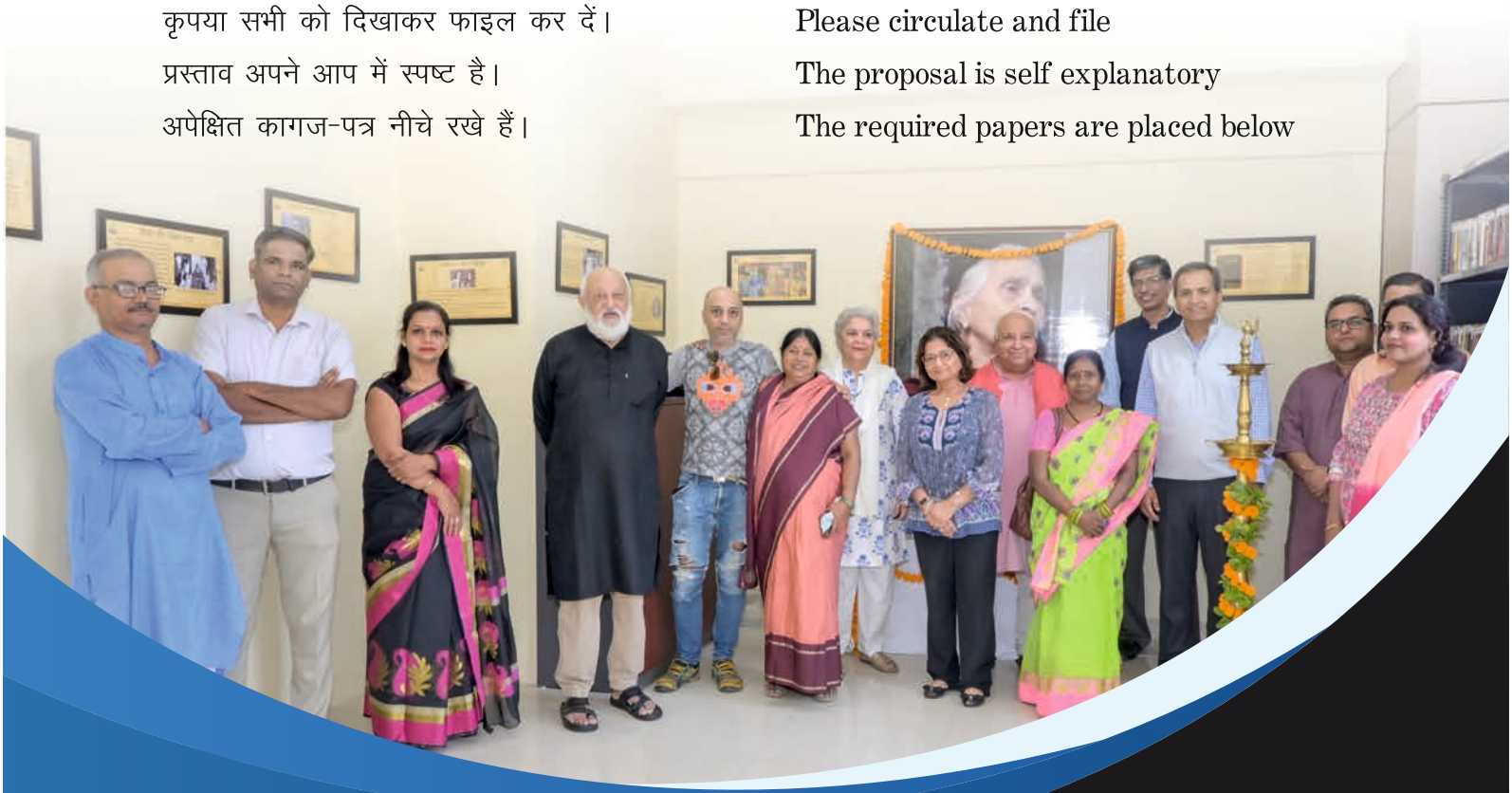

"शिवानी स्मृति कक्ष" उद्घाटन दिनांक 16 अक्टूबर 2023

उद्घाटनः 06 नवम्बर 2023

मेहता फैमिली सेंटर फॉर इंजीनियरिंग इन मेडिसिन एक अंतःविषयक केंद्र है जिसका उद्देश्य गंभीर चिकित्सा संबंधी समस्याओं के लिए अभियांत्रिकी समाधान की सुविधा प्रदान करना है। इस केन्द्र का उद्देश्य राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर चिकित्सा क्षेत्र में कई चुनौतियों के समाधान के साथ साथ जैविक विज्ञान और विविध अभियांत्रिकी क्षेत्रों में भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर की मौजूदा ताकत का लाभ उठाना है।

मेहता फैमिली सेंटर फॉर इंजीनियरिंग इन मेडिसिन के तहत अनुसंधान के तीन क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित किया गया है जो चिकित्सा और अभियांत्रिकी का संगम है। इन क्षेत्रों में आणविक चिकित्सा, पुनर्योजी चिकित्सा और डिजिटल चिकित्सा शामिल है। अपनी बहु-विषयक प्रकृति के साथ साथ अभियांत्रिकी, भौतिकी एवं जीव विज्ञान के विभिन्न विषयों में सर्वश्रेष्ठ प्रतिभाओं को एक साथ लाने के उन्नत दृष्टिकोण को मूर्त रूप प्रदान करते हुए, इस केन्द्र में विविध अनुसंधान क्षेत्रों के संकाय सदस्य शामिल हैं। वर्तमान में मेहता फैमिली सेंटर फॉर इंजीनियरिंग इन मेडिसिन के अंतर्गत जैविक विज्ञान, रसायन विज्ञान, रासायनिक अभियांत्रिकी, संगणक विज्ञान एवं अभियांत्रिकी के साथ साथ संज्ञानात्मक विज्ञान के विभिन्न विषयों में विशेषज्ञता रखने वाले 31 संकाय सदस्य अनुसंधानरत हैं। उल्लेखनीय है कि विविध क्षेत्रों की समीपता, मौजूदा चिकित्सा समस्याओं के लिए सहयोगात्मक और नवीनतम समाधान उपलब्ध कराएगी।

संपादक- श्री विजय कुमार पाण्डेय
राजभाषा अधिकारी
oic_rp@iitk.ac.in

ईमेलः arkverma@iitk.ac.in; dalpana@iitk.ac.in
वेबः https://www.iitk.ac.in/new/antas

अभिकल्पः अल्पना दीक्षित
सम्पर्कः
राजभाषा प्रकोष्ठ
भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान कानपुर (उ.प्र.)
दूरभाषः 0512–259–7122

फेसबुक | ट्विटर | ई–पत्रिका | राजभाषा प्रकोष्ठ

ZED CREATION # 9838582232